Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक

सहसा आकाश में बिजली चमकी।

बिजली की कड़क से चौंक कर चार वर्षीय मुन्ना अपनी बुआ सरला से सट गया। सरला सोती रही।

तभी वर्षा प्रारम्भ हो गयी। बौछार बरामदे में आने लगी।

जब सरला के पैर भीगने लगे तब उसकी आँख खुली। उसने दरी ऊपर खिसका ली और फिर मुन्ना के ऊपर हाथ रखकर सोने का उपक्रम करने लगी।

"सो गये क्या?" सरला के कानों में भाभी दया की धीमी आवाज आयी।

"ऊँह! क्या है?" ललित का उत्तर भी उसने सुना।

"बहन बनिये के ब्याज की तरह दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ रही है और तुम हो कि आँखों पर काला चश्मा लगाये बैठे हो।" भाभी की इस बात ने सरला की नींद भगा दी। वह कान लगाकर भैया और भाभी की बात सुनने लगी। सुनती भी क्यों न, वार्ता का विषय भी तो वही थी।

सरला का भाई ललित पच्चीस वर्ष का युवक था। किसी तरह पिता ने बी० ए० तक पढ़ाया था। उनका सपना था कि उनका होनहार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पुत्र डिप्टी कलक्टर बनेगा, जज बनेगा; किन्तु उनका सपना सपना ही रहा। बी० ए० का परीक्षा फल प्रकाशित होने के एक सप्ताह बाद ही वे इस संसार से चल बसे। ललित साल भर सड़कों की खाक छानता रहा, नौकरी दिलाने वाले दफ्तर के सैकड़ों चक्कर लगा डाले पर डिप्टी कलक्टरी और जजी तो दूर किसी ने साधारण क्लर्की भी नहीं दी। घर में उपवासों की स्थिति आ गयी। सौभाग्य से एक दिन उसे मार्ग में शकुन मिल गयी। वह उसकी सहपाठिनी रह चुकी थी और वह रायबहादुर मनोहरलाल की पुत्री थी। बातों-बातों में उसने ललित की वास्तविक स्थिति जान ली। करुणा से उसका हृदय भर आया। उसने अपने पिताजी से कह कर ललित को सौ रुपये मासिक की नौकरी दिला दी। तब से वह रायबहादुर मनोहरलाल के मनोहर जूट मिल में क्लर्क था। किसी प्रकार गृहस्थी का छकड़ा लचर-पचर आगे बढ़ रहा था।

यद्यपि ललित के परिवार में केवल पाँच प्राणी ही थे तद्यपि आज के इस मँहगाई के युग में सौ रुपयों में होता ही क्या है। बीस रुपये का मकान था। मकान भी बस गुजर-बसर योग्य ही था। कमरा नाम की वस्तु एक ही था। उसी में घर गृहस्थी का सामान रहता था और वहीं रात को ललित अपनी पत्नी दया और दो वर्ष की मुन्नी के साथ सोता था। कमरे के आगे एक छोटा सा बरामदा था। उसी बरामदे के एक कोने में चुल्हा था। रात को सरला अपने भाई ललित के चार वर्ष के पुत्र मुन्ना के साथ वहीं सोती थी। घर में केवल दो चारपाइयाँ थीं जो कमरे में रहती थीं। सरला और मुन्ना फर्श पर ही सोते थे। बीस रुपये मकान के देकर जो अस्सी रुपये शेष रहते थे उन्हीं में किसी प्रकार घर का खर्च चलता था।

ललित को अगर कोई चिन्ता थी तो वह थी सरला के ब्याह की। वह अठारह वर्ष की पूर्ण युवती हो चुकी थी। उसके हाथ पीले करने की चिन्ता में ही बिचारा ललित दिन-रात परेशान रहता था। दो-चार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपने निजी कक्ष की ओर बढ़ गये।

"पहले तो मैं हुजूर को धन्यवाद देता हूँ।" कार से उतर कर ललित बोला। "क्योंकि हुजूर ने मेरी तनख्वाह बढ़वा दी है।"

"मैं कौन होती हूँ बढ़वाने वाली। धन्यवाद देना है तो बाबूजी को दो।" कृत्रिम गंभीरता से शकुन बोली और वह बरामदे में पड़ी आराम कुर्सी पर बैठ गयी।

"उन्होंने हुजूर को धन्यवाद देने के लिये कहा है।" शकुन के पास पहुँचकर ललित बोला। "खैर, हाँ, हुजूर ने किसलिए याद फरमाया है?"

"तुम्हें मेरे साथ बम्बई चलना है।" कहकर शकुन खड़ी हो गयी।

ललित समझा, शकुन परिहास कर रही है। हँसकर बोला—"बस बम्बई! मैं तो समझा था विलायत चलना होगा।"

"मैं हँसी नहीं कर रही हूँ, ललित! शैल भी चलेगी।" शकुन ने गंभीर स्वर में कहा।

"कब?" ललित ने भी गंभीरता से पूछा।

"कल। तुम जरा यहीं बैठो। मैं अभी बाबूजी से तय किये लेती हूँ।" कहकर वह रायबहादुर के कमरे की ओर चल दी।

ललित बरामदे में टहलता रहा और सामने की क्यारियों में खिले रंग-बिरंगे फूलों को देखता रहा।

शकुन रायबहादुर के पास जाकर लाड़ भरे स्वर में बोली—"बाबूजी! हमारा यहाँ मन नहीं लगता।"

"तुमसे कहता हूँ कि सुबह-शाम घूम आया करो, मगर तुम सुनती ही नहीं।" रायबहादुर स्नेह सिक्त स्वर में बोले।

"कहाँ घूम आया करूँ, बाबूजी?" शकुन तुनक कर बोली। "कानपुर में घूमने की कोई जगह है भी। हर तरफ धूल और धुंआ।"

"गर्मियों में काश्मीर या मसूरी चली जाना।"

"गर्मी तो अभी दूर है। तो तब तक यहाँ मेरा दम घुट जायेगा।" और शकुन की मुख मुद्रा देखकर रायबहादुर को भय हुआ कि सचमुच

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ही उसका दम घुटा जा रहा है।

"तो फिर.....।" घबराहट के मारे उनका वाक्य अधूरा ही रह गया।

"मैं बम्बई जाऊँगी, बाबूजी! शैल की भी तबियत ठीक नहीं रहती है। उसका भी मन बहल जायेगा।"

प्राणों सी प्रिय पुत्री के आग्रह को टालने का साहस रायबहादुर में न था। वे शकुन के सिर पर स्नेह से हाथ फेरते हुए बोले—"चली जाना, बेटी!" फिर रुककर झिझकते हुए कहा—"मगर जाओगी किसके साथ? मुझे तो.....।"

"आप उसकी चिन्ता न करें, बाबूजी।" रायबहादुर के वाक्य को बीच में ही काट कर शकुन बोली। "हम लोग ललित के साथ चली जायेंगी मैंने उससे बात कर ली है।"

"अच्छा, तो इसीलिए उसे बुलाया था।" जोर से हँसकर रायबहादुर बोले। "कब जा रही हो?"

"कल रात की गाड़ी से।"

"मगर इतनी जल्दी सीटें रिजर्व कैसे हो सकेंगी? दो-चार दिन बाद चली जाना।" रायबहादुर ने धीमे स्वर में सुझाव दिया।

"आप बस हाँ कह दीजिये। बाकी सब मैं कर लूँगी, बाबूजी।" शकुन ने दुलार भरे मीठे स्वर में कहा।

"अच्छा बाबा, चली जाना! बस, अब तो खुश हो?"

और किलकारियाँ भरती हुई शकुन ललित के पास आ गयी। उसकी प्रसन्नता देखकर ही ललित समझ गया कि रायबहादुर ने आज्ञा दे दी है।

"मैंने बाबूजी को राजी कर लिया है। कल रात की गाड़ी से चलना है। तुम तैयारी कर रखना।" प्रसन्न स्वर में शकुन बोली।

"मुझे क्या तैयारी करनी है? जो दो-चार फटे-पुराने कपड़े हैं उन्हें एक झोले में डाल लूँगा।" हँसकर ललित बोला।

"कपड़ों की चिन्ता न करो। बम्बई में सिले-सिलाये कपड़े बहुत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिलते हैं।" खिलखिलाकर हँसती हुई शकुन बोली।

"अच्छा, अब चलता हूँ। सोचता हूँ, जरा सरला से मिल आऊँ।" कहकर ललित अपना झोला लटकाये चल दिया।

शकुन ने फोन उठाकर 'इन्क्वायरी' से बात की। जब उसे ज्ञात हुआ कि कल रात की गाड़ी में तीन सीटें रिजर्व हो सकती हैं तब वह हर्ष से झूम उठी।

ड्रायवर को रुपये देकर तथा प्रथम श्रेणी के तीन टिकट लाने और सीटें सुरक्षित करवाने का आदेश देकर वह शैलजा को सूचित करने के लिये उसके कमरे में गयी।

शैलजा ने अनुभव किया कि उसकी साँस की घुटन बहुत कुछ कम हो गयी है। आनन्द विभोर होकर वह शकुन के गले से लिपट गयी।

रात को सरला का फोन आया।

"भैया को बम्बई ले जा रही हो?" उसने शरारत के स्वर में पूछा।

"हाँ! मगर तुम चिन्ता न करना। उन्हें हमारे साथ कोई कष्ट न होगा।" शकुन ने भी मजाक में कहा।

"जब आपके साथ जा रहे हैं तब चिन्ता कैसी?" सरला का स्वर आया। "उन्हें आपके हाथों में सौंपकर मैं एकदम निश्चिन्त हूँ।" और फिर सरला की हँसी की आवाज शकुन के कानों में गूंज गयी।

काश! शकुन की आँखों की लाज और चेहरे की लाली को सरला देख पाती!

"शायद आप मेरी बात का बुरा मान गयी हैं।" जब शकुन कुछ देर मौन रही तब सरला ने कहा।

इस बार शकुन मौन न रह सकी। हँसकर बोली—"जब तुम्हें मुझ पर इतना विश्वास है तब भला तुम्हारी बात का बुरा कैसे मान सकती हूँ।'

"अच्छा, अगर आप मुंह मीठा करायें तो एक शुभ समाचार सुनाऊँ!" सरला का स्वर आआ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"क्या समाचार है ?" शकुन ने उत्सुकता से पूछा।

"कमल का संग्रह छप गया है।"

"सच ?" शकुन ने प्रसन्नता से पूछा।

"हाँ ! एक प्रति मैंने भैया को दे दी है ताकि आप लोगों की यात्रा सुगम हो जाये।" सरला ने कहा और इससे पहले कि शकुन धन्यवाद दे सके उसने चोंगा रख दिया।

शकुन हर्षातिरेक से फूली जा रही थी। उसने सोचा कि शैलजा को भी यह शुभ समाचार सुना दे। वह तत्काल शैलजा के कमरे में गयी। वह समझती थी कि इस समाचार से शैलजा भी प्रसन्न होगी क्योंकि बाबू श्यामसुन्दर को संग्रह देने का प्रस्ताव कमल के सामने सर्वप्रथम उसी ने रक्खा था।

किन्तु, उसकी आशा के विपरीत, जब शैलजा प्रसन्न होने के बजाय उदासीन रही तब शकुन आश्चर्य में पड़ गयी।

"मानव-हृदय भी एक विचित्र पहेली है।" उसने मन-ही-मन कहा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बीस

कमरे की दीवार-घड़ी न दस बजाये।

सरला ने करवट वदली और फिर कमल का काव्य-संग्रह पढ़ने में लीन हो गयी। उसकी आँखों में नींद का नाम तक न था।

पिछले दिन बूँदा-बाँदी हुई थी। अब बादल तो छट गये थे पर दिन भर तेज और सूखी हवा चलती रही थी। इसीलिए ठंड बढ़ गयी थी। मसूरी और नैनीताल की पहाड़ियों पर हिमपात भी हुआ था। फलस्वरूप गलन भी काफी थी। नौकर-चाकर अपने क्वार्टरों में दुबके पड़े थे। गोमती भी खा-पीकर अपने कमरे में चली गयी थी। कामेश्वर अभी क्लब से लौटा नहीं था। उसकी प्रतीक्षा करते-करते महराजिन चौके में ही चूल्हे की गर्मी पाकर ऊँघ गयी थी। बाबू श्यामसुन्दर आवश्यक कार्य से लखनऊ गये हुये थे।

सरला कमल की पुस्तक कई बार पढ़ चुकी थी। उसे उसके गीतों से शक्ति मिलती थी, प्रेरणा मिलती थी। उस रात को भी वह जब-खा-पीकर अपन कमरे में गयी तब एकान्त घड़ियों को काटने के लिए उसने कमल की पुस्तक उठा ली।

साढ़े दस बजे उसे कामेश्वर की आवाज सुनाई दी। वह भारी स्वर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में महराजिन से कह रहा था—"मुझे भूख नहीं है। तुम सोओ जाकर।"

कामेश्वर महीने में बीस दिन रात का भोजन बाहर ही करता था। सरला उसके स्वभाव से परिचित हो चुकी थी। उसने कामेश्वर की बात पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। वह फिर पढ़ने में तल्लीन हो गयी।

कुछ देर बाद जब कामेश्वर ने उसके कमरे का द्वार थपथपाया तब उसकी तल्लीनता भंग हुई।

"कौन है ?" उसने चौंककर पूछा।

"मैं हूँ कामेश्वर। जरा दरवाजा खोलिये।" कामेश्वर ने भर्राये स्वर में बाहर से कहा। सरला को उसका स्वर विचित्र सा लगा।

"क्या काम है ?" पुस्तक मेज पर रखकर पलँग से उठते हुये पूछा।

"खोलिये तो !" कामेश्वर के स्वर में तेजी आ गयी।

सरला के मन में आया कि सुबह बात करने के लिए कह दे, किन्तु फिर सोचा न जाने क्या काम हो ! वह धीरे-धीरे द्वार की ओर बढ़ी। तभी उसके मन ने कहा—कामेश्वर नीच प्रकृति का आदमी है। इतनी रात को उसे कमरे में आने देना ठीक नहीं। न जाने क्या धृष्टता कर बैठे। चलते-चलते उसके पैर रुक गये।

"जल्दी खोलिये। बहुत जरूरी काम है।" बाहर से कामेश्वर ने उतावली के साथ कहा और फिर उसने द्वार पर दस्तक दी।

सरला की बुद्धि ने कहा—अपनी कायरता दिखाना ठीक नहीं। क्या तुम अपनी रक्षा स्वयं नहीं कर सकतीं ? और फिर घर में और लोग तो हैं ही। एक ऊँची आवाज ही सब को बुलाने के लिए काफी होगी।

और तब सरला ने काँपते हाथ से द्वार खोल दिया।

कामेश्वर अन्दर आकर कुर्सी पर बैठ गया।

उसके कमरे में आते ही सरला को अजीब सी दुर्गन्ध लगी। उसने नाक में साड़ी का अंचल लगाकर खड़े-खड़े ही पूछा—"क्या काम है ?"

"बताता हूँ। ऐसी जल्दी भी क्या है। आप बैठ तो जाइये।" कहकर कामेश्वर ने सिगरेट सुलगायी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कामेश्वर मदिरा-पान करके आया था, पर उसने इतनी नहीं पी थी कि होश-हवास न हों। उसकी आँखों के डोरे लाल थे और चेहरा भी तमतमा रहा था।

मदिरा की दुर्गन्ध और धूँएं के कारण सरला का दम घुटने लगा। वह जरा तेज स्वर में बोली—"बताओ, क्या काम है ! मुझे नींद लगी है।"

"मेरी आँखों की नींद मुझसे रूठ गयी है।" कहकर कामेश्वर उठा और उसने कमरे का द्वार अन्दर से बन्द कर लिया।

सरला का दिल जोर से धड़कने लगा। वह सिहर कर द्वार की ओर बढ़ती हुई बोली—"द्वार क्यों बन्द कर दिया ?"

कामेश्वर द्वार और उसके बीच में आ गया। हँसकर बोला—"ठंडी हवा चल रही है ! आप क्या डर गयीं ?"

सरला वास्तव में डर गयी थी पर अपने भय को छिपाने की चेष्टा करती हुई बोली—"मैं क्यों डरूँगी ! कमरे में धूँआ भर रहा है इसीलिये. . .।"

"यह लीजिये। सिगरेट बुझाये देता हूँ।" कहकर कामेश्वर ने सिगरेट बुझा कर बाहर फेंक दी। और फिर सीने पर हाथ रखकर बोला। "काश ! इसी तरह मेरे दिल की आग भी बुझ सकती।"

सरला काँप कर पीछे हट गयी। उस भयंकर शीत में भी उसके पसीना आ गया। भय के कारण उसका कंठ सूख गया।

"न जाने क्यों मैं कभी भी आपको मामी के रूप में न देख सका।" कामेश्वर आगे बढ़ कर बोला। "और न जाने क्या सोचकर आपने एक अधेड़ से शादी की।"

सरला का भय क्रोध में परिवर्तित हो गया। उसकी आँखें लाल हो गयीं, चेहरा तमतमा गया और नथुने फड़कने लगे वह दाँतों से होंठ काटती हुई तेज स्वर में बोली—"निकल जाओ मेरे कमरे से अभी। मैं नहीं जानती थी तुम इतने नीच हो।"

"आप तो नाराज हो गयीं।" कामेश्वर कोमल स्वर में बोला। "मैं तो आपकी भलाई चाहने वाला हूँ। बुढ़ापे के साथ रहकर जवानी भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बूढ़ी हो जाती है। जवानी के फूल को खिलने के लिए जवानी का ही खून चाहिए !"

अपनी बात पूरी करके कामेश्वर आगे बढ़ा।

"अगर एक कदम भी आगे बढ़ाया तो अच्छा नहीं होगा। निकल जाओ यहाँ से। नहीं तो मैं अभी चीखती हूँ।" कहकर सरला ने चीखने के लिए मुह खोला।

कामेश्वर डर कर पीछे हट गया। उसे विश्वास हो गया कि यदि वह कमरे के वाहर तुरन्त नहीं गया तो सरला सचमुच ही सबको इकट्ठा कर लेगी।

"जाता हूँ।" द्वार की ओर बढ़कर वह धीमे स्वर में बोला। "मगर एक बार फिर सोच लीजिये। जवानी बार-बार नहीं आती।"

"तुम जानवर से भी गये बीते हो। तुम्हें यह तक मालूम नहीं कि मामी माँ के समान होती है।" सरला ने कठोर स्वर में कहा। "भलाई इसी में है कि फौरन यहाँ से चले जाओ। अगर फिर कभी ऐसी धृष्टता की तो अच्छा न होगा।"

कामेश्वर समझ गया कि सरला साधारण मिट्टी की नहीं है; उसमें फौलाद की दृढ़ता है। यहाँ दाल गलना मुश्किल ही नहीं असम्भव है। वह द्वार खोलने के लिए चुपचाप आगे बढ़ा।

द्वार खोलकर वह घूमकर खड़ा हो गया और धीमे स्वर में बोला—"आज की सभ्यता सिर्फ ऊपरी अच्छाई की माँग करती है। आप बाहर से अच्छी होने के साथ-साथ अन्दर से भी अच्छी बनने की कोशिश करती हैं। यही आपकी भूल है। मुझे आपके हाल पर तरस आता है। आपने तो भाई के लिए इतना बड़ा त्याग किया और वह मालिकों की बेटियों के साथ गुलछर्रे उड़ाता फिरता है।"

"क्या बक रहे हो?" सरला फुंकार कर बोली।

"सत्य कड़ुवा होता ही है। और अगर मैं आपको उन लोगों के बम्बई जाने का सही कारण बता दूँ तब तो शायद आपको चक्कर आ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जाए। बताऊँ ?" कामेश्वर कुटिल स्वर में बोला।

"मैं कुछ नहीं सुनना चाहती।" सरला ने चीखकर कहा।

"मगर मैं तो बताना अपना धर्म समझता हूँ।" कामेश्वर आगे बढ़कर धीमे स्वर में बोला। "वे लोग शैलजा का गर्भपात कराने गये हैं। समझीं ? अबारशन ! ए, बी, ओ, आर, टी, आई, ओ, एन !" और कामेश्वर तेजी से बाहर चला गया।

सरला ने दौड़कर अन्दर से द्वार बन्द कर लिया।

फिर वह न तो पुस्तक ही पढ़ सकी और न सो ही सकी। रात भर वह पलँग पर करवटें बदलती रही और रह-रहकर कमेश्वर के अन्तिम शब्द उसके कानों में गूँजते रहे। और वह बार-बार यह कहकर अपने मन को समझाने की चेष्टा करती रही कि यह असत्य है, यह असम्भव है, कामेश्वर झूठ बोलता है !

× × ×

सुबह जब कामेश्वर सो ही रहा था तभी गोमती चाय लेकर उसके कमरे में पहुँच गयी। चाय की ट्रे मेज पर रखकर उसने कामेश्वर को जगाया।

कामेश्वर ने आँखें खोलकर एक बार गोमती की ओर देखा और फिर करवट बदल कर सो गया। गोमती झुंझला गयी। उसने रजाई हटाकर तेज स्वर में कहा—"नौ बज गये हैं, तेरी नींद अभी तक पूरी नहीं हुई ?"

रजाई हट जाने पर वह उठकर बैठ गया। आँखे मल कर लाड़ से बोला—"क्या है, माँ ! तुम तो मुझे सोने भी नहीं देतीं।"

"हाथ-मुंह धोकर चाय पी ले।" गोमती ने आदेश दिया।

कामेश्वर ने उसकी आज्ञा का पालन किया।

जब गोमती चाय की ट्रे लेकर जाने लगी तब कामेश्वर धीमे स्वर में बोला—"बैठ जाओ, माँ ! मुझे तुमसे जरूरी बात करनी है।"

ट्रे मेज पर रखकर गोमती कामेश्वर के पास ही बैठ गयी।

"माँ, मुझे तो सरला का चरित्र अच्छा नहीं लगता" कहकर कामेश्वर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ने घृणा से मुंह बिगाड़ लिया।

"क्या बात है ?" कामेश्वर के पास खिसककर गोमती ने उत्सुकता से पूछा।

"यह शक तो मुझे पहले ही था कि कमल और उनके बीच में कोई बात है। मगर कल....कल तो मुझे एकदम निश्चय हो गया।"

कामेश्वर की बात ने गोमती की जिज्ञासा जगा दी। वह तो यह चाहती ही थीं कि सरला के विरुद्ध बाबू श्यामसुन्दर के कान भरने के लिए कोई मसाला मिले। उसने दबे स्वर में कामेश्वर से पूछा—"क्या बात हुई, कुछ बता तो।"

"क्लब से लौटकर कल रात को मैं उनके कमरे में गया तो देखा वे कमल की किताब अपने सीने से लगाये बैठी लेटी हैं और धीमे स्वर में कुछ बुदबुदा रही हैं।" कामेश्वर ने सिर झुका कर कहा।

"तू क्यों गया था उनके कमरे में ?" गोमती ने कामेश्वर की ओर गूढ़ दृष्टि से देखकर पूछा।

"तुम तो बाल की खाल निकालती हो माँ।" कामेश्वर रूठकर बोला। एक क्षण रुककर फिर अत्यन्त धीमे स्वर में कहा—"मुझे देखकर वे उठ बैठीं। उन्होंने कमरे का दरवाजा अन्दर से बन्द कर लिया। फिर... फिर उन्होंने मुझसे ऐसी बातें कीं जिन्हें मैं अपने मुंह से नहीं कह सकता, माँ। मेरा तो दम घुटने लगा। बड़ी मुश्किल से जान बचा कर भाग पाया। मैं उन्हें माँ के रूप में देखता था और वे....वे....मुझसे अनुचित.....।" और फिर कामेश्वर ने निःश्वास छोड़कर अपना वाक्य अपूर्ण ही छोड़ दिया।

गोमती की आँखें हर्ष से चमक उठीं। विश्वास के स्वर में बोलीं—"मैं तो पहले दिन ही समझ गयी थी कि वह कुलटा है। उसने पैसे के लिए भैया से ब्याह किया है। आने दो लखनऊ से भैया को। एक-एक बात न कहूँ तो मेरा नाम गोमती नहीं।" और फिर गोमती चाय की ट्रे उठाकर तेजी से बाहर चली गयीं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कामेश्वर के अधरों पर कुटिल मुस्कान खेल गयी।

गोमती उत्सुकता से बाबू श्यामसुन्दर के लौटने की प्रतीक्षा करती रही और जैसे ही दोपहर को वे आये, वह उनका हाथ पकड़कर अपने कमरे में ले गयी। सरला ने देखा, पर वह कुछ समझ न सकी।

गोमती ने अन्दर पहुँच कर द्वार अन्दर से बन्द कर लिया।

"क्या बात है ?" बाबू श्यामसुन्दर परेशानी से बोले।

"भैया! अब तो मुझे इस जंजाल से मुक्त कर दो।" आँखों में आँसू भर कर गोमती बोली। "मुझसे अब इस घर में नहीं रहा जायेगा। मुझे काशी भेज दो, भैया।"

बाबू श्यामसुन्दर समझे शायद सरला से कुछ कहा-सुनी हो गयी होगी इसीलिए गोमती खिन्न और दुखी है। वे धीमे स्वर में बोले—"क्या बात हुई...? क्या....क्या सरला ने कुछ कह दिया है ?"

और गोमती उत्तर देने के बजाय फूट-फूटकर रोने लगी।

बाबू श्यामसुन्दर घबरा गये। समझाते हुये बोले—"मैं सरला को समझा दूँगा। रोना बन्द करो।"

"मैं अपने लिए नहीं, आपके लिए रो रही हूँ।" गोमती सिसक कर बोली। "भैया! न जाने किस कुघड़ी में आप उसे ब्याह कर लाये। वह एक दिन कुल के नाम पर बट्टा लगा देगी।"

बाबू श्यामसुन्दर की छाती पर जोर का मुक्का पड़ा। वे फटी आँखों से गोमती की ओर देखने लगे।

गोमती ने समझ लिया कि चोट ठीक जगह पर हुई है। "भैया! सरला कुलटा है, पापिन है। उसे आपसे नहीं, आपके पैसे से प्यार है।" गोमगी ने फिर कठोर आघात किया।

इस आघात से बाबू श्यामसुन्दर तिलमिला उठे। वे चीखकर बोले—"गोमती! यह क्या कह रही हो तुम ?"

"अभी आपको विश्वास नहीं होता मगर जब एक दिन रुपया-पैसा लेकर किसी के साथ भाग जायेगी तब आप समझेंगे कि गोमती ठीक कहती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थी। मालूम है कल उसने क्या किया ?" कहकर गोमती ने अजीब दृष्टि से बाबू श्यामसुन्दर की ओर देखा और फिर घृणा से बोली—"कामेश्वर के साथ मुंह काला करना चाहती थी। जो अपने भान्जे के साथ........।"

"चुप रहो।" बाबू श्यामसुन्दर गरज कर बोले। "मैं जानता हूँ तुम लोग उसे क्यों बदनाम करने पर तुले हो। मगर मुझे सरला पर विश्वास है, पूरा विश्वास है।"

बाबू श्यामसुन्दर ने झटके के साथ द्वार खोला और वे बाहर चले गये गोमती अवाक होकर खुले हुये द्वार की ओर देखती रही।

"उसका जादू पूरी तरह चढ़ गया है।" गोमती बुदबुदायी।

बाबू श्यामसुन्दर जिस विश्वास के साथ गोमती के कमरे से बाहर निकले वह स्थिर न रह सका। दिन भर वे बेचैन रहे। गोमती का स्वर उनके कानों में गूँजता रहा; सरला और कामेश्वर के चित्र उनकी आँखों के सामने घूमते रहे। उनकी दृढ़ता धीरे-धीरे कम होने लगी। उन्हें याद आया—वे एक दिन सरला के साथ माल रोड पर जा रहे थे। पास से दो विद्यार्थी निकले। एक ने कहा—"खूसट को छोकरी तो बढ़िया मिली है।" दूसरे ने उत्तर दिया—"अबे चुप! उसकी बेटी मालूम होती है।" बाबू श्यामसुन्दर के कानों में दूसरे विद्यार्थी की आवाज फिर गूँजने लगी। उस दिन उसकी बात पर वे मन-ही-मन हँसे थे पर अब वे कुछ और ही सोच रहे थे। सचमुच सरला और उनका क्या जोड़ है ? कहाँ अठारह साल की युवती और कहाँ पैंतालीस साल का प्रौढ़ ! वह तो उनकी पुत्री या पुत्रवधू की अवस्था की है ! उसको पत्नी बनाकर जीवन की सबसे बड़ी भूल की है; उसके साथ भयंकर अन्याय किया है। माना, वह उन्हें सच्चे मन से प्यार करता है, गोमती का लाँछन भी झूठा है पर इससे क्या होता है ? यौवन और बुढ़ापे का क्या साथ है ? एक सुबह का उदय होता हुआ रवि तो दूसरा शाम का अस्त होता हुआ सूरज !

और रात को जब वे घर पहुँचे तब सरला को लगा कि वे काफी थके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हुये हैं। वे ठीक से भोजन भी न कर सके।

खा-पीकर सरला जब कमरे में पहुँची तब उसने देखा कि बाबू श्याम-सुन्दर पलँग पर लेटे हुये निर्निमेष दृष्टि से छत की ओर देख रहे हैं।

"तबियत ठीक नहीं है क्या।" बाबू श्यामसुन्दर के पास बैठकर उनके मस्तक पर हाथ फेरती हुई सरला ने मीठे स्वर में पूछा।

"हाँ, हाँ, बहुत थक गया हूँ। बत्ती बुझा दो मुझे नींद आ रही है।" बाबू श्यामसुन्दर ने जमुहाई लेकर कहा। फिर मुंह दीवार की ओर करके उन्होंने आँखें बन्द कर लीं।

सरला बत्ती बुझाकर जब अपने पलँग पर लेटी तब वह भी बेचैन थी। वह आँसू भरी आँखों से उस अँधेरे में भी पतिको करवटें बदलते देखती रही। वह सोच रही थी, गोमती ही उनकी परेशानी का कारण है। जब वे लखनऊ से आये थे तब तो प्रसन्न थे। गोमती से बात होने के बाद से ही वे गंभीर हैं, उदास हैं, चिन्तित हैं। न जाने क्या कह दिया है गोमती ने ?

फिर उसने सोचा कि रात को कामेश्वर ने जो धृष्टता की है उससे उन्हें अवगत करा देना चाहिये, नहीं तो सम्भव है उसका साहस बढ़ता जाये। तभी उसकी बुद्धी ने शंका की—कहीं ऐसा न हो कि वे समझें कि मैं झूठी शिकायत कर रही हूँ जिससे घर में फूट पड़ जाये ! उसके मन ने कहा—वे ऐसा कभी नहीं सोच सकते। उन्हें मुझपर विश्वास है, पूरा विश्वास है।

"मुझे सरला पर विश्वास है, पूरा विश्वास है। गोमती झूठी है, कामेश्वर झूठा है, सब झूठे है।" उसे बाबू श्यामसुन्दर का धीमा स्वर सुनाई दिया। विद्युत-वेग से उठकर उसने बत्ती जला दी। बाबू श्यामसुन्दर पसीने से तर थे। उनकी आँखें बन्द थीं और वे सोते-सोते बड़बड़ा रहे थे।

अपने प्रति पति का दृढ़ विश्वास देखकर सरला का हृदय गर्व और हर्ष से भर गया। वह बाबू श्यामसुन्दर के पैरों के पास बैठ गयी भावावेश में आकर उसने उनके चरणों पर अपना मस्तक नवा दिया और उसकी आँखों से हर्ष के आँसू बहने लगे।

बाबू श्यामसुन्दर ने चौंक कर आँखें खोल दीं। सरला को अपने पैरों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इक्कीस

बम्बई पहुँचकर शकुन, शैलजा और ललित मैरिन ड्राइव पर स्थित एक प्रसिद्ध होटल में ठहरे। जो फ्लेट उन्होंने किराये पर लिया उसमें दो सोने के कमरे, एक गोल कमरा तथा शौचालय और स्नानगृह था। कमरे खुले हुये और हवादार थे। गोल कमरे की खिड़की से समुद्र की चंचल तरंगों का मनोहर दृश्य दिखाई देता था। फर्श पर कीमती कालीन बिछे थे, फरनीचर भी कलात्मक था और कमरे यें रेडियो और फोन भी लगा था। ललित तो होटल की शान-शौकत देखकर दंग रह गया।

बम्बई की जलवायु भी ललित को बहुत पसन्द आयी। वहाँ कानपुर की तरह भयंकर सर्दी न थी। दिन में एक स्वेटर और रात में एक कम्बल ही काफी था। ललित बम्बई पहली बार ही गया था, इसलिए वहाँ की हर चीज उसके लिए नयी थी।

शैलजा को होटल में छोड़कर शकुन ललित को लेकर नीचे आयी। टैक्सी पर वे एक ऐसी दूकान पर पहुँचे जहाँ सिले-सिलाये कपड़े बिकते थे। शकुन ने दूकानदार से ललित के नाप की छः कमीजें और छः पतलूनें देने के लिए कहा।

"यह क्या कर रही हो तुम ? मुझे नहीं चाहिएं कपड़े !" ललित ने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जगह उसने बात भी चलायी थी पर लड़के वालों की माँग हजारों में थी जिसे पूरा करने की शक्ति उसमें न थी। फलस्वरूप वह मन मसोस कर रह गया था। उसने अपनी पत्नी दया को इस विषय में कुछ भी न बताया था। दया समझती थी कि उसे सरला की फिकर नहीं है। इसीलिए वह जब-तब चर्चा छेड़ देती थी। ललित हर बार मौन धारण कर लेता था।

उस रात को भी जब दया ने बात चलायी तो ललित मौन रहा। उसने कोई उत्तर नहीं दिया दया की बात का।

दया ललित के मौन से चिढ़ गयी। पति के मौन को उसने पत्नी की उपेक्षा और बहन के प्रति उदासीनता ही समझा।

"सुना नहीं क्या?" दया कुछ जोर से बोली।

"मैं बहरा नहीं हूँ जो चीख रही हो।" ललित ने कहा और फिर करवट बदल ली।

"अभी तुम्हारे कान में जूँ नहीं रेंगती। जब कुछ ऊँच नीच हो जायगा तब आटा-दाल का भाव मालुम होगा। दया बोली और फिर वह उठकर बैठ गयी।

ललित फिर भी मौन रहा।

दया उसके हृदय की पीड़ा को न समझ सकी और न वह उसकी आँखों की कोरों में छलकने वाली आँसू की बूँदों को ही देख सकी।

"मोहल्ले-टोले वाले तो उँगली उठाने ही लगे हैं!" दया ने फिर प्रहार किया।

इस बार ललित तिलमिला गया। वह उठकर बैठ गया।

"क्या कहते हैं मोहल्ले-टोले वाले?" उसने कम्पित स्वर में पूछा।

"कहने वाले की जीभ किसी ने पकड़ी है कि तुम्हीं पकड़ोगे!"

"मैं पूछता हूँ, क्या कहते हैं मोहल्ले वाले?" ललित के स्वर में तेजी आ गयी।

"कहेंगे नहीं! घर में सयानी बहन बैठा रक्खी है।" दया ने तेज स्वर में कहा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सरला ललित और दया की बातें सुन रही थी। उसके हृदय में एक कसक उठी और आँखें छलछला आयीं। 'भैया-भाभी के कष्टों की जड़ मैं ही हूँ' उसने सोचा। उसके मुख से एक दीर्घ निःश्वास निकल गया।

"मोहल्ले वालों को बहुत चिन्ता है तो दे क्यों नहीं देते दस-पाँच हजार! पल भर में हाथ पीले कर दूँ सरला के। है कोई माई का लाल ऐसा कि सब उँगलियाँ उठाने वाले ही हैं।" ललित का क्रुद्ध स्वर गूँज गया। आवेश के कारण वह काँपने लगा। उसकी साँसों की गति तीव्र हो गयी।

तभी मुन्नी रोने लगी। दया उसे थपथपाने लगी। वह फिर सो गयी।

"मैं कहती हूँ चीखते क्यों हो?" दया धीमे स्वर में बोली। "क्या सरला को भी जगाने का विचार है?"

ललित कुछ बोला नहीं।

"रही लेने-देने की बात सो कौन किसे दे देता है। जो कुछ करना है, हमें ही करना है।" दया के स्वर में कोमलता थी।

"तुम समझती हो कि मुझे कुछ चिन्ता नहीं है।" इस बार ललित का स्वर धीमा था। "तुम क्या जानो कि दिन-रात मैं इसी चिन्ता की आग में जलता रहता हूँ। जहाँ-जहाँ बात चलायी वहीं हजारों की माँग रक्खी गयी। अब तुम्हीं बताओ मैं कहाँ से लाऊँ इतनी रकम?"

दया को लगा, ललित रो पड़ेगा। उसे आत्मग्लानि हुई कि व्यर्थ ही आधी रात को यह चर्चा चलायी।

"मुझे मालूम न था यह सब।" दया ने गीले स्वर में कहा। "तुमने मुझे बताया भी नहीं कभी, नहीं तो मैं हमेशा तुम्हें क्यों कुरेदती रहती।"

ललित मौन रहा। बेबसी के आंसू पीकर वह लेट गया।

"आखिर फिर क्या सोचा है?" दया ने मीठे स्वर में पूछा।

"कुछ समझ में नहीं आता।" निःश्वास छोड़कर ललित बोला। "अपनी सरला सुन्दर है, घर-गृहस्थी के कामों में होशियार है, पढ़ी-लिखी भी है। सोचा था, कोई तो लड़का ऐसा मिलेगा जिसका संकल्प पैसा नहीं, लड़की ब्याहने का होगा।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"आजकल लड़की कौन देखता है," दया दार्शनिक भाव से बोली, "सब पैसे के भूखे हैं, पैसे के!"

"तुम ठीक कहती हो, दया, तुम ठीक कहती हो।" ललित बुदबुदाया।

"न हो तो शकुन से ही.........?"

"यह क्या कह रही हो तुम?" ललित उचक कर बैठता हुआ बोला। "बहन के ब्याह के लिए शकुन के आगे हाथ फैलाऊँ। नहीं, मुझसे यह न हो सकेगा। उसने नौकरी दिला दी यही क्या कम है।"

"तब फिर क्या बहन को जीवन भर क्वाँरी ही रक्खोगे?"

"ब्याह होना न होना भाग्य की बात है।" ललित फिर लेट गया। "लगता है उसके हाथ में ब्याह की रेखा है ही नहीं।"

"यह तो कायरों जैसी बात कह रहे हो तुम। ब्याह तो करना ही पड़ेगा, चाहे आज करो चाहे कल। कौन जीवन भर अपनी बहन या बेटी को घर में रख सका है?" दया ने व्यवहारिक बात कही।

ललित ने करवट बदल ली।

दया ललित की चारपाई पर जाकर उसके पैर दाबने लगी।

"अब सो जाओ। आधी रात हो गयी है।"

"जल्दी क्या है?" दया पैर दाबती रही। "कल तो इतवार है।"

"इतवार है तो क्या हुआ! कल भी काम पर जाना है।"

"क्या मिल बन्द नहीं है कल?" दया ने आश्चर्य से पूछा।

"मिल तो बन्द है, मगर शैलजा की वर्ष गाँठ है कल। रायबहादुर ने सुबह ही घर पर बुलाया है।" ललित ने कहा और फिर वह अपने पैर खींचने लगा।

"रोज चार मील पैदल आते-जाते हो। थक जाते होगे। रोज तो पैर दाब नहीं पाती, आज ही दाब लेने दो।" दया के स्वर में याचना थी।

"तुम कौन दिन भर आराम करती रहती हो? सो जाओ, दया। अगर तुम पैर दाबती रहोगी तो मुझे नींद नहीं आयेगी।"

दया भारी मन लिए अपनी चारपाई पर आ गयी। मुन्नी के पास

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लेट कर सजल दृष्टि से पति की ओर देखती रही।

ललित करवटें बदलता रहा। उसे नींद नहीं आ रही थी।

दूर किसी रईस के चौकीदार ने एक का घन्टा बजाया।

ललित ने करवट नहीं बदली। वह सो गया।

दया ने गन्दे आँचल से अपने आँसू पोंछे और फिर वह भी सोने की चेष्टा करने लगी।

× × ×

सरला की आँखों की नींद उड़ गयी। उसने ललित और दया की बातचीत का हर शब्द सुना था। वह पहले से ही यह अनुभव करती थी कि भैया की चिन्ता और उदासी का कारण वही है। वह कई बार भगवान से शिकायत कर चुकी थी कि उसने उसे लड़की क्यों बनाया और यदि लड़की ही बनाया था तो उसके भाई को धन क्यों नहीं दिया। वह एकान्त में कई बार अपने भाग्य को कोस चुकी थी, रो चुकी थी, मृत्यु की कामना कर चुकी थी। उसे लगता था कि जैसे लड़की होना ही पाप है। वह दिन रात इसी उधेड़बुन में रहती थी कि किस प्रकार भाई की चिन्ता दूर हो।

यही समस्या उस रात को भी विशाल रूप धारण कर उसके सामने आ खड़ी हुई। अँधेरी, काली रात में वह और भी भयानक लग रही थी। यदि वह लड़का होती तो वह भाई को चिन्ता, व्यथा और उदासी देने के बजाय हर्ष, उत्साह और सहायता देती। पचास-साठ रुपये महीने वह भी कमाती और तब न तो मुन्ना को छोटी-छोटी चीजों के लिए रोना पड़ता, न भाभी को फटी और गन्दी धोतियाँ पहननी पड़तीं और न भैया को ही हर रोज अपने कपड़े घर में धोने पड़ते। लड़की होकर वह कुछ नहीं कर सकती। वह तो भैया-भाभी के ऊपर भार है। कितना अच्छा होता यदि वह जन्म लेते ही मर गयी होती।

तभी एक विचार उसके मस्तिष्क में बिजली की तरह कौंध गया। दो दिन पहले वह परोस में गयी थी। तब उसने अखबार में पढ़ा था कि एक युवती ने अपने निर्धन पिता को चिन्ता के भार से मुक्त करने के लिए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आत्म-हत्या का आश्रय लिया था। उसने गले में फांसी का फन्दा लगा लिया था। सरला ने विचार किया कि वह भी आत्म-हत्या द्वारा ही भैया को चिन्ता, उदासी और दुख से मुक्त कर सकती है। आत्म-हत्या के लिए कई रास्ते उसके सामने हैं। वह नदी में डूब सकती है, अफीम खा सकती है, फाँसी लगा सकती है, रेल की पटरी पर लेट सकती है। उसे लगा कि आत्म-हत्या के अतिरिक्त और कोई मार्ग उसके सामने नहीं है।

सहसा मुन्ना ने उसके ऊपर पैर रख दिया। उसकी विचार-धारा भंग हो गयी। मुन्ना का पैर धीरे से हटाकर उसने करवट बदली और वह फिर सोचने लगी।

आत्महत्या? हाँ, वह कल ही आत्म-हत्या करेगी। कल? हाँ, कल! और परसों ही अखबार में उसका नाम आयेगा। अखबार वाले लिखेंगे कि ललित की बहन सरला ने आत्म-हत्या की। नहीं! इससे तो भैया की बदनामी भी होगी; वे कहीं मुंह दिखाने लायक नहीं रहेंगे। तब तो कोई और उपाय सोचना होगा! आत्म-हत्या करके तो वह भैया को और दुख ही दे जायेगी। दुखः से पागल होकर वे भी कहीं कुछ ऊँच-नीच न कर बैठें! तब भाभी, मुन्ना, मुन्नी का क्या हाल होगा! नहीं, वह आत्म-हत्या नहीं करेगी, नहीं करेगी।

कोई सपना देखते-देखते मुन्ना चौंक पड़ा। वह डरकर घिघियाने लगा। सरला ने तुरन्त करवट बदल कर उसे हृदय से सटा लिया।

"क्यों डरता है तू? मैं तेरे पास हूँ।" सरला ने धीमे स्वर में कहा और फिर वह मुन्ना को थपथपाने लगी।

मुन्ना का डर दूर हो गया। वह नींद में ही मुस्करा पड़ा।

"मैं आत्म-हत्या नहीं करूँगी, नहीं ही करूंगी।" सरला दृढ़ता से बुदबुदायी।

वर्षा थम गयी। हवा में तेजी आ गयी। बादल छट गये और आकाश में तारे निकल आये।

दूर के चौकीदार ने दो घन्टे बजाये।

दरारें समाप्त

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सरला की आँखें खुली रहीं। वह निर्निमेष दृष्टि से एक तारे को देख रही थी जो सबसे अधिक चमक रहा था।

"आत्म-हत्या समस्या का समाधान नहीं है।" वह फिर बुदबुदायी। "वह स्वयं एक समस्या है। समस्या से समस्या का समाधान नहीं हो सकता।"

बाहर का तूफान थम गया था पर सरला के हृदय और मस्तिष्क में भावों और विचारों की जो भयंकर आँधी चल रही थी उसका कोई अन्त नहीं था।

ऊपर आकाश में तारे खिले थे मानों तम की लता में ज्योति के फूल हों और नीचे सरला की आँखों में आँसू की बूँदें थीं मानों सीपों में दो अनमोल मोती कैद हों।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दो

"अभी तक ललित नहीं आया क्या?" रायबहादुर मनोहरलाल ने बरामदे में आकर शकुन से पूछा।

"अभी तो नहीं आये, पिता जी! आते ही होंगे।" शकुन ने हाथ का समाचार-पत्र सामने पड़ी छोटी मेज पर रखकर कहा।

रायबहादुर अन्दर चले गये।

रायबहादुर मनोहरलाल नगर के प्रतिष्ठित और धनी व्यक्तियों में थे। कई कम्पनियों के शेयर्स उनके पास थे। मनोहर जूट मिल्स कम्पनी लिमिटेड के तो वे मैनेजिंग डायरेक्टर ही थे। नगर में उनकी काफी इमारतें थीं जिनसे अच्छा-खासा किराया आता था। उनके रहने की कोठी काफी बड़ी और सुन्दर थी। बम्बई की एक कम्पनी से कोठी के लिए बहुमूल्य फर्नीचर मंगाया गया था। फर्श पर बिछे हुए कालीन राय-बहादुर स्वयं ईरान से लाये थे।

लाखों की सम्पदा के स्वामी थे रायबहादुर मनोहरलाल, किन्तु उस सम्पदा को भोगने वाला कोई न था। दो पुत्रियाँ थीं। मगर पुत्रियों की क्या? वे तो परायी अमानत होती हैं। पुत्र का अभाव उनके मन में रह रहकर कसक उठता था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उनकी पत्नी का देहान्त तभी हो गया था जब उनकी बड़ी पुत्री शकुन बारह और छोटी पुत्री शैलजा दस वर्ष की थीं। तब से शकुन और शैलजा आठ बसन्त देख चुकीं थीं। शकुन बी० ए० कर चुकी थी और शैलजा बी० ए० प्रीयवियस में पढ़ रही थीं।

राम और लक्ष्मण एक पिता के पुत्र थे पर उनकी मातायें भिन्न थीं। अतः यदि उनके स्वभाव में आकाश-पाताल का अन्तर था तो कोई विशेष आश्चर्य की बात नहीं है। शकुन और शैलजा एक ही माँ के गर्भ से उत्पन्न हुई थीं और एक ही पिता की पुत्री थीं, फिर भी उनके स्वभाव में पूर्व-पश्चिम की विभिन्नता थी। शकुन सरल, सीधी और भारतीय परम्पराओं में विश्वास रखने वाली मृदुभाषिणी युवती थी; शैलजा चपल, पाश्चात्य सभ्यता की पुजारिणी तथा दिन रात फैशन में डूबी रहने वाली कटुभाषिणी थी। माँ का अतुल सौन्दर्य दोनों के भाग में आया था। अन्तर इतना था कि शकुन का सौन्दर्य मर्यादाबद्ध सागर की भांति गंभीर था और शैलजा का सौन्दर्य मर्यादा के बन्धन को तोड़कर चंचल गति से बहने वाली पहाड़ी सरिता की भांति था।

शकुन समाज-शास्त्र में रुचि लेती थी। उसका विचार समाज-शास्त्र में एम० ए० करने का था। शैलजा की रुचि काव्य में थी। वह स्वयं भी गीत लिखा करती थी और कवि सम्मेलनों तथा गोष्ठियों में जाकर अपना सिक्का जमाती थी। उसका रंग कुछ तो इसलिए जम जाता था कि वह मधुर स्वर में हाव-भाव के साथ गाती थी और कुछ इसलिए कि वह सुन्दर और युवा थी।

शैलजा ने अपनी अठारहवीं वर्ष-गाँठ के उपलक्ष में अपनी जिद से ही कवि गोष्ठी का आयोजन किया था। इस आयोजन के मूल में काव्य-प्रेम की भावना इतनी नहीं थी जितना कमल के समीप आने और उसकी रचनायें सुनने का लोभ। कमल कानपुर के लिए नया ही था। पहले वह फरुखाबाद में रहता था। परिस्थितियों ने उसे गत वर्ष वहाँ से लाकर कानपुर पटक दिया था। वह पच्चीस वर्ष का दुबला-पतला

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

युवक था। पहली बार शैलजा ने जब उसे एक कवि सम्मेलन में देखा था तभी वह उस खोये-खोये से रहने वाले युवक की ओर आकर्षित हो गयी थी। उसके दर्दीले गीत सुनकर तो वह सुध-बुध ही खो बैठी थी। उससे बातचीत करके उसने इतना ज्ञात कर लिया था कि वह इस संसार में अकेला ही है और बेकारी की चक्की में पिसकर, नंगा-भूखा रहकर भी वह अपनी साहित्यिक साधना में लगा हुआ है। किसी एक मित्र के यहाँ रहता है और उन्हीं की दया से पेट भर जाता है। सात महीने बीत गये थे उस प्रथम भेंट को हुए। तब वैसे वह बहुधा पत्र-पत्रिकाओं में तो उसके गीत पढ़ लेती थी पर सुनने का अवसर कभी नहीं मिला था। अपनी वर्ष-गाँठ पर कवि-गोष्ठी का आयोजन उसने इसीलिए किया था कि वह कमल के गीत सुन सके, उसके समीप आ सके। कवियों को निमंत्रण-पत्र बाँटने का कार्य ललित को सौंपा गया था और इसीलिए उसे इतवार के दिन भी बुलाया गया था।

ठीक आठ बजे ललित रायबहादुर की कोठी में पहुँच गया। शकुन बरामदे में बैठी थी।

"आ गये तुम! अभी-अभी पिता जी पूछ रहे थे।" कुर्सी से उठकर शकुन ने कहा।

"मुझे कुछ देर हो गयी। माफी चाहता हूँ।" ललित ने नीची दृष्टि करके कहा।

"तुम कितना बदल गये हो ललित!" कह कर शकुन फिर बैठ गयी।

"मैं नहीं बदला, समय बदल गया है।" ललित ने धीमे स्वर में कहा और वह अन्दर जाने लगा।

"रुको तो?" शकुन बोली। "माफी पिताजी से माँगा करो, मुझसे नहीं। मैं अब भी तुम्हारी पूर्व सहपाठिनी शकुन ही हूँ।"

"मगर मैं तो अब आपका नौकर हूँ।"

"अगर फिर कभी ऐसी बात कहा तो ठीक नहीं होगा।" कुर्सी से उठकर ललित के पास आती हुई शकुन बोली। "नौकर तुम पिताजी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के हो सकते हो, मेरे नहीं।"

"मगर आप.....।" ललित हकलाया।

"और यह 'आप' भी मैं नहीं सुनना चाहती तुम्हारे मुंह से। समझे ?" कह कर शकुन मुस्करा पड़ी।

तभी अन्दर से साज श्रृंगार किये बैग लटकाये आ गयी शैलजा। उसके लिए ललित एक नौकर के अतिरिक्त और कुछ नहीं था।

"तुम्हें सात बजे बुलाया गया था और तुमने आठ बजा दिये।" वह डपट कर बोली।

"जी.....देर हो गयी। माफी चाहता हूँ।" ललित ने हकला कर कहा।

"कितनी देर से यहाँ खड़े हो ? आते ही अन्दर क्यों नहीं आये मेरे कमरे में ?" शैलजा लाल-पीली होकर बोली।

"अभी-अभी आ रहा हूँ।"

"आयन्दा अगर काम में लापरवाही हुई तो डैडी से कहकर एक दिन में निकलवा दूंगी। फिर सिसी भी नहीं बचा सकेंगी तुम्हें।" कहकर उसने तिरछी दृष्टि से शकुन की ओर देखा और फिर वह अपना बैग खोलने लगी।

ललित ने शकुन की ओर देखा। शकुन की दृष्टि में क्षमा याचना थी।

"यह लो लिस्ट ! सब कवियों को कार्ड दे आना।" ललित के हाथ में लिस्ट देकर शैलजा बोली। "कार्ड डैडी के कमरे में रक्खे हैं। जाओ।"

ललित रायबहादुर के कमरे की ओर बढ़ा।

"ठहरो।" कहकर शैलजा उसके समीप पहुँच गयी। "देखो ! लिस्ट में एक नाम के आगे लाल निशान लगा है। और कोई चाहे आये या न आये मगर उस लाल निशान वाले कवि को जरूर आना चाहिए।" वह धीमे स्वर में बोली। उसे डर था कि कहीं शकुन सुन न ले।

"जी, समझ गया।" कहकर ललित आगे बढ़ गया।

बैग झुलाती हुई शैलजा बरामदे में आ गयी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"सुनो तो शैल।" शकुन ने पुकारा।

"क्या है?" शैलजा के स्वर में रूखापन था।

"तुमको इस तरह बात नहीं करनी चाहिए थी उससे।" शकुन ने मन्द स्वर में कहा।

"और क्या मैं पूछ सकती हूँ कि क्यों?" हाथ नचाकर, मुंह बनाकर, अभिनेत्रियों की मुद्रा में शैलजा बोली।

"क्योंकि......।"

"क्योंकि वह तुम्हारा क्लास फेलो था।" बीच में ही शैलजा बोल पड़ी। "क्लास फेलो जब होगा तब होगा, अब तो वह नौकर है हमारा।"

"नौकर भी मनुष्य होते हैं, शैल।" शान्त स्वर में शकुन ने कहा।

"तुम नौकरों को सिर पर बिठा कर नाचो, सिसी, मैं नहीं नाच सकती। मैं अपनी नेचर से मजबूर हूँ। आई एम सॉरी। आई कान्ट डू इट।" कहकर शैलजा पोर्टिको में खड़ी कार पर जाकर बैठ गयी। इससे पहले कि शकुन कुछ कहे, उसने कार स्टार्ट कर दी और कार एक झटके के साथ कोठी से बाहर निकल गयी।

शकुन को जीवन में प्रथम बार क्रोध आया; वह भी किसी दूसरे पर नहीं, स्वयं अपने पर। वह आराम कुर्सी पर लेट गयी।

रायबहादुर के कमरे से कार्ड का बन्डल लेकर जब ललित बाहर आया तब उसने शकुन को उदास मुद्रा में आँखें बन्द किये हुए पाया। वह उसकी ओर बढ़ा। उसकी आहट पाकर शकुन ने आँखें खोल दीं।

"शैलजा की तरफ से मैं माफी माँगती हूँ, ललित!" कुर्सी से उठकर शकुन ने कहा।

"यह क्या कह रही हो तुम!" अनजान में ही ललित के मुख से 'आप' के स्थान पर 'तुम' निकल गया। फिर उसने भूल-सुधार नहीं किया। "तुम दोनों में धरती-आकाश का अन्तर देखकर मुझे हँसी आती है।"

"कौन धरती है और कौन आकाश?" मुस्कराकर शकुन ने प्रश्न किया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"जो हमसे दूर है, जिसे हम समझ नहीं पाते वही आकाश है और जो हमारे पास है, जिसके स्पन्दन में हम अपने स्पन्दन का अनुभव करते हैं, वही धरती है।" ललित का क्लर्क कहीं जा छिपा था और उसका स्वतंत्र व्यक्तित्व उभर रहा था। वह कहता गया—'शून्य के अतिरिक्त आकाश और कुछ नहीं है। धरती ठोस है, सत्य है। अब तुम्हीं समझ लो कि कौन धरती है और कौन आकाश।"

"क्या मैं आकाश हूँ ?" शकुन को शरारत सूझी।

"सम्भव है कुछ लोग चापलूसी करने के लिए तुम्हें आकाश बना दें, पर मेरे लिए तो आकाश कोई प्रशंसा की वस्तु नहीं है। प्रशंसनीय धरती है जो हमें जीवन देती है। तुम आकाश नहीं, धरती हो, शकुन। मेरी जीवनदात्री!" कहकर ललित जाने लगा।

"सुनो तो!" शकुन आगे बढ़कर बोली। "सरला का सम्बन्ध कहीं तय किया ?"

"बात चल रही है। जल्द ही हो जायेगा।" ललित झूँठ बोल गया। उसकी दृष्टि नीची थी। एक पल रुककर बोला—"अब चलता हूँ! कहीं शैल जी आ गयीं तो लेने के देने पड़ जायेंगे।"

"वह तो कार लेकर चली गयी है।"

"मगर आज तो कालेज बन्द होगा। आज इतवार है।" ललित समझता था कि कालेज के अतिरिक्त शैलजा और कहीं जा ही नहीं सकती।

"वह कालेज नहीं, कालेज के मित्र के यहाँ गयी होगी।" शकुन ने कहा।

ललित उसका मुंह देखने लगा।

"उसका एक सहपाठी है कामेश्वर! दोनों की खूब पटती है। उसी के यहाँ गयी होगी।" शकुन ने बात स्पष्ट की और वह फिर बोली—"मुझे तो लफंगा सा लगता है। शैलजा ने उसमें न जाने क्या विशेषता देखी है।"

"अपनी-अपनी पसन्द की बात है।" कहकर ललित तीव्र गति से फाटक की ओर चल दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"शाम को सरला को भी ले आना।" शकुन ने ऊँचे स्वर में कहा।

ललित रुक गया। मुड़कर बोला :

"वर्ष गाँठ तुम्हारी तो है नहीं।"

"तो क्या हुआ? भूलना मत!" शकुन ने आग्रह किया।

"चेष्टा करूँगा।" कहकर ललित बाहर चला गया।

शकुन बरामदे में खड़ी रही। वह सोचने लगी कि ललित ने ठीक ही कहा है। अपनी-अपनी पसन्द की बात है। उसके स्मृति-पटल पर अतीत के वे दिन उभर आये जब वह ललित के साथ पढ़ती थी। वह ललित को पसन्द करती थी; उसकी आँखों में भविष्य का एक सुन्दर सपना था। पर उसका सपना चूर-चूर हो गया था क्योंकि ललित ने उसका प्रेम-प्रस्ताव ठुकरा दिया था। उसने कहा था कि झोपड़ी और महल का कोई साथ नहीं। उसके प्यार को ललित ने कोरी भावुकता ही कहा था। और तभी ललित का ब्याह हो गया था। शकुन के प्यार का गला घुट गया था।

पर प्यार कभी मरता नहीं। प्यार तो अजर है, अमर है। प्यार का अन्त विवाह ही नहीं है। ललित का विवाह किसी दूसरे से हो चुका है, पर इससे क्या! उसको प्यार करने, उसके सुख-दुख में शामिल होने का अधिकार तो शकुन को है ही।

"शकुन बेटी! जरा यहाँ तो आना!" रायबहादुर की आवाज ने शकुन की विचार-धारा भंग कर दी।

"आई पिता जी।" कहकर वह अन्दर चल दी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तीन

"कामेश्वर बेटा! जरा यहाँ तो आना।" बाबू श्यामसुन्दर ने उपन्यास की पाण्डुलिपि मेज पर रखते हुए पुकारा।

"अभी आया, मामाजी, पाँच मिनट में।" कामेश्वर ने अपने कमरे से उत्तर दिया।

बाबू श्यामसुन्दर फिर पाण्डुलिपि पढ़ने लगे।

बाबू श्यामसुन्दर नगर के ही नहीं वरन् प्रान्त के सर्वश्रेष्ठ प्रकाशक थे। उनके "सुन्दर प्रकाशन मन्दिर" की देश भर में धाक थी। उत्तर प्रदेश के हाई स्कूल एवं इन्टरमीडियेट बोर्ड में उनकी दर्जनों पुस्तकें चलती थीं। उनका प्रकाशन क्षेत्र केवल हिन्दी तक ही सीमित न था। विश्वविद्यालय में चलने वाली कई अँग्रेजी की पुस्तकें भी उन्होंने प्रकाशित की थीं। अन्य प्रकाशकों का कहना तो यह था कि उन्होंने अपनी पुस्तकें बोर्ड में घूस देकर लगवायी हैं पर बाबू श्यामसुन्दर हमेशा यही कहा करते थे कि किस्मत हमारे साथ है जलने वाले जला करें।

कोर्स की पुस्तकों के अतिरिक्त वे साहित्यिक पुस्तकें भी छापते थे। हिन्दी के कई प्रतिष्ठित लेखकों तथा कवियों की कृतियों के कापीरायट खरीद कर वे लाखों कमा चुके थे। साहित्यकारों को कैसे उल्लू बनाया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जाता है यह वे खूब जानते थे। जब बड़े-बड़े महारथियों को वे दम भर में मात दे देते थे तब नये साहित्यकारों की गिनती ही क्या? प्रथम तो वे नौसिखिये लौंडों को लिफ्ट देते ही न थे और यदि कभी किसी छोकरे में प्रतिभा का आभास उन्हें मिल जाता था तो वे उससे कानूनी दाँव-पेंच वाला ऐसा कान्ट्रैक्ट करते थे कि फिर वह बिचारा जीवन भर के लिए उनके हाथ बिक जाता था।

कोर्स की पुस्तकों तथा साहित्यिकों के शोषण द्वारा उन्होंने काफी रुपया एकत्र कर लिया था। आधुनिकतम यंत्रों से युक्त उनका प्रेस दर्शनीय था। माल रोड पर पुस्तकों की जो दूकान थी उसमें हर समय कम से कम पचास हजार का स्टाक रहता था। सिविल लाइन्स में एक आलीशान बँगला—"सुन्दर-सदन" हाल ही में बनवाया था। उसी में वे अपनी विधवा बहन गोमती और भानजे कामेश्वर के साथ रहते थे।

जब बाबू श्यामसुन्दर की निःसन्तान पत्नी की मृत्यु हो गयी थी तब उन्होंने अपनी बहन गोमती के पुत्र कामेश्वर को अपने पास बुला लिया था। उस समय कामेश्वर सोलह वर्ष का था। तीन वर्ष बाद गोमती विधवा हो गयी और फिर वह भी अपने भाई के यहाँ आ गयी। तब से दोनों वहीं रह रहे थे। गत ६ वर्षों में कामेश्वर ने अपने अध्ययन के साथ-साथ प्रेस का भी काफी काम सीख लिया था। बाबू श्यामसुन्दर ने मन ही-मन यह निश्चय कर लिया था कि वे अपनी समस्त चल-अचल सम्पत्ति का उत्तराधिकारी कामेश्वर को ही बनायेंगे। गोमती भी यही समझती थी। वह प्रसन्न थी। वह सदैव इस बात का ध्यान रखती थी कि उसके भाई को कोई कष्ट न हो। वह यह नहीं चाहती थी कि बाबू श्यामसुन्दर दूसरी शादी करें क्योंकि तब कामेश्वर के उज्जवल भविष्य का खटाई में पड़ जाने का भय था।

समय के साथ धीरे-धीरे बाबू श्यामसुन्दर के अपनी समस्त सम्पत्ति का उत्तराधिकारी कामेश्वर को बनाने के निश्चय में शिथिलता आ रही थी। इसके दो कारण थे। पहला कारण तो यह था कि उनके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कान में कामेश्वर की कई शिकायतें आयी थीं। उसकी फिजूल खर्ची से तो वे परिचित थे ही पर जिस दिन उन्हें यह मालूम हुआ था कि वह बुरी संगत में फँसकर धूम्रपान के साथ-साथ मदिरापान भी करने लगा है, उस दिन वे ठीक से भोजन भी नहीं कर सके थे। उनके हृदय पर भारी चोट पहुँची थी। उन्होंने उसी रात को गोमती से भी इसका जिक्र किया था। गोमती ने उत्तर दिया था—"अभी बच्चा है, भैया। सिर पर जिम्मेदारी पड़ते ही ठीक हो जायेगा। आप दुखी न हों। मैं समझा दूंगी उसे।" उन्हें यह तो मालूम नहीं हो सका था कि गोमती ने उसे समझाया है या नहीं पर इतना वे अवश्य देख और सुन रहे थे कि कामेश्वर की हरकतें बन्द नहीं हुई थीं। उनका यह भय विश्वास में बदलने लगा था कि कामेश्वर बिगड़ चुका है और उनके मरने के बाद वह साल दो साल में ही सारी सम्पदा फूँक देगा। इसकी कल्पना ही उन्हें कँपा देती थीं। इतना वे पूर्ण रूप से समझ गये थे कि कामेश्वर उनका उत्तराधिकारी बनने के योग्य पात्र नहीं है।

दूसरे कारण का सम्बन्ध उनके हृदय से था। रहरहकर आत्मज का अभाव उनके मन में काँटे की तरह चुभा करता था। वे सोचा करते थे कि आज अगर अपना बेटा होता तो तो क्यों दूसरे का मुंह ताकना पड़ता। प्रारम्भ में कामेश्वर को पुत्र रूप में देखने की जो चेष्टायें उन्होंने की थीं वे अब निरर्थक सी जान पड़ती थीं। अपना अपना ही होता है और पराया पराया......!

बाबू श्यामसुन्दर ने उपन्यास की पाण्डुलिपि फिर मेज पर रख दी और उन्होंने फिर कामेश्वर को पुकारा।

"अभी आया, मामाजी!" कामेश्वर ने उत्तर दिया।

तभी दूध का गिलास लेकर गोमती आ गयी।

"दूध पी लीजिये, भैया।" उसने मीठे स्वर में कहा।

"किसी नौकर से भेज देतीं। तुमने क्यों कष्ट किया?" गिलास लेकर बाबू श्यामसुन्दर बोले।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"नौकरों का क्या भरोसा आजकल! न ठीक से नहाना न धोना! जाने जूठे हाथ भी ठीक से धोते हैं या नहीं।" कहकर गोमती कुर्सी पर बैठ गयी।

बाबू श्यामसुन्दर ने दूध पीकर गिलास मेज पर रख दिया।

"क्या कर रहा है कामेश्वर? दो बार बुला चुका हूँ।"

"कोई किताब पढ़ रहा है। आता ही होगा।" कहकर गोमती ने गिलास उठाया और वह बाहर चली गयी।

बाबू श्यामसुन्दर उठकर टहलने लगे।

तभी कामेश्वर ने कमरे में प्रवेश किया। वह गोरा-चिट्टा सुन्दर जवान था। शार्क स्किन का सूट पहने था। कलाई में रोमर घड़ी थी और सीधे हाथ की दो उँगलियों में बहुमूल्य अँगूठियाँ। एक हीरे की थी; दूसरी मोती की। जेब में शेफर्स कलम लगा था। काले, मुलायम बालों में माँग बीच से निकाली गयी थी। मुंह में मगही पान के चार बीड़े दबे थे जिससे अधर लाल हो रहे थे। पूरा अभिनेता लग रहा था वह। बगल में फिल्म फेयर की नयी कापी भी दबी थी।

"आ गये!" अपनी कुर्सी पर बैठकर बाबू श्यामसुन्दर बोले।

"जी, मामाजी!" कहकर वह दूसरी कुर्सी पर बैठ गया।

"इस उपन्यास के दो-चार परिच्छेद पढ़कर बताओ कैसा है।" कहते हुए बाबू श्यामसुन्दर ने पाण्डुलिपि कामेश्वर को थमा दी।

"मैं तो पढ़ भी नहीं सकूँगा, मामाजी। किसका है? रायटिंग बहुत गन्दा है।" कामेश्वर ने पहला पृष्ठ देखकर कहा।

"बड़े लोगों की लिखावट ऐसी ही होती है। यह उपन्यास भारत प्रसिद्ध मधुपजी का है। कोड़ियों उपन्यास लिख चुके हैं।" बाबू श्याम सुन्दर ने बताया।

"आप न जाने क्यों बड़े लेखकों के वर्क्स लेते हैं। उनमें अब रह ही क्या गया है? राटन! ट्रैश!! नाम बड़े और दर्शन थोड़े। मैं कहता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हूं, नयी प्रतिभाओं को प्रकाश में लाइये, मामाजी !" कामेश्वर ने पाण्डु-लिपि मेज पर रख कर कहा।

"मैं उपन्यास पर तुम्हारा मत चाहता हूँ, अपनी प्रकाशन-नीति पर नहीं।" चिढ़कर बाबू श्यामसुन्दर बोले।

"जी।" कहकर कामेश्वर ने पाण्डुलिपि उठा ली। वह पढ़ने लगा। उपन्यास गंभीर और मनोविश्लेषणपूर्ण था। पहला पृष्ठ ही पढ़ना। कठिन हो गया उसके लिए। उसकी रुचि सस्ते साहित्य के प्रति थी कामुकता पूर्ण अमेरिकन उपन्यास पढ़कर मानसिक भोग का आनन्द लेने वाले लाखों भारतीय युवकों में से ही था वह भी। उसे हिन्दी का वह उपन्यास बोझिल लगा।

"मुझे तो बिल्कुल पसन्द नहीं है।" कहकर उसने पाण्डुलिपि फिर मेज पर रख दी।

"क्यों?" बाबू श्यामसुन्दर ने प्रश्न किया।

"क्यों? बस पसन्द नहीं है, और क्यों?" कहकर कामेश्वर उठ खड़ा हुआ।

"पसन्दी-नापसन्दी का कारण होता है, आधार होता है। मैं कहता हूँ, अमेरिकन उपन्यास न पढ़ा करो। तुम्हारी रुचि विकृत कर दी है उन्होंने।" बाबू श्यामसुन्दर कुछ कड़े स्वर में बोले। "और न यह फिल्म-फेयर ही उद्धार करेगा तुम्हारा।"

कामेश्वर ने सोचा कि बुरा फँसा। न जाने किस मनहूस का चेहरा देखकर उठा था। फिर उसे ध्यान आया कि उठते ही उसने दर्पण में अपना ही चेहरा देखा था। यह सोच कर उसे हँसी आ गयी।

"मेरी बात पर आज हँस रहे हो तुम! मगर याद रखना.....।"

"जी, मैं आपकी बात पर नहीं हँस रहा था, मामाजी। मैं....मैं...तो.....।" कामेश्वर आगे न बोल सका।

'सुन्दर-सदन' के पोर्टिको में कोई कार आकर रुकी।

कामेश्वर द्वार की ओर बढ़ा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"ठहरो!" बाबू श्यामसुन्दर तेज स्वर में बोले। "यह उपन्यास ले जाओ। पूरा पढ़कर मुझे इसकी कहानी संक्षेप में सुनाना।"

कामेश्वर पर वज्रपात हुआ। लौटकर उसने पाण्डुलिपि उठा ली। उसी समय माली अन्दर आया।

"शैलजा बिटिया आयी हैं।" उसने कामेश्वर से कहा।

"शैलजा? कौन शैलजा?" बाबू श्यामसुन्दर ने कामेश्वर से प्रश्न किया।

"रायबहादुर मनोहरलाल की लड़की है। मेरे साथ पढ़ती है।" कहकर कामेश्वर बाहर जाने को उद्यत हुआ।

"यहीं भेज दो।" बाबू श्यामसुन्दर ने माली को आज्ञा दी।

माली चला गया।

मन मार कर कामेश्वर वहीं बैठ गया। पाण्डुलिपि मेज पर रखकर उसने शान्ति की साँस ली।

शैलजा ने कमरे में प्रवेश किया।

बाबू श्यामसुन्दर को देखकर वह कुछ झिझकी। वह समझती थी कि कामेश्वर अकेला ही होगा।

"आओ बेटी! यहाँ बैठो।" कहकर बाबू श्यामसुन्दर ने एक कुर्सी की ओर संकेत किया।

शैलजा सिकुड़ी सी बैठ गयी। विचित्र दशा थी उसकी।

"तुम कामेश्वर के साथ पढ़ती हो?" बाबू श्यामसुन्दर ने पूछा।

शैलजा ने सिर हिला दिया।

"कैसे कष्ट किया?" उन्होंने फिर पूछा।

कामेश्वर मन ही मन कुढ़ रहा था।

"आज मेरा जन्म-दिन है। उसी की दावत देने आयी थी।" शैलजा धीमे स्वर में बोली।

कामेश्वर ने सोचा कि यदि वह मौन रहता है तो मामाजी न जाने क्या-क्या प्रश्न पूछ डालेंगे। उसने बीच में बोलना ही उचित समझा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"यह मेरे मामाजी हैं, शैल !" वह बोला। "चोटी के प्रकाशक हैं। और यह रायबहादुर मनोहरलाल जी की सुपुत्री हैं, मामाजी ! बहुत अच्छी कविता लिखती हैं।"

"अच्छा ! तो तुम कविता भी लिखती हो ?" बाबू श्यामसुन्दर प्रसन्न होकर बोले। "यह तो बहुत अच्छी बात है। कभी सुनाना मुझे।"

बात का रुख बदलता देखकर कामेश्वर प्रसन्न हो उठा।

"कविता लिखती तो क्या, हाँ कोशिश जरूर करती हूँ।" शैलजा संकुचित होकर बोली। "आज कवि-गोष्ठी है मेरे यहाँ। शाम को सात बजे। आप भी आने का कष्ट करें।"

"जरूर आऊँगा।" हँसकर बाबू श्यामसुन्दर बोले।

"कार्ड लाना तो मैं भूल.......।"

"जब तुम खुद ही कह रही हो तब कार्ड की क्या जरूरत है। मैं जरूर आऊँगा। देखूँगा, हमारी नयी पीढ़ी किधर जा रही है, क्या लिख-पढ़ रही है।" बीच में ही बाबू श्यामसुन्दर बोल पड़े।

"गोष्ठी के बाद प्रीति-भोज भी है।" दृष्टि नीची करके धीमे स्वर में शैलजा बोली।

"यह तो और भी अच्छी बात है।" कहकर बाबू श्यामसुन्दर हँसने लगे।

"अब आज्ञा दीजिए।" कहकर वह खड़ी हो गयी। उसने कामेश्वर की ओर देखा।

उसकी आँखों का भाव समझकर वह भी उठ खड़ा हुआ।

"मुझे प्रोफेसर शर्मा के यहाँ जाना है, मामाजी।" उसने डरते-डरते धीमे स्वर में कहा।

"अरे ! उधर तो मैं भी जा रही हूँ। चलो, छोड़ दूँगी तुम्हें वहाँ।" शैलजा बोली।

"चलो।" कहकर कामेश्वर शैलजा के साथ चल दिया।

बाबू श्यामसुन्दर के अधरों पर एक मधुर मुस्कान खेल गयी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बाहर से कार स्टार्ट होने की आवाज आयी। कार बाहर गयी और चौकीदार अन्दर आया। उसके पीछे 'राम ऐण्ड श्याम कं०' का मैनेजर था। बाबू श्यामसुन्दर समझ गये कि वह कामेश्वर के बिल वसूलने आया है।

"आइए, बैठिए।" उन्होंने पास वाली कुर्सी की ओर संकेत किया।

मैनेजर बैठ गया।

चौकीदार बाहर चला गया।

"कहिये, कैसे कष्ट किया ?" बाबू श्यामसुन्दर ने पूछा।

"काफी लम्बा बिल हो गया है छोटे बाबू का। उसी सिलसिले में आया था।" मैनेजर ने कहा।

"मगर दो महिने पहले तो हिसाब साफ कर दिया गया था। करीब पाँच हजार रुपये दिये थे। अब कितना है ?" बाबू श्यामसुन्दर ने आश्चर्य से पूछा।

"साढ़े सात हजार।" कहकर मैनेजर ने बिलों की कापियाँ उनकी ओर बढ़ा दीं।

साढ़े सात हजार! बाबू श्यामसुन्दर का सिर चकरा गया। यह लड़का तो रुपया बहाने पर तुला है। दो महीने में साढ़े सात हजार का सामान!!

बिल देखकर वे चक्कर में पड़ गये। एक-एक हजार की दो अँगूठियाँ! ढाई हजार का एक जड़ाऊ हार!! पाँच-पाँच सौ की दो जनानी घड़ियाँ!!! चार-चार सौ की पाँच साड़ियाँ!!! और यह सब सामान हवा में उड़ गया। घर में कोई भी चीज नहीं आयी।

"आप जानते हैं कि उसकी अभी शादी नहीं हुई है। फिर आप ऐसा सामान उसे देते क्यों हैं ?" क्रुद्ध होकर बाबू श्यामसुन्दर बोले। उनका खून खौलने लगा था।

"जी. . . . ।"

"मैं आपको पहले भी मना कर चुका था। मैं कुछ नहीं जानता।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जो सामान लाया है उसी से दाम वसूल करो।" आवेश में आकर बाबू श्यामसुन्दर टहलने लगे।

"जी हम लोग तो मना करते हैं मगर छोटे बाबू लड़ने को तैयार हो जाते हैं।" मैनेजर विनम्र स्वर में बोला।

"आप जानते हैं यह सब सामान कहाँ जाता है?"

"जी.....।"

"आवारा छोकरियों के घर। यह लड़का मुझे मिटाने पर तुला है।" कहकर वे फिर बैठ गये। दोनों हाथों से वे अपना मस्तक दबाने लगे। उनके मस्तक की नसें फूल आयी थीं।

मैनेजर चुपचाप बैठा रहा। उसे विश्वास था कि पैसा डूबेगा नहीं।

"कान खोल कर सुन लो," एक क्षण बाद बाबू श्यामसुन्दर बोले। "अगर अब आपने एक पाई का भी सामान उसे दिया तो मैं जिम्मेदार नहीं हूँ। समझे! अब जाइए आप! कल साढ़े सात हजार का चेक पहूँच जायेगा।

मैनेजर चला गया।

बाबू श्यामसुन्दर की बेचैनी बढ़ती गयी। काश! आज अपनी सन्तान होती! एक टीस सी उठी उनके हृदय में! अब भी समय है। अभी कुछ नहीं बिगड़ा है। कुछ करना चाहिये। अपनी सन्तान! अपना बेटा!! अपना खून!!!

पलक मारते ही उन्होंने निश्चय कर लिया। अपनी सन्तान! अपना बेटा!! अपना खून!!!

उठकर वे उस कोने में गये जहाँ फोन रक्खा था। फोन उठाकर उन्होंने नम्बर मिलया।

"दैनिक विश्वमित्र कार्यालय।" उधर से स्वर आया।

"अवस्थी जी से बात कराओ।" बाबू श्यामसुन्दर ने कहा।

उनके स्वर में संकल्प की दृढ़ता थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चार

रायबहादुर की कोठी के बाहर आकर ललित ने रिक्शे के लिए इधर-उधर दृष्टि दौड़ायी। उसे कहीं रिक्शा न दिखायी दिया। प्रतीक्षा करना व्यर्थ समझ वह पैदल ही चल दिया। उसके हाथ में कार्डों का बन्डल था, जेब में शैलजा की दी हुई लिस्ट और रायबहादुर द्वारा दिये गये एक-एक रुपये के तीस नये नोटों की गड्डी थी, मस्तिष्क में विचारों का बवंडर था। वह सोच रहा था शकुन के बारे में, बीते हुए विद्यार्थी जीवन के बारे में। विचारों के सागर में डूबता-उतराता वह सिर झुकाये मन्द गति से चला जा रहा था।

रिक्शे की घंटी सुनकर वह चौंक पड़ा। एक खाली रिक्शा उसकी बगल से निकला। रिक्शा रोककर वह उस पर सवार हो गया। रिक्शा आगे बढ़ा।

ललित ने सोचा कि पहले उसी भाग्यशाली कवि के यहाँ चलना चाहिए जिसके नाम के आगे शैलजा ने लाल निशान लगाया है। जेब से लिस्ट निकाल कर उसने देखा। जिस नाम के आगे लाल निशान लगा था वह था—'कमल जी, द्वारा राममोहन मिश्र. ५५।८, राममोहन का हाता।'

दरारें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"राममोहन के हाते चलो।" ललित ने रिक्शा वाले को आदेश दिया।

"यह किधर है, मालिक?" रिक्शे वाले ने पूछा।

"तुम्हें यह भी नहीं मालूम! कैसा रिक्शा चलाते हो?" हँसकर ललित बोला।

"अभी नया हूँ, मालिक।" कहकर रिक्शे वाले ने घंटी बजादी।

"प्रयाग नरायन का शिवालय जानते हो?" ललित ने पूछा।

"वही, जहाँ औरतों का बाजार है।"

रिक्शे वाले की बात सुनकर हँसी आ गयी ललित को। बोला—"हाँ भाई वही। बस उसी के आगे है राममोहन का हाता।"

"समझ गया, मालिक।" कहकर रिक्शे वाला तेजी से पैर चलाने लगा।

ललित फिर अपने विचारों में डूब गया।

इस बार उसकी विचार-धारा अतीत और वर्तमान के तटों से टकराती हुई बह रही थी। अतीत की सुखद स्मृति को वर्तमान का वैषम्य रह रह कर झकझोर देता था।

अतीत की स्मृति का आधार थी शकुन और वर्तमान की विषमता, बेबसी और पीड़ा का आधार थी सरला।

शकुन और सरला!

सरला और शकुन!!

"अन्दर चलूँ, मालिक?" रिक्शेवाले के प्रश्न से ललित चौंक पड़ा।

रिक्शा राममोहन के हाते के फाटक पर खड़ा था।

ललित उतर पड़ा। उसने रिक्शेवाले को एक रुपये का नोट दिया।

"कितना लौटा दूँ, मालिक?" रिक्शेवाले ने बंडी की जेब से रेजगारी निकालते हुए पूछा।

"अठन्नी।"

अठन्नी लेकर ललित हाते के अन्दर घुसा। जेब से लिस्ट निकाल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर एक बार उसने फिर कमल का पता देखा और फिर मकानों के नम्बरों को देखता हुआ आगे बढ़ने लगा।

पाँच मिनट बाद ही उसे अभीष्ट मकान मिल गया।

"कमल जी हैं क्या?" उसने आवाज दी।

एक क्षण बाद एक नवयुवक बाहर आया।

"कमल जी आप ही हैं क्या?" ललित ने पूछा।

"नहीं भाई!" नवयुवक बोला। "वे आपको खन्ना पार्क में मिलेंगे।"

ललित ने प्रश्न भरी दृष्टि से नवयुवक की ओर देखा।

"इस गली के छोर पर एक छोटा सा पार्क है। वहीं मिल जायेंगे।" कह कर नवयुवक अन्दर जाने लगा।

"सुनिये तो।" ललित ने पुकारा। "मैं उन्हें पहचानूंगा कैसे? पार्क में तो बहुत से लोग होंगे।"

"आप उन्हें पहचान लेंगे। तहमद और गंजी पहने हैं। बाल बड़े-बड़े हैं। किसी एकान्त कोने में बैठे या लेटे कविता गुनगुना रहे होंगे।" हँसकर नवयुवक ने कहा और फिर वह अन्दर चला गया।

ललित आगे बढ़ गया।

गली के छोर पर पार्क था। वह अन्दर गया। मोहल्ले के बच्चे वहाँ खेल रहे थे।

उसने चारों ओर दृष्टि दौड़ायी।

एक बेंच पर तहमद और गंजी पहने, बड़े-बड़े बालों वाला एक गौरवर्ण युवक आँखें बन्द किये बैठा था।

ललित उसकी ओर बढ़ा।

"क्षमा कीजियेगा," ललित बेंच के समीप पहुँचकर बोला। "क्या आपका ही नाम कमल जी है?"

"जी हाँ!" आँखें खोल कर ललित को ध्यान से देखता हुआ कमल बोला। "आपको कुछ आपत्ति है?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"मुझे क्या आपत्ति हो सकती है!" कहकर वह बेंच पर बैठ गया। उसने देखा कि कमल की गंजी फटी है और तहमद गन्दा है।

"आपका कार्ड है।" कहकर ललित ने कार्ड कमल की ओर बढ़ा दिया। कार्ड लेकर कमल ने पढ़ा। उसमें लिखा था :—

"प्रिय महोदय,

परमपिता परमेश्वर की अनुकम्पा से आज मेरी छोटी पुत्री शैलजा की अठारहवीं वर्षगाँठ है। इसी उपलक्ष में मैंने अपने निवास-स्थान, मनोहर विला, न्यू सिविल लाइन्स, में सन्ध्या को सात बजे एक कवि-गोष्ठी का आयोजन किया है। गोष्ठी के पश्चात् प्रीति-भोज होगा। आप सादर निमंत्रित हैं। आशा है आप अपनी उपस्थिति से मुझे अनुग्रहित करेंगे।

भवदीय

रायबहादुर मनोहरलाल"

कार्ड पढ़कर कमल ने फिर आँखें बन्द कर लीं।

"आप आयेंगे न?" ललित ने पूछा।

कमल ने आँखे खोलकर ललित की ओर देखा; फिर तहमद की टेंट से बीड़ी का बन्डल और दियासलाई निकालकर एक बीड़ी जलायी। एक कश खींचकर धुंआ छोड़ता हुआ वह अनमने भाव से बोला:— "नहीं।"

"जी!" घबरा गया ललित।

"मैं नहीं आ सकूँगा।" कमल ने कहा और फिर एक कश खींचा।

"मगर... मगर आप कवि-सम्मेलनों में जाते तो हैं।"

"जाता तो हूँ, मगर उन्हीं में जो ढग के होते हैं। शादी-व्याह, टीका, जनेऊ, जन्म-दिन आदि के उपलक्ष में आयोजित सम्मेलनों में मैं भाग नहीं लेता।" कमल ने कुछ तेज स्वर में कहा।

"मगर क्यों?" ललित ने प्रश्न किया।

"आप लोगों ने कवियों को भांड़ समझ रक्खा है क्या? घर में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कोई काम-काज हुआ और बुला लिया कवियों को। अगर मनोरंजन ही करना है तो मुजरा क्यों नहीं कराते?" आवेश में आकर कमल का स्वर क्रुद्ध हो गया।

ललित को कोई उत्तर नहीं सूझा। वह चुपचाप सिर नीचा किये बैठा रहा।

"कह देना रायबहादुर से जाकर कि प्रीति-भोज के लालच में आने वाले लोगों में मैं नहीं हूँ। समझे! अब आप जा सकते हैं।" कहकर कमल ने फिर आँखें मूँद लीं और वह कुछ गुनगुनाने लगा। बीड़ी उसने दूर फेंक दी।

ललित को पार्क घूमता सा दिखाई दिया। उसे लगा जैसे बेंच हिल रही है, बच्चे हवा में उड़ रहे हैं। वह जानता था कि यदि कमल न गया तो शैलजा उसपर बहुत बिगड़ेगी और फलस्वरूप उसकी नौकरी खटाई में पड़ जायेगी। एक ओर कमल को अवश्य लाने के लिये शैलजा की कठोर आज्ञा थी, तो दूसरी ओर वहाँ न जाने का कमल का दृढ़ संकल्प था। वह क्या, करे, क्या न करे!

"अगर आप न आये तो...तो मुझे नौकरी से निकाल दिया जायेगा।" ललित ने कुछ सोचकर धीमे और उदास स्वर में कहा।

कमल ने गुनगुनाना बन्द कर दिया। आँखें खोलकर उसने प्रश्न भरी दृष्टि ललित पर डाली।

"शैलजा जी चाहती हैं कि आप अवश्य आयें। यह देखिये। उन्होंने आपके नाम के आगे लाल निशान भी लगा दिया है।" कह कर ललित ने लिस्ट कमल को थमा दी।

कमल ने लिस्ट बिना देखे ही लौटा दी। उसकी स्मृति-पट पर एक कवि सम्मेलन का वह दृश्य उभर आया जब उसका शैलजा से प्रथम परिचय हुआ था और जब प्रथम परिचय में ही शैलजा ने उसके निकट—बहुत निकट आने की असफल चेष्टा की थी। उसी दिन वह समझ गया था कि शैलजा तितली है—चंचल, शोख और स्वच्छन्द!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"अगर आप न आये तो वे मुझे नौकरी से निकाल देंगी। मैं बेकार हो जाऊँगा; मेरे बाल-बच्चे भूखों मर जायेंगे।" ललित का स्वर भावी की आशंका से काँप गया।

कमल ने ललित की ओर देखा और फिर कुछ देर तक देखता ही रहा।

ललित को आशा की किरण दिखाई दी।

"बेकारी और भूख की ज्वाला की तपन का अनुभव मुझे है।" रुक-रुक कर कमल बोला। "मैं किसी को भी उस आग में झोंकने का अपराध नहीं कर सकता।"

"तो आप.....।"

"मैं आऊँगा! अवश्य आऊँगा!!" कहकर कमल ने दूसरी बीड़ी जलाई।

"बहुत-बहुत धन्यवाद।" कृतज्ञता के स्वर में ललित बोला और फिर उठकर पूछा:—"आपके लिए कार भेज दूँ या आप रिक्शे-ताँगे से आयेंगे?"

कमल ने दृष्टि उठायी।

"अगर रिक्शे-ताँगे से आयें तो किराया दे दूँ।" कहकर ललित ने जेब से नोटों की गड्डी निकाल ली।

"गड्डी जेब में रख लीजिये।" कमल का स्वर कठोर हो गया। "मै पैदल ही आऊँगा।"

"जी.....?"

"अब जाइये आप।" कमल ने कहा। वह फिर आँखें बन्द करके गुनगुनाने लगा।

ललित ने गड्डी जेब में रख ली। वह पार्क के फाटक की ओर चला।

फाटक पर पहुँच कर उसने मुड़कर देखा।

कमल तीसरी बीड़ी जला रहा था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ललित को लगा जैसे वह गोष्ठी में सम्मिलित होकर अपने आदर्शों और सिद्धान्तों का गला घोंट रहा है। उसी की पीड़ा और व्यथा उसकी आत्मा को कोंच रही है। और वह उस पीड़ा एवं व्यथा को भस्म करने के लिये बीड़ी की आग का आश्रय ले रहा है।

कमल के प्रति अपार श्रद्धा लेकर ललित पार्क से बाहर निकल आया। 'गरीबी स्वाभिमान का गला नहीं घोंट सकती।" वह बड़बड़ाया।

हाते से बाहर निकल कर उसने फिर रिक्शा किया और वह अन्य कवियों को कार्ड देने चल पड़ा। वैसे तो कानपुर के हर मोहल्ले में दर्जनों युग प्रवर्तक-आचार्य और युग निर्माता कवि रहते हैं और यदि सबको आमंत्रित किया जाये तो संख्या सैकड़ों पर पहुँचे, किन्तु शैलजा ने चुने-चुने कवियों को ही बुलाया था। कमल के अतिरिक्त लिस्ट में दस नाम और थे। उन्हें कार्ड देने के लिए घन्टे भर का समय पर्याप्त था।

दस में से प्रत्येक कवि ने पहले तो स्वाभाववश नखरे दिखाये पर बाद में आने के लिए राजी हो गये। वास्तविकता तो यह थी कि वे रायबहादुर का निमंत्रण पाकर प्रसन्न थे। रायबहादुर की कोठी में आयोजित कवि-गोष्ठी में सम्मिलित होना उनके लिये परम सौभाग्य की बात थी। कवि को सुनाने का रोग तो होता ही है। सुनने वाला चाहिए। फिर सुनने वाले के कान भले थक जायें मगर मजाल है कि कवि महोदय का मुंह थके। हाँ, बीच-बीच में दाद, चाहे वह झूठी ही क्यों न हो, मिलती रहनी चाहिए।

ललित ने सवारी के बारे में पूछा तब हर एक ने रिक्शे-ताँगे से ही जाने की इच्छा प्रकट की। कार से जाने में किराये का ढंग तो था नहीं। ललित ने हर एक को दो-दो रुपये दे दिये। ललित समझ गया कि इन दो रुपयों से लान्ड्री में 'अरजेन्ट' कपड़े धुलाये जायेंगे, शेव कराया जायेगा, जूतों पर पालिश करायी जायेगी। गरज यह कि रायबहादुर के यहाँ जाने योग्य चोला बनाया जायेगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निमंत्रण-पत्र बाँटकर ललित ने सन्तोष की साँस ली। 'मेघ पुष्प' में जाकर उसने एक प्याली चाय का आर्डर दिया और फिर एक खाली कुर्सी पर बैठकर कमल तथा अन्य कवियों के बारे में सोचने लगा। उसे लगा कि परिस्थितिओं की आँधी में भी अडिग रहने वाला कमल ही है; अन्य कवि झुक गये हैं, वे अपने को समय के हाथों बेच चुके हैं। अपने अस्तित्व को सुरक्षित रखने के लिए हर एक ने किसी न किसी गुट से अपना नाता कर लिया है जब कि कमल गुटबाजी से दूर रहकर साधना कर रहा है। उसकी रचनाओं में किसी वाद की मोहर नहीं है; वह भी वही लिखता है जो उसका हृदय अनुभव करता है।

वेटर चाय का प्याला मेज पर रख गया। गर्म चाय से धुंएं की नागिन बल खाती, इठलाती निकल रही थी।

"और सब तो धुंयें के बादल की तरह मिट जायेंगे पर कमल जिन्दा रहेगा।" ललित के मुख से निकल गया।

चाय की प्याली उठाकर उसने मुख से लगा ली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पाँच

जैसे ही कार बँगले से निकलकर सड़क पर आयी, शैलजा बोली :—

"तुम्हारे मामा तो अजीब आदमी हैं।"

शैलजा कार चला रही थी। उसके काले-घुंघराले बाल हवा में लहरा रहे थे। हल्के धानी रंग की रेशमी साड़ी में वह परी सी लग रही थी। आँखों पर बहुमूल्य चश्मा लगा था। धूप के चश्मे का प्रयोग वह आँखों को धूप की तेजी से बचाने के लिए कम, अपने सौन्दर्य में चार चाँद लगाने के लिए अधिक करती थी।

कामेश्वर उसके पास ही बैठा था। शैलजा की बात सुनकर बोला :—

"लाखों में एक हैं मेरे मामाजी।"

"तभी तो उनपर फूलते हो तुम।" कहकर शैलजा हँस पड़ी।

शैलजा के व्यंग्य को कामेश्वर ने समझ तो लिया पर वह बात को घुमा कर बोला :—

"मैं अगर फूलता हूँ तो सिर्फ एक चीज पर।"

शैलजा ने प्रश्न भरी दृष्टि से उसकी ओर देखा।

"मैं अपने दिल पर फूलता हूँ।" कामेश्वर अपने हृदय पर हाथ रखकर बोला। "प्यार को किसी सहारे की जरूरत नहीं होती। सहारा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तो सौन्दर्य लेता है।"

कामेश्वर ने अपना हाथ शैलजा के कन्धे पर रख दिया।

"प्यार किसी का सहारा नहीं लेता?"

"नहीं।" कामेश्वर के हाथ का दबाव बढ़ गया।

"माई गाड! क्या एक्सीडेन्ट कराने का इरादा है? हाथ तो हटाओ।" कहकर शैलजा ने हार्न बजाया।

कामेश्वर ने मुस्कराकर हाथ हटा लिया।]

"और सौन्दर्य किसका सहारा लेता है?" शैलजा ने हँसकर पूछा।

"मेक-अप का। बिना पाउडर और लिप-स्टिक के रूप दो कदम भी नहीं चल सकता।"

शैलजा ने कार में लगे हुए दर्पण में अपना मुख देखा। पाउडर तो ठीक था पर लिप-स्टिक गहरी हो गयी थी। मुस्करा कर बोली:—

"जल्दी में थी इसी से लिप-स्टिक गहरी हो गयी।" और फिर कामेश्वर के बालों की ओर देखते हुए उसने कहा—"और तुम्हारे बालों में भी तो तेल बुरी तरह चमक रहा है।"

कामेश्वर ने बालों पर हाथ फेरा। हाथ में तेल की स्निग्धता आ गयी। क्षण भर के लिए लज्जा से उसका मुख लाल हो गया। फिर हृदय पर हाथ रखकर, निःश्वास छोड़ते हुए, अजब अन्दाज में बोला:—

"शैल! यह तेल की चिकनाई नहीं, मेरे प्यार की चिकनाई है। तुम्हें पास पाकर मेरे दिल का प्यार बह चला है।"

"प्यार की इस बाढ़ में कहीं दुनिया डूब न जाये।" कहकर शैलजा हँस पड़ी।

कामेश्वर ने भी हँसने का प्रयास किया पर हँसी अधरों में उलझ कर रह गयी। अपनी पराजय पर वह खिन्न हो उठा।

कार तीव्र गति से माल रोड की ओर बढ़ी चली जा रही थी।

"कहाँ चलना है?" कामेश्वर ने कुछ देर बाद पूछा।

"रीगल?" कहकर शैलजा ने हार्न बजाया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बीच सड़क पर मस्ती से सायकिल चलाने वाले एक विद्यार्थी ने जैसे हार्न सुना ही न हो। वह अपनी धुन में मग्न रहा।

पास आकर शैलजा ने इतनी जोर से हार्न बजाया कि विद्यार्थी चौंक पड़ा और सायकिल किनारे ले जाने के बजाय हड़बड़ा कर गिर पड़ा। शैलजा ने हँसकर कार आगे बढ़ा दी।

"अन्धे होकर चलते हैं लोग।" वह बोली।

"वे जान-बूझ कर मरना चाहते हैं।" कहकर कामेश्वर ने सिगरेट सुलगायी और फिर धुंये का गोला बनाता हुआ बोला—"अगर मेरा बस चले तो मैं लड़कियों और खास तौर से सुन्दर लड़कियों को ड्राइविंग-लायसेन्स ही न दूँ। लड़कियों की कार के नीचे आकर मरने वालों की कमी नहीं है आजकल।"

"और मेरा बस चले तो लड़कों को और खास तौर से रोमियो-टायप के लड़कों को लायसेन्स कभी न दूँ।" शैलजा ने कृत्रिम गंभीरता से कहा।

"क्यों ?"

"क्योंकि वे चलाते तो कार हैं पर उनकी आँखें लगी रहती हैं सड़क पर चलने वाली लड़कियों की तरफ। इसीलिए सैकड़ों एक्सीडेन्ट रोज होते हैं।" कहकर शैलजा हँस पड़ी।

"और अगर कार पर रोमियो और जूलियट दोनों हुये तो ?" शरारतपूर्ण मुस्कान के साथ शैलजा की ओर देखते हुये कामेश्वर ने प्रश्न किया।

"तो. . . . तो मे गाड हेल्प दी पेडेस्ट्रियन्स।"

कार तब तक रीगल के सामने पहुँच चुकी थी। रविवार होने के कारण उसमें मार्निंग-शो था। चित्र था—रोमन हालीडे।

"रोमन हालीडे अच्छा पिक्चर है। मैंने इसका रिव्यू फिल्म-फेयर में पढ़ा है।" कामेश्वर बोला।

शैलजा ने कार किनारे लगा दी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कामेश्वर ने उतर कर बाल्कनी के दो टिकट ले लिये।

दोनों ऊपर पहुँचे और एक एकान्त कोने में जाकर बैठ गये।

चित्र प्रारम्भ होने में देर थी।

"क्या प्रेजेन्ट दे रहे हो मुझे ?" शैलजा ने पूछा।

"मेरे पास है ही क्या देने को ?" हँसकर कामेश्वर बोला। "एक दिल था वह कभी का दे चुका हूँ।"

"अच्छा! मुझे तो मिला नहीं अब तक! क्या उसकी रसीद है तुम्हारे पास ?" शैलजा के स्वर में शरारत थी।

"रसीद पाने की ही आशा में जी रहा हूँ।" कहकर कामेश्वर ने उसके हाथ पर अपना हाथ रख दिया।

शैलजा ने अपना हाथ नहीं खींचा।

तभी हाल की बत्तियाँ बुझ गयीं और सामने वाले बड़े सफेद पर्दे पर काली-सफेद तस्वीरें आने-जाने लगीं।

शैलजा पूरे मनोयोग से न्यूज-रीलस देख रही थी, किन्तु कामेश्वर का ध्यान कहीं और था। वह सोच रहा था अपने विषय में, शैलजा के विषय में, उसके और अपने सम्बन्ध के विषय में।

कामेश्वर प्रारम्भ से ही स्वच्छन्द प्रकृति का था। बन्धनों से उसे चिढ़ थी। और तो और, व्याह को भी वह व्यर्थ का बन्धन और अनावश्यक उत्तरदायित्व समझता था। प्यार के क्षेत्र में भी वह स्वच्छन्दता का पक्षपाती था। वह अनेक युवतियों को प्यार के रंगीन स्वप्न दिखाकर पथभ्रष्ट कर चुका था, शादी का प्रलोभन देकर उनका जीवन नष्ट कर चुका था। जहाँ प्यार की रंगीनियाँ और शादी के प्रलोभन असफल रहे थे वहाँ उसने पैसे से काम लिया था। उसके लिए प्यार का अर्थ था वासना; नारी की उपयोगिता थी काम-तृप्ति।

शैलजा को जिस दिन प्रथम बार कालेज में देखा था उसी दिन से वह उसकी ओर आकृष्ट हो गया था। जब उसे ज्ञात हुआ कि शैलजा भी आधुनिक विचारों की लड़की है तब उसे अपार हर्ष हुआ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

था और उसने समझ लिया था कि उसपर विजय पाना अत्यन्त सरल है; किन्तु उसकी वह धारणा निर्मूल सिद्ध हुई थी। शैलजा स्वतंत्र विचारों की थी और इसीलिए वह उससे घुल-मिल भी गयी थी; परन्तु उसने कामेश्वर को सीमा का उल्लंघन कभी नहीं करने दिया था। कामेश्वर इसे अपनी करारी हार मानता था। कालेज के अधिकाँश विद्यार्थी यही समझते थे कि उसने शैलजा को जीत लिया है; उसके कुछ अंतरंग मित्रों ने उसे बधाई भी दी थी और उसने मौन रहकर उनकी बधाइयों को स्वीकार भी कर लिया था, किन्तु वास्तव में मित्रों की बधाइयाँ उसके गालों पर तमाचों की तरह थीं।

कामेश्वर यदि कभी किसी लड़की से पराजित हुआ था तो शैलजा से। इस पराजय को जय में परिवर्तित करने के लिए वह मन-ही-मन नाना योजनायें बनाया करता था; परन्तु शैलजा न जाने किस मिट्टी की बनी थी कि उसका कोई रंग उसपर चढ़ता ही न था। वैसे वह उससे हँसती-बोलती थी; उसके साथ घूमती-फिरती थी; कभी-कभी प्यार की बातें भी कर लेती थी; परन्तु इससे आगे एक ऐसी लक्ष्मण-रेखा थी जिसे पार करने की न तो कभी उसी ने उत्सुकता दिखाई थी और न कामेश्वर को ही ऐसा प्रोत्साहन दिया था कि वह उस रेखा को पार करने का दुःसाहस कर सके। समीप की यह दूरी कामेश्वर की रग-रग में विष बनकर समा चुकी थी और वह उसके प्रभाव से पागल सा हो उठा था। शैलजा को पाना, उसका मान-मर्दन करना ही उसके जीवन का ध्येय बन चुका था।

मध्यान्तर होने पर जब हाल पुनः प्रकाशित हो उठा तब कहीं जाकर कामेश्वर की विचार-धारा भंग हुई।

"कैसा लग रहा है पिक्चर?"

शैलजा के प्रश्न से वह चौंक सा पड़ा।

"बहुत अच्छा।" उसने धीमे स्वर में उत्तर दिया। फिर एक क्षण रुक कर बोला—"बाहर चल रही हो?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"नहीं ! तुम्हें जाना है क्या ?'

"यहाँ तो सिगरेट पी नहीं सकता।" कहकर उठ खड़ा हुआ और फिर मुस्कराने की चेष्टा करता हुआ बोला—"तुम्हारे लिए कोई कोल्ड-ड्रिंक भेज दूँ ?"

"कोल्ड-ड्रिंक्स तुम्हें ही मुबारक हों।" कहकर शैलजा हँस पड़ी।

कामेश्वर बाहर चला गया।

शैलजा उसके विषय में सोचने लगी।

शैलजा प्रकृति से उतनी स्वतंत्र नहीं थी जितनी फैशन से। स्वतंत्र होना, मित्रों के साथ हँसना-बोलना, घूमना-फिरना वह नये फैशन का एक प्रमुख अंग समझती थी। इसीलिए वह अपनी ही जिद से ऐसे कालेज में गयी थी जिसमें सहशिक्षा थी। कामेश्वर सुन्दर था, शिष्ट था, वाक्यपटु था। फलस्वरूप वह बहुत शीघ्र उसकी मित्र बन गयी थी। कामेश्वर जब प्यार की बातें करता था तब उसे बुरा लगता हो ऐसी बात नहीं थी। वह प्यार को जीवन का अनिवार्य अंग मानती थी; परन्तु उसके लिए प्यार शरीर की भूख के लिए नहीं, मन की तुष्टि के लिए था। वह 'प्लेटोनिक लव' में विश्वास करती थी। कभी-कभी जब कामेश्वर कोई अनाधिकार चेष्टा करता था तब वह क्रुद्ध होकर उसे डाँट देती थी। फिर भी वह उससे बिना मिले रह नहीं सकती थी। यही उसकी एक सबसे बड़ी दुर्बलता थी।

कामेश्वर आकर अपने स्थान पर बैठ गया। जो लोग धूम्रपान के विचार से बाहर चले गये थे वे धीरे-धीरे आने लगे। हाल की बत्तियाँ बुझ गयीं और रंगीन स्लाइडें दिखाई जाने लगीं।

"तुम्हारा नाम किसी पंडित ने बहुत सोच-समझ कर रक्खा है।" शैलजा का हाथ अपने हाथ में लेकर कामेश्वर बोला।

"अच्छा वह कैसे ?"

"तुम सचमुच पत्थर हो। कोई मरता है या जीता है, तुम्हें इसकी चिन्ता नहीं।" कामेश्वर ने भावुकता से कहा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"कौन मर गया?" शैलजा के स्वर में कृत्रिम आश्चर्य था।

"यह भी खूब रही। कोई तुम्हारे प्यार में मरा जा रहा है और तुम्हें पता ही नहीं।" कामेश्वर बोला और फिर शैलजा का हाथ तनिक जोर से दबा कर कहा—"शैल! अब मैं तुम्हारे बिना एक पल भी जिन्दा नहीं रह सकता।"

"यह तो कई बार कह चुके हो तुम।"

"मेरी बात को हँसी में न उड़ाओ, शैल। आज तुम्हारा बर्थ-डे है! क्यों न हम आज ही अपना एन्गेजमेन्ट भी अनाउन्स कर दें।" कामेश्वर के स्वर में आग्रह था।

"माई गॉड! मैंने तो कभी सोचा ही नहीं था इस बारे में। आर यू सीरियस अबाउट दिस?" शैलजा ने अपना हाथ खींच कर पूछा।

"हाँ, डियर! बोलो, मेरा प्रपोजल मंजूर है?"

"दिस इज अ सीरियस मैटर? सोचने के लिए टायम दो।" कुछ गंभीर होकर शैलजा बोली—"और फिर अभी जल्दी ही क्या है? लेट अस बी ग्रेजुयेट्स फर्स्ट।"

"ग्रेजुयेट होने में महीनों की देर है और मेरे लिए एक-एक पल भारी है।" आतुर होकर कामेश्वर ने कहा।

"बट आई मस्ट थिंक अबाउट इट। मुझे सोचने का मौका दो, कामेश्वर। मैं जल्द ही अपना जवाब दे दूँगी।"

शैलजा का वाक्य समाप्त होते ही चित्र प्रारम्भ हो गया। फिर कामेश्वर कुछ नहीं बोला।

शैलजा का मन फिर चित्र देखने में नहीं लगा। वह कामेश्वर के प्रस्ताव पर ही सोचती रही। उसने सोचा—प्रस्ताव बुरा नहीं है। कामेश्वर को वह पसन्द करती थी। उसे विश्वास था कि वह उसे सुखी और प्रसन्न रखने के लिए आकाश-पाताल एक कर देगा। तभी उसके हृदय ने शंका की। उसने कहीं पढ़ा था कि एक अच्छा प्रेमी अच्छा पति नहीं बन सकता। कामेश्वर अच्छा प्रेमी तो है पर अच्छा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पति....। और यह प्रश्न दीर्घ आकार का होकर उसकी आँखों के सामने घूमने लगा।

कामेश्वर की आँखें तो पर्दे पर थीं पर वह अपनी समस्त चेतना शैलजा के मनोभावों को पढ़ने में लगाये था। उसे यह समझने में देर नहीं लगी कि शैलजा का ध्यान चित्र ओर की नहीं है। विश्वास और आशा की लहर उसके अंग-अंग में दौड़ गयी। उसने सोचा—इस अमोघ अस्त्र की चोट शैलजा नहीं सह सकेगी। उसे झुकना पड़ेगा—बहुत शीघ्र झुकना पड़ेगा। और फिर....। एक विचित्र मुस्कान उसके अधरों पर खेल गयी।

चित्र समाप्त हो गया। हाल की तरह कामेश्वर का मस्तिष्क भी प्रकाश से पूर्ण हो उठा। उसने शैलजा की ओर देखा। शैलजा के नेत्र स्वतः झुक गये।

कामेश्वर झूम उठा। मकड़ी के रेशमी जाल में मक्खी आखिर फँस ही गयी, उसने मन-ही-मन सोचा।

कार जब फूल बाग को पीछे छोड़कर आगे बढ़ने लगी तब कामेश्वर बोला—

"मुझे घर छोड़ दो।"

"वाह! यह कैसे हो सकता है। लंच लेकर जाना।" शैलजा के स्वर में आग्रह था।

"डिनर तो तुम्हारे यहाँ लेना हीं है।"

"डिनर तो मेरे बर्थ-डे के सिलसिले में है।"

"और लंच?"

शैलजा कोई उत्तर न दे सकी। उसने अकारण ही हार्न बजा दिया।

"क्या....क्या मैं समझूँ कि मेरे सवाल का जवाब मिल गया?" कहकर कामेश्वर नें उसके कन्धे पर हाथ रख दिया।

कार सिविल लाइन्स कीं ओर मुड़ गयी।

"नहीं, अभी नहीं।" झिझकते हुये शैलजा बोली। "मुझे अच्छी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तरह सोच लेने दो। मैं बहुत जल्द ही जवाब दे दूँगी।"

"क्या मैं आशा रक्खूँ?"

"आशा पर दुनिया कायम है।" कहकर शैलजा मुस्करा पड़ी।

कामेश्वर को अपनी विजय में कोई सन्देह नहीं रह गया।

कार 'मनोहर विला' के पोर्टिको में पहुँचकर रुक गयी। चौकीदार ने द्वार खोला। दोनों उतर पड़े।

"ललित आया?" शैलजा ने चौकीदार से पूछा।

"अभी तो नहीं आये, सरकार!" हाथ जोड़कर चौकीदार बोला।

"जैसे ही आये उसे मेरे कमरे में भेज देना।" कहकर शैलजा बैग झुलाती हुई अपने कमरे की ओर बढ़ गयी।

कामेश्वर पीछे-पीछे चल दिया।

कमरे में पहुँचकर शैलजा ने बैग मेज पर पटक दिया और वह अपने गुदगुदे पलँग पर गिर सी पड़ी मानो वह बहुत—बहुत थक गयी हो। फिर वह पेट के बल लेट कर, पैर ऊँचे करके उन्हें हिलाने लगी।

कामेश्वर एक आराम कुर्सी पर बैठ गया।

"तुम्हारा यह पोज तो रीता हेवर्थ को भी मात दे रहा है।" कामेश्वर ने मीठे स्वर में कहा।

शैलजा मौन रही। हाँ, उसने कामेश्वर की ओर अजीब दृष्टि से देखा।

नारी की सबसे बड़ी दुर्बलता यही है कि वह प्रशंसा की भूखी रहती है। उसकी चापलूसी करके उससे कोई भी काम लिया जा सकता है। कामेश्वर ने इसी दुर्बलता पर आघात करने के उद्देश्य से एक क्षण बाद फिर कहा—"तुम्हारा रियल चार्म मैं आज ही देख रहा हूँ।"

शैलजा ने आँखें बन्द कर लीं।

कामेश्वर ने अपनी कुर्सी पलँग के समीप खिसका कर उसका हाथ अपने हाथ में लेते हुये कहा—"वेरी लवली! वेरी चार्मिंग!!" और फिर उसने साहस करके उसके हाथ पर अपने जलते हुये अधर रख दिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शैलजा ने चौंककर आँखें खोल दीं और अपना हाथ खींच कर बोली—"बहुत लोभी हो तुम।"

"लोभी!" आश्चर्य से कामेश्वर ने पूछा।

"हाँ। और इम्पैशन्ट भी!"

उसी समय द्वार पर कुछ आहट हुई।

शैलजा उठकर बैठ गयी।

कामेश्वर सिगरेट सुलगाने लगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

छः

रिक्शे से उतरकर जैसे ही ललित कोठी के अन्दर पहुँचा वैसे ही चौकीदार ने आगे बढ़कर उसे शैलजा का आदेश सुना दिया। वह तत्काल ही शैलजा के कमरे की ओर बढ़ा। कमरे के द्वार पर पर्दा पड़ा था। पल भर के लिए वह ठिठका, फिर खांसकर पर्दा हटाया और अन्दर चला गया। शैलजा पलँग पर बैठी रही और समीप ही कुर्सी पर एक नवयुवक बैठा हुआ दीखा वह सिगरेट पी रहा था। ललित तुरन्त समझ गया कि कामेश्वर ही हो सकता है।

"बहुत बदतमीज हो तुम।" शैलजा का तेज स्वर ललित के कानों में गर्म सीसे की तरह उतरता चला गया। "आवाज देकर क्यों नहीं आये।"

ललित अपमान से तिलमिला उठा। इस प्रकार की बातें सुनने का वह अभ्यस्त नहीं था। शैलजा मालिक की बेटी है पर इसका यह अर्थ नहीं कि वह गाली दे, अपमान करे। आखिर नौकर भी मनुष्य ही होते हैं और उनसे भी बात तरीके से ही करनी चाहिए। ललित की इच्छा हुई कि वह लिस्ट फर्श पर पटक कर और ईंट का जवाब पत्थर से देकर तुरन्त बाहर चला जाये परन्तु तभी पत्नी की करुण आखों, बच्चों की मौन आकृतियों और बहन के उदास चेहरे ने उसके हाथों में ताला जड़ दिया;

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसके अधरों को सी दिया। नौकरी छूट जाने के बाद बाल-बच्चों की जो दशा होगी उसकी कल्पना से ही वह काँप उठा। खून का घूँट पीकर वह दृष्टि नीची करके बोला:—

"जी मुझे मालूम नहीं.....।"

"बकवास बन्द करो अब! कार्ड बाँट आये?"

"जी हाँ!" ललित का सिर झुका ही रहा।

"सब?"

शैलजा का आशय समझ कर ललित ने सिर हिला दिया।

"सब लोग आयेंगे?" शैलजा ने गूढ़ दृष्टि से ललित की ओर देखकर प्रश्न किया।

ललित ने फिर सिर हिला दिया।

"जाओ। मगर याद रखना अगर सब लोग न आये तो तुम्हें नौकरी से हाथ धोने पड़ेंगे। नाउ गेट आउट।" शैलजा तीव्र स्वर में आदेश देकर फिर लेट गयी।

नाउ गेट आउट! ललित के गाल पर तमाचा सा पड़ा! 'समझ क्या रक्खा है अपने को छोकरी ने' वह मन में भुनभुनाया और फिर सिर नीचा करके बाहर आ गया।

गैलरी में पहुँचते ही शैलजा और कामेश्वर की हँसी की आवाज उसके कानों में पड़ी। वह तेज गति से रायबहादुर के कमरे की ओर बढ़ा।

रायबहादुर के कमरे का द्वार खुला था। ललित को देखते ही उन्होंने उसे अन्दर बुला लिया।

"कार्ड बाँट आये?" उन्होंने पूछा।

"जी हाँ।" धीमे स्वर में ललित ने उत्तर दिया और फिर जेब से बचे हुये आठ रुपये निकालकर उनकी ओर बढ़ा कर कहा, "जी, आठ रुपये बचे हैं।"

"अभी रक्खे रहो।"

ललित ने रुपये जेब में रख लिये। लिस्ट मेज पर रख कर वह द्वार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की ओर बढ़ा।

"सुनो।" रायबहादुर की आवाज सुनकर वह रुक गया और उनके पास जाकर सिर झुकाकर खड़ा हो गया।

"शैलजा की बातों का बुरा न मानना, ललित !" रायबहादुर धीमे स्वर में बोले। "उसकी आदत ही ऐसी है ?"

"जी.....।" ललित हकलाया ।

"मुझे शकुन ने सब कुछ बता दिया है। बस, यही कहना था। अब जाओ ! और हाँ, दो-तीन बजे तक आ जाना। सब प्रबन्ध तुम्हीं लोगों को करना है ।"

"जी।" कहकर ललित बाहर आ गया।

उसे शकुन पर क्रोध आ रहा था। भला इसमें रायबहादुर से कहने की क्या बात थी ! शैलजा को मालूम होगा तो वह यही समझेगी कि उसी ने शिकायत की है। अभी नाराज रहती है, तब तो और भी आग बबूला हो जायेगी। उसके मस्तिष्क में विचार आ-जा रहे थे। उसके पैर स्वतः शकुन के कमरे की ओर मुड़ गये। शकुन के द्वार पर पहुँच कर उसे होश आया।

द्वार बन्द था। कम्पित हाथ से उसने दस्तक दी ।

"कौन है ?" अन्दर से शकुन का स्वर आया।

"मैं हूँ, ललित।" ललित का स्वर काँप रहा था।

"आ जाओ ।"

द्वार खोलकर ललित अन्दर चला गया ।

कमरे में फरनीचर वैसा ही था जैसा शैलजा के कमरे में था। पर इस कमरे में हर चीज व्यवस्थित ढंग से रक्खी थी जब कि शैलजा के कमरे में चीजें इधर-उधर बिखरी पड़ी थीं। यह कमरा स्वच्छ था; शैलजा का कमरा गन्दा था। दोनों के कमरों से कोई भी दोनों बहनों के स्वभाव का अनुमान लगा सकता था। शैलजा का कमरा तो ललित को ऐसा लगा था मानो उसमें मनुष्य नहीं बन्दर रहता हो ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शकुन आराम कुर्सी पर लेटी कोई पुस्तक पढ़ रही थी। जैसे ही ललित अन्दर पहुँचा, उसने पुस्तक मेज पर रख दी और उठकर सहज स्वर में बोली :—

"आओ, बैठो!"

"मैं बैठने नहीं आया हूँ।"

"तो फिर खड़े रहो।" शकुन ने मुस्करा कर कहा।

"मैं यह पूछने आया हूँ कि तुमने बाबूजी से शैलजा की शिकायत क्यों की?" ललित का स्वर रूखा था।

"और मैं यह पूछना चाहती हूँ कि तुम्हारे प्रश्न का उत्तर देना क्या मेरे लिए अनिवार्य है?" शकुन हँस रही थी।

शकुन की हँसी से ललित चिढ़ गया।

"तुम हँस रही हो और मेरी जान निकली जा रही है।" वह बोला। "तुम दोनों के बीच में मैं एक दिन निश्चय ही उसी तरह पिस जाऊँगा जैसे चक्की के पाटों के बीच में बिचारा गेहूँ का दाना पिस जाता है।"

शकुन को तुलना कुछ बुरी नहीं लगी। कुर्सी पर बैठती हुई बोली :—

"बैठ जाओ। काफी थके हुये मालूम पड़ते हो।"

ललित आज्ञाकारी बालक की भांति बैठ गया।

"तो हम दोनों को पत्थर के टुकड़े समझते हो तुम?" शकुन ने मुस्करा कर पूछा।

"मेरा.... मेरा मतलब यह नहीं था।" ललित हकला कर बोला। "मगर सोचो तो कि तुम दोनों की नोंक-झोंक में मेरा क्या हाल होगा। अगर नौकरी से निकाल दिया गया तो....।" और उसने अपना वाक्य अपूर्ण ही छोड़ दिया।

"जब तक काम ठीक से करते रहोगे तब तक नौकरी छूटने का प्रश्न ही नहीं है। हाँ, अगर काम में असावधानी करोगे तब दूसरी बात है।" शकुन ने इस ढंग से कहा कि मानो वही रायबहादुर हो।

ललित को हँसी आ गयी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"चलो क्रोध के बादल हटे तो।" कहकर शकुन खिलाखिला कर हँस पड़ी।

"लेकिन तुम्हें बाबू जी से शिकायत नहीं करनी चाहिए थी।" ललित ने एक क्षण बाद फिर कहा। "नौकरी में मानापमान तो होता ही रहता है। और फिर जितना अपमान छोटी बहन करती है उससे कहीं अधिक मान बड़ी बहन से मिल जाता है।"

शकुन कुछ बोली नहीं; उसकी ओर केवल देखती रही।

"अब चलता हूँ। खा-पीकर फिर आना है।" कहकर ललित खडा हो गया।

"दोपहर में इतनी दूर घर जाओगे और थोड़ी देर बाद फिर आओगे! यहीं क्यों नहीं खा लेते? मैंने भी अभी नहीं खाया है।" शकुन के स्वर में आग्रह था।

"अत्यधिक मान कभी-कभी अपमान का कारण भी हो जाता है।"

"क्या मतलब?" शकुन उठकर खड़ी हो गयी।

"छोड़ो भी! मैं घर जा रहा हूँ।" कहकर ललित द्वार की ओर बढ़ा।

"तुम्हारी इच्छा। मगर हाँ, सरला से शाम को आने के लिए कह देना।" शकुन ने आगे बढ़कर कहा।

ललित रुक गया। मुड़कर बोला:—

"क्या सरला का लाना जरूरी है?"

"मेरी इच्छा है उससे मिलने की।" शकुन बोली।

"कभी और मिल सकती हो।"

"आज क्या बाधा है?" शकुन ने उत्सुकता से पूछा।

"बात यह है कि सरला सीधी-सादी लड़की है। बड़े आदमियों के तौर-तरीकों से एकदम अपरिचित। यहाँ के वातावरण में वह शायद खुलकर साँस भी न ले सकेगी।" ललित ने साफ बात कहना ही उचित समझा। शकुन से कोई भेद-भाव तो था नहीं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"तुम लाना तो! एक मिनट में ही वह अभ्यस्त हो जायेगी। तुम नहीं जानते कि नारी में परिस्थितियों के अनुसार अपने को परिवर्तित करने की कितनी अद्भुत क्षमता होती है।" शकुन ने आग्रह भरे स्वर में कहा।

"और कहीं उसकी हँसी हुई तो? अगर शैलजा ने उसका अपमान किया तो? मैं अपना अपमान सह सकता हूँ पर उसका नहीं।" ललित को वास्तव में डर भी यही था। शैलजा मुंहफट लड़की थी और उसके लिए ऐसी-वैसी बात मुंह से निकाल देना कोई असम्भव बात नहीं थी।

शकुन भी इस सम्भावना के प्रति अन्धी नहीं थी, किन्तु वह जानती थी कि यदि वह सदैव सरला के साथ रहेगी तो कोई भी अप्रिय घटना न घट सकेगी।

"सरला का अपमान मेरा अपमान होगा। इससे अधिक और क्या आश्वासन दे सकती हूँ मैं!" कहकर शकुन अपने दोनों हाथ मलने लगी।

ललित ने शकुन की ओर देखा। शकुन के दृगों की कोर कुछ भीगी सी लगीं।

"इससे बड़ा आश्वासन और हो ही क्या सकता है?" ललित शकुन की ओर बढ़ कर बोला। "सरला अवश्य आयेगी। मगर एक मुश्किल है। मैं तो खा-पीकर अभी चला आऊँगा। फिर शाम को घर जाने का अवकाश मिले, न मिले। वह किसके साथ आयेगी शाम को?"

शकुन के लिए यह समस्या साधारण थी। तत्काल ही बोली:—

"तुम सरला से तैयार रहने के लिए कह आना। शाम को कार भेज दूँगी। उसी पर चली आयेगी।"

"अकेली?"

"क्या हुआ? मुन्ना को साथ ले लेगी।" शकुन बोली।

ललित चिन्ता में पड़ गया। उसके संस्कार शंकायें उठा रहे थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"कोई बात नहीं," शकुन उसकी परेशानी समझ कर बोली। "तुम चिन्ता न करो। मैं स्वयं जाकर ले आऊँगी। बस, अब तो ठीक है ?"

"तुम जाओगी ?" आश्चर्य भरे स्वर में ललित ने पूछा।

"क्या हुआ ! इसी बहाने तुम्हारी श्रीमती जी के भी दर्शन हो जायेंगे।" कहकर शकुन मुस्कराने लगी।

उस मुस्कान के अंचल में छिपी अनन्त पीड़ायें ललित की तीव्र दृष्टि से छिपी न रह सकीं। किसी अज्ञात वेदना से उसका भी मन भारी हो गया। वह उसी प्रकार मूर्तिवत खड़ा रहा।

ललित को देखकर शकुन धीमे स्वर में बोली :—

"कोई आपत्ति है तुम्हें ?"

"आपत्ति !" चौंककर ललित बोला। "नहीं, नहीं ! मैं कह दूँगा सरला से।" कहकर वह तीव्र गति से बाहर निकल गया।

गैलरी में पहुँचकर उसने आँसू की बूँदों को कमीज के कफ से पोंछ डाला।

अन्दर शकुन के मुख से एक दीर्घ निःश्वास निकल गया। अतीत की स्मृतियाँ जाग गयीं थीं। वह तकिये में मुंह छिपा कर पलंग पर लेट गयी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सात

सबेरे से ही मुन्नी को ज्वर था। वह वैसे ही दुर्बल थी; ज्वर ने और भी तोड़ दिया था। दया उसे लिए हुये कमरे में लेटी थी। मुन्ना खा-पी कर बाहर खेलने चला गया था। घर में एक दम सन्नाटा था।

बरामदे में कोयले की काली लकीर से घिरा हुआ छोटा से चौका था। चूल्हे के पास ही बैठी हुई सरला रात की समस्या पर सोच रही थी। रात की चिन्ता और जागरण के चिन्ह उसके मुख और नेत्रों में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे।

आँगन में एक कुत्ता घुस आया। सरला चौंक पड़ी। 'हट' उसके मुख से जोर से निकल गया। कुत्ता भाग गया।

"क्या है, सरला?" दया ने कमरे के अन्दर से पूछा।

"कुछ नहीं, भाभी! कुत्ता था।" कहकर सरला ने सजग होकर अपने चारों ओर देखा। धूप काफी चढ़ आयी थी। सरला ने अनुमान लगाया कि बारह से कम का समय नहीं है।

"भैया तो न जाने कब तब आयेंगे। तुम तब तक खा लो, भाभी!" सरला ने पुकारा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"मुझे भूख नहीं है अभी। तुम रोटी सेंक कर रख दो। कब तक आटा लिए बैठी रहोगी।" दया ने उत्तर दिया।

"सेंक लूंगी। अभी जल्दी क्या है!" कहकर सरला मौन हो गयी। वह जानती थी कि ललित को ठंडी रोटी अच्छी नहीं लगती।

"तो तुम तो खालो। सवेरे से लंघन किये बैठी हो।" दया ने कुछ देर रुककर कहा। "मैं आकर सेंके देती हूँ।"

"तुम मुन्नी के पास ही रहो, भाभी! मुझे भी अभी भूख नहीं लगी है। भैया भी आते ही होंगे।" सरला बोली।

दया जानती थी कि सरला के मुख से जो बात एक बार निकल गयी वह पत्थर की लकीर हो जाती है। इसलिए वह मौन हो गयी। फिर उसने जोर नहीं दिया।

सरला की थकान उसकी सजगता पर विजयी हो गयी। उसकी आँखें झपकने लगीं। दीवार का सहारा लेकर वह ऊँघने लगी।

ललित जब घर पहुँचा तो उसने सरला को चौके में सोते हुये पाया। दबे पाँव वह कमरे में गया। मुन्नी को पास लिटाकर दया भी ऊँघ गयी थी। उसे हँसी आ गयी।

हँसी का स्वर सुनकर सरला और दया दोनों चौंक पड़ीं। दया हड़बड़ा कर उठ बैठी। सरला ने हुरसा-बेलन सँभाला।

"तुम लोग रात में तो जागती हो और दिन में सोती हो।" हँसकर ललित बोला। "अगर कोई घुस आता तो?"

"घर में ऐसी कौन सी सम्पदा रक्खी है जिसे ले जाता।" दया ने चिढ़कर कहा और फिर वह मुन्नी को थपथपाने लगी।

"हमारे लिए ये दो-चार बर्तन ही कुबेर का कोष हैं। अगर इन्हीं को उठा ले जाता तो हमें करपात्री बनना पड़ता।" कहकर ललित नल के पास जाकर हाथ-मुंह धोने लगा।

सरला चूल्हा फूंकने लगी। गीली लकड़ी का कड़वा धुंआ उसकी आँखों में आँसू ले आया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"धुंआ के मारे तो नाक में दम है।" बरामदे में बैठकर ललित बोला।

"अभी कम हो जायेगा।" कहकर सरला और जोर से चूल्हा फूंकने लगी।

"यह धुंआ कम होने वाला नहीं है, सरला। कन्ट्रोल की लकड़ियाँ गीली होती ही हैं और गीली लकड़ियों की रग-रग में धुंआ उसी प्रकार समाया होता है जैसे हम बेबसों के जीवन में पीड़ा और आँसू।"

ललित की बात ने सरला के मन को कचोट लिया। उसने संघर्ष की आड़ी-तिरछी रेखाओं से युक्त ललित के मुख की ओर देखा और फिर वह दृष्टि नीची करके थाली परोसने लगी।

भोजन के बाद ललित ने सरला से कहा :—

"शकुन ने तुम्हें भी बुलाया है।"

"मुझे ?" चौंककर सरला बोली। वेदना और बेबसी के चिन्ह उसके मलीन मुख पर उभर आये। 'लेकिन. . . . लेकिन मैं कैसे जा सकती हूँ ?"

"मैंने कहा तो था मगर शकुन मानती ही नहीं। मुन्ना को भी तैयार कर लेना। शकुन शाम को तुम्हें लेने आयेगी।" ललित ने कहा और फिर वह कमरे के अन्दर चला गया।

सरला सोच में पड़ गयी। साड़ी तो दूर, उसके पास कोई साफ इकलाई भी नहीं थी जिसे पहन कर वह वहाँ जा सकती।

तभी भाभी का स्वर उसके कानों में पड़ा। दया ललित से कह रही थी :—"तुम्हारी समझ को न जाने क्या होता जा रहा है। शकुन से कह तो दिया है सरला को ले जाने के लिए, मगर यह भी सोचा है कि वह क्या पहनकर जायेगी !"

ललित मौन रहा।

"साल-दो साल से कभी कोई अच्छी इकलाई भी लाये हो घर में ?" दया के स्वर में स्वाभाविक असन्तोष की झलक आ गयी।

"घर में इकलाई नहीं लाया तो मैंने ही कौन सूट बनवा लिये हैं ?" चिढ़कर ललित बोला और फिर जूते पहनकर आँगन में आ गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सरला सिर नीचा किये रोटी बेल रही थी। ललित ने देखा कि जो धोती वह पहने है वह गन्दी और फटी है। अपनी सीमाओं पर क्रोध आ गया उसे। फिर संयत होकर गंभीर स्वर में बोला:—

"सरला! मनुष्य का मान वस्त्रों से नहीं, उसके गुणों से होता है। पिताजी भी यही कहते थे और मैं भी यही कहता हूँ।"

सरला कुछ बोली नहीं। उसने ललित की ओर देखा भी नहीं। वह उसी प्रकार रोटी बेलती रही।

ललित बाहर चला गया।

"पहले कपड़े देखे जाते हैं और बाद में गुण।" कहती हुई दया बरामदे में आ गयी। जब उसने देखा कि ललित चला गया है तब सरला से बोली:—

"सरला! अगर जाना है तो ढंग से जाना नहीं तो जाने की कोई जरूरत नहीं है। वे समझते हैं कि जैसे हम फटा-पुराना पहन कर सब जगह घूमते-फिरते हैं वैसे ही औरतें भी कर सकती हैं।"

"जैसा तुम कहोगी वैसा ही करूँगी मैं।" रोटी तवे पर डालती हुई सरला धीमे स्वर में बोली।

"मैं जाती हूँ परोस में। अगर कोई अच्छी साड़ी और ब्लाउज माँगे से मिल गया तो ठीक है।" कहकर दया द्वार की ओर अग्रसर हुई।

"मगर भैया नाराज होंगे।"

"होने दो! दुनिया भर के लोग होंगे वहाँ। फटा-पुराना पहनकर जाना ठीक नहीं।" कहकर वह बाहर चली गयी।

सरला सोचने लगी। भाभी ठीक कहती हैं। संसार पहले तो मनुष्य के वस्त्र ही देखता है; बाद में गुणों की बारी आती है। आज के युग में अच्छा मनुष्य वही है जिसके पास समाज में घुलने-मिलने के लिए अच्छे वस्त्र हैं। गुदड़ी में छिपे लाल पर भी आजकल किसी की दृष्टि नहीं जाती।

तभी उसे मुन्ना का ध्यान आ गया। भैया मुन्ना को भी ले जाने के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लिए कह गये हैं। उसके लिए भी नेकर और कमीज धोनी पड़ेगी; जूतों पर खड़िया लगानी पड़ेगी।

मुन्ना के जूतों के बाद उसे अपनी फटी चप्पल का ध्यान आया। भाभी साड़ी-ब्लाउज ले भी आयीं तो सैन्डिल कहाँ से आयेगी। फटी चप्पल पहनकर जाना तो ठीक नहीं।

उसी समय रोता हुआ मुन्ना घर आया।

"क्या हुआ ?" सरला ने पूछा।

"राम ने मुझे मारा है, बुआ।" सिसकते हुये मुन्ना ने बताया।

"तू उसके साथ न खेला कर। अब चुप हो जा। बड़ा राजा बेटा है तू। और देख, शाम को मैं तुझे घुमाने ले चलूँगी।"

"सच! कहाँ ?" रोना बन्द करके मुन्ना ने उत्सुक स्वर में पूछा।

"बहुत अच्छी जगह। वहाँ मेला होगा। खूब राशनी होगी।"

"और अच्छी-अच्छी चीजें खाने को मिलेंगी ?"

"हाँ! अब जाकर मुन्नी के पास बैठ जा।"

मुन्ना कमरे में चला गया।

बाहर से दया आयी। उसके अधरों पर मुस्कान थी और बगल में रेशमी साड़ी और ब्लाउज।

"मिल गयी ?" सरला ने पूछा।

"अब जाना तुम। अपने हाथ से सजाकर भेजूँगी तुम्हें। जरा वे लोग भी देख लें कि सुन्दरता महलों में ही नहीं, झोपड़ी में भी होती है।" कहकर दया खिलखिलाकर हँस पड़ी।

सरला के कपोलों पर लज्जा की गुलाबी कूची फिर गयी।

"बहुत वैसी हो तुम, भाभी।" उसने अपनी धोती का छोर उँगलियों में फँसाते हुये कहा।

"जानती हो क्या बहाना करके लायी हूँ ?"

"मैं क्या जानूँ ?"

"मैंने कहा सरला की बात तय हो रही है। उसके देखने वाले आ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रहे हैं।" दया ने मुस्कराते हुये कहा।

दया की बात सुनकर उसे लज्जा नहीं आयी और न उसके मन में गुदगुदी ही हुई। एक तरल पीड़ा ने उसके तन-मन को भिगो दिया; एक कसक सी उसके प्राणों में अँगड़ाई ले उठी।

"तुम्हें ऐसा सफेद झूठ नहीं बोलना चाहिए था, भाभी।" उसके मुख से निकल गया।

"इसमें झूठ क्या है? तमाम लोग आयेंगे वहाँ। हो सकता है किसी की आँखों में समा जाओ और वह तुम्हें तुम्हारे भैया से हमेशा के लिए माँग बैठे।" दया ने कहा और फिर वह कमरे में चली गयी।

सरला के मन में आया कि वह जाने के लिए मना कर दे। भाभी उसे बना-सँवार कर इसलिए भेजना चाहती हैं कि कोई उसे पसन्द कर ले और.......! नहीं, यह ठीक नहीं है...यह ठीक नहीं है।

"यह लो। मैं सैन्डिल के लिए तो भूल ही गयी।" कहते हुये दया फिर बाहर निकल आयी। "अभी लाती हूँ। मालती की सैन्डिल एकदम फिट आयेगी तुम्हारे।"

इससे पहले कि सरला कुछ कह सके, दया बाहर चली गयी।

"हम भी अच्छे-अच्छे कपड़े पहनेंगे, बुआ।" कहता हुआ मुन्ना भी बाहर आ गया।

"हाँ, हाँ बेटा! तुम भी पहनना," कहकर सरला चौके के बाहर आ गयी।

× × ×

शाम को जब शकुन ने ललित के घर का द्वार खटखटाया तब सरला तैयार हो चुकी थी। उसी ने द्वार खोला। शकुन सरला को रेशमी साड़ी और ब्लाउज में देखकर चौंक पड़ी। उसे लगा, सरला सुन्दर ही नहीं, बहुत सुन्दर है। वास्तव में वह उस समय लग भी बहुत सुन्दर रही थी। श्रृंगार ने सरल मूक सौन्दर्य को जैसे वाणी दे दी हो।

सरला ने शकुन को ले जाकर कमरे में बिठाया। दया भी वहीं थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसने हाथ जोड़कर शकुन से नमस्ते की। शकुन ने भी हाथ जोड़ दिये।

शकुन ने दया को ध्यान से देखा। वह घर की धुली साधारण धोती में भी आकर्षक लग रही थी। गृहस्थी की चक्की में पिसकर और अभावों के कठोर थपेड़ों को सहकर भी वह पराजित नहीं हुई थी मस्तक पर चिन्ता की रेखायें होते हुये भी उसके अधरों पर मुस्कान थी, नयनों में उत्साह की ज्योति थी।

"बहुत दिनों से आपसे मिलने को जी करता था पर कभी आ ही न सकी। आज जाकर कहीं भेंट हो सकी।" शकुन ने दया से कहा।

"हमारे अहोभाग्य जो आपने दर्शन दिये।" दया ने गंभीरता से कहा और फिर एक क्षण रुककर बोली, "हमारी कुटिया पवित्र हो गयी।"

"कैसी बातें करती हो बहन!" कहकर शकुन रुक गयी। उसकी समझ में न आया कि आगे क्या कहे।

तभी बाहर से मुन्ना आ गया। वह साफ नेकर और कमीज पहने था।

"कहाँ चला गया था तू? बुआ जी को नमस्ते कर।" दया डाँटकर बोली।

मुन्ना ने सहम कर हाथ जोड़ दिये।

बुआजी शब्द सुनकर शकुन की छाती पर भारी घूँसा सा पड़ा। बहुत प्रयत्न करने के बाद वह अपने निःश्वास को रोक सकी।

"सरला की बात कहीं तय हुई?" शकुन ने दया से पूछा।

सरला लजाकर बाहर चली गयी।

"अभी कहाँ तय हुई है।" दया दुखी स्वर में बोली। "कई जगह बात चलायी पर वे हजारों का दहेज चाहते हैं। दहेज देने के लिए हम रुपया कहाँ से लायें!"

शकुन को ललित पर क्रोध आ गया। ललित उससे झूठ बोला था।

"आप की नजर में कोई ऐसा लड़का हो जो रुपया-पैसा न देखकर अच्छी लड़की चाहता हो तो बताना।" दया बोली।

"हुँ, बताऊँगी; जरूर बताऊँगी।" शकुन ने चौंककर कहा। एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्षण रुककर फिर बोली—"अच्छा, अब चलती हूँ। फिर कभी आऊँगी।" फिर मुन्ना कि उँगली पकड़कर उठते हुये कहा—"हमारे घर चलोगे, मुन्ना ?"

"हाँ! हम तो बहुत देर से तैयार हैं।"

"बहुत दुष्ट हो गया है तू।" दया ने फिर डाँटा।

"क्यों डाँट रही हैं उसे ? बहुत प्यारा बच्चा है!" शकुन ने स्नेह से कहा। फिर सोती हुई मुन्नी की ओर देखकर बोली—"मुन्नी सो रही है। नहीं तो उसे गोद में लेकर खिलाती।"

"आज सबेरे से हरारत है उसे।" दया ने बताया।

शकुन ने मुन्नी की नाड़ी देखकर कहा—"इस समय तो कम है। दवा दे रही हो ?"

"मोहल्ले में एक वैद्य जी हैं। उन्हीं की दवा दे रही हूँ।" कहकर दया भी खड़ी हो गयी।

शकुन मुन्ना की उँगली पकड़े हुये बरामदे में आ गया। सरला आँगन में टहल रही थी।

"चलो, सरला।" कहकर शकुन द्वार की ओर बढ़ गयी।

सरला और मुन्नाके जानेके बाद दयाने द्वार अन्दर से बन्द कर लिया।

गली के बाहर कार खड़ी थी। कार का द्वार खोलकर शकुन ने मीठे स्वर में सरला से कहा—"बैठो।"

सरला बैठ गयी। मुन्ना भी बैठ गया। वह बहुत प्रसन्न था।

"ड्राइवर नहीं लाई क्या ?" ड्राइवर न देखकर सरला ने धीमे और संकुचित स्वर में पूछा।

"मैं स्वयं ड्राइवर हूँ।" कहकर शकुन हँस पड़ी।

कार तीव्र गति से 'मनोहर-विला' की ओर दौड़ने लगी।

मुन्ना प्रसन्न होकर तालियाँ बजाने लगा।

सरला को लगा, जैसे वह हवा में उड़ी जा रही है, उड़ी जा रही है धरती से दूर, सितारों की ओर!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आठ

कमल के अतिरिक्त अन्य आमंत्रित कवि-गण समय से पहले ही आ गये। सभी बन सँवर कर आये थे। रायबहादुर मनोहरलाल ने सबका स्वागत हाथ जोड़ कर किया। कामेश्वर भी समय से पहले ही आ गया। बाबू श्यामसुन्दर उसके साथ थे। शैलजा ने उनका परिचय रायबहादुर से कराया। कामेश्वर शैलजा के साथ दूसरी ओर चला गया। बाबू श्यामसुन्दर रायबहादुर से बातें करते रहे।

धीरे-धीरे रायबहादुर की मित्र-मंडली भी आ गयी। उस मित्र-मंडली में डाक्टर, वकील तथा पूँजीपतियों के अतिरिक्त नगर के उच्चाधिकारी भी थे। उनके बचपन के मित्र प्रोफेसर इन्द्र भी आ गये। वे एक स्थानीय कालेज में हिन्दी के प्रोफेसर थे और समालोचक के रूप में हिन्दी-साहित्य में अपना स्थान भी बना चुके थे।

शैलजा की आँखें फाटक की ओर लगी थीं। वह बात तो कर रही थी कामेश्वर से पर उसका हृदय प्रतीक्षा कर रहा था कमल की। क्या कमल नहीं आयेगा? पर ललित तो कहता था कि वह अवश्य आयेगा। क्यों नहीं आया अभी तक? क्या बात हो गयी? शैलजा झुंझला पड़ी। उसने सोचा कि यदि कमल नहीं आयेगा तो वह कल ही ललित को नौकरी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से जवाब दिलवा देगी।

"यू आर लुकिंग लायक अ फेरी फ्रॉम सम डिस्टैन्ट फेरीलैन्ड।" शैलजा को अनमनी देखकर कामेश्वर ने उसे प्रसन्न करने के उद्देश्य से कहा।

"सच? क्या मैं परी लग रही हूँ?" शैलजा ने पूछा, किन्तु उसकी दृष्टि फाटक की ही ओर रही।

"अगर मुझे झूठा समझती हो तो शीशा देख लो। मिरर्स नेवर टेल अ लाई।" कामेश्वर ने मुस्करा कर उत्तर दिया।

शैलजा मौन रही। उसकी व्याकुलता बढ़ती जा रही थी।

"मीना, लीला, कम्मो, निम्मी, शीला सभी तो आ गयी हैं। फिर इस बेचैनी से किसका इन्तजार है?" कामेश्वर अन्त में पूछ ही बैठा।

"इन्तजार! किसी का भी तो नहीं।" चौंककर शैलजा बोली। "सिसी न जाने कहाँ चली गयी हैं। उन्हीं की राह देख रही हूँ।"

कामेश्वर को शैलजा का यह असत्य भी सत्य लगा। उसने खुलकर साँस ली।

तभी एक फाटक से कमल और दूसरे से शकुन की कार ने प्रवेश किया। शैलजा का मुख कमल की तरह खिल पड़ा।

कमल साधारण धोती-कुर्त्ता पहने था। पैरों में फटी चप्पल थी जो धूल से सनी थी। शैलजा तेजी से उसकी ओर बढ़ी। कामेश्वर ने एक बार कमल की ओर देखा और फिर कार से उतरती हुई सरला को। शकुन से अभिवादन करके वह तेजी से शैलजा की ओर बढ़ गया।

"मेरे अहोभाग्य जो आपने आने की कृपा की। मैं तो निराश हो गयी थी।" शैलजा ने हाथ जोड़कर अभिवादन करने के बाद कमल से सहज स्वर में कहा।

"वचन देकर उसे पूरा न करने का अभ्यस्त मैं नहीं हूँ।" कहकर कमल उस ओर बढ़ने को अग्रसर हुआ जिधर अन्य कविगण खड़े थे।

उसी समय कामेश्वर आ पहुँचा।

"रुकिये तो।" शैलजा के मुख से निकल गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कमल के उठते हुये पैर रुक गये।

"इनसे आपका परिचय करा दूँ। यह हैं मेरे सहपाठी मिस्टर कामेश्वर और आप हैं हिन्दी के सुप्रसिद्ध तरुण कवि श्री कमल जी। बहुत पीड़ा रहती है आपके गीतों में।"

"अच्छा!" कामेश्वर ने अजीब मुद्रा में कहा। "निराश प्रेमी मालूम होते हैं आप।"

कामेश्वर की बात ने कमल की नस-नस में पिघली आग भर दी। वह रूखे और तेज स्वर में बोला :—

"कुछ पीड़ायें ऐसी होती हैं जिनकी तीव्रता की तुलना में प्यार की पीड़ा कुछ भी नहीं। पर...पर आपका कदाचित प्यार की पीड़ा के अतिरिक्त अन्य किसी पीड़ा से परिचय है ही नहीं।"

क्रोध से कामेश्वर का चेहरा लाल हो गया। अपमान से तिलमिला कर वह कुछ कहना ही चाहता था कि शैलजा बीच में बोल पड़ी :—

"कमल जी ठीक कहते हैं।"

"आप कदाचित मेरी बात का बुरा मान गये हैं, कामेश्वर जी! मेरा उद्देश्य व्यक्तिगत आक्षेप का नहीं था। मेरा तात्पर्य तो आपके वर्ग के सभी लोगों से था। प्यार की पीड़ा आप लोग ही मोल ले सकते हैं। हम लोगों के लिए प्यार अधिकार नहीं, पावन कर्तव्य है और कर्तव्य-पालन से पीड़ा नहीं, शान्ति मिलती है।" कहकर कमल तीव्र गति से अन्य कवियों की ओर बढ़ गया।

"सनकी मालूम होता है।" कामेश्वर बड़बड़ाया।

शैलजा ने सुनकर भी नहीं सुना।

"हाफ मैड।" कामेश्वर फिर बुदबुदाया।

कामेश्वर को अकेला छोड़कर शैलजा उस ओर बढ़ गयी जिधर शकुन के साथ सरला खड़ी थी।

"यह कौन है?" शैलजा ने शकुन से सरला के विषय में पूछा। उसने न तो कभी सरला को देखा ही था और न उसे यह ही ज्ञात

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

था कि शकुन ललित की बहन को लेने गयी थीं।

"मेरी सहेली हैं।" शकुन ने संक्षिप्त सा उत्तर दे दिया और फिर सरला से बोली—"यह मेरी छोटी बहन शैल है। इसी का जन्म-दिन है आज।

सरला ने हाथ जोड़कर अभिवादन किया, किन्तु शैलजा बिना उत्तर दिये ही आगे बढ़ गयी।

सरला को बहुत अटपटा सा लगा। उसके मन का भाव समझ कर शकुन ने कहा—"शैल की किसी बात का बुरा न मानना। उसका स्वभाव ही ऐसा है।

सरला मौन रही। उसे चहल-पहल पूर्ण उस वातावरण में अजीब सा लग रहा था। हर ओर लोग हँस रहे थे, बोल रहे थे। जिधर उसकी दृष्टि जाती थी उधर उल्लास और उत्साह दिखाई देता था। उल्लास और उत्साह के उन हल्के-फुल्के क्षणों के साथ अपना सामंजस्य करने में वह अपने को एकदम असमर्थ पाती थी। यद्यपि उसके वस्त्र बुरे नहीं थे तद्यपि वह अपने हृदय में हीन-भाव पा रही थी। शकुन के अतिरिक्त वहाँ और कोई भी तो ऐसा नहीं था जिससे वह बातें कर सकती। वह अनुभव कर रही थी कि उसने वहाँ आकर भूल की है—बहुत भारी भूल की है। उसके लिए खुलकर साँस लेना भी कठिन हो रहा था।

बच्चों का संसार निराला ही होता है। वहाँ न कोई छोटा होता है न बड़ा। जहाँ सरला अपने को उस समाज के सर्वथा अनुपयुक्त पाती थी वहीं मुन्ना पल भर में ही अपने समवयस्क बच्चों में घुल-मिल गया था। सरला की भांति उसके हृदय में कोई हीन भाव न था। वह बच्चों के साथ हँस रहा था, खेल रहा था।

धीरे-धीरे लोग बड़े हाल में एकत्रित होने लगे। वहीं एक बड़ी मेज पर बर्थ-डे केक सजाकर रक्खा गया था। उसके आसपास अठारह बड़ी मोमबत्तियाँ चाँदी के पात्रों में जल रही थीं। हर्ष पूर्ण करतल ध्वनि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एवं बधाइयों के मध्य शैलजा ने धीरे-धीरे सभी मोमबत्तियां बुझा दीं और फिर मुस्कराते हुये उसने केक काटा। हाल हँसी-कहकहों से गूँज उठा।

कुछ लोगों ने उपहार दिये जिन्हें शैलजा ने सधन्यवाद स्वीकार किया। वह उपहार ले-लेकर मेज पर रखती जाती थी। उसकी दृष्टि कमल को खोज रही थी पर हाल में उसे कहीं भी कमल न दिखाई दिया। उसका मुख मलीन हो गया।

कामेश्वर उसके पास ही खड़ा था। उसे समझते देर न लगी कि शैलजा की दृष्टि किसे खोज रही है। ईर्ष्या से उसका चेहरा विकृत हो उठा। शैलजा की दृष्टि बचा कर वह हाल के बाहर आ गया। उसने देखा, कमल लान में अकेले ही टहल रहा है। उसके पूरे पागल होने में कामेश्वर को अब कोई सन्देह न रहा।

सरला ने हाल में एकत्र लोगों को ध्यान से देखा पर उसे ललित कहीं भी नहीं दिखाई दिया। उसने शकुन से पूछ ही लिया:—"भैया नहीं दिखाई देते!"

'वे प्रीति-भोज के प्रबन्ध में लगे हैं। आते ही होंगे।" शकुन ने धीमे स्वर में कहा।

"अब कवि-गोष्ठी की कार्यवाही प्रारम्भ होगी।" तब तक प्रोफेसर इन्द्र ने अपनी गंजी चाँद को दाहिने हाथ से सहलाते हुये कहा। "आप लोग बगल वाले हाल में आने का कष्ट करें!"

बगल वाले हाल की ओर बढ़ने वालों में कवि-गण सबसे आगे थे।

हाल काफी बड़ा था। फर्श पर दरी, चाँदनी और कालीन बिछे हुये थे। बीच-बीच में मोटे गावदार तकिये पड़े थे। कवि-गण लपककर मुख्य स्थान पर बैठ गये। थोड़ी देर में ही हाल भर गया।

कमल भी अनमना सा आकर एक कोने में बैठ गया।

"आप उधर कहाँ बैठ गये, कमल जी? इधर आइये।" शैलजा ने मुख्य स्थान की ओर संकेत किया।

"मैं यहीं ठीक हूँ।" कमल ने उत्तर दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चाँदी के दो बड़े थालों में चाँदी के वर्क लगे पान लाकर ललित ने बीच में रख दिये। उसके पीछे एक नौकर था जिसके हाथ में सिगरेट के दो डिब्बे थे। उससे डिब्बे लेकर उसने वहीं रख दिये और फिर जेब से दियासलाई की डिब्बी भी निकाल कर रख दी। नौकर चला गया। ललित वहीं एक किनारे बैठ गया। उसने देखा, लड़कियों के झुंड के बीच में शकुन के साथ सरला भी बैठी है। मुन्ना उसकी गोद में है। सरला को रेशमी साड़ी-ब्लाउज पहने देखकर उसे आश्चर्य हुआ। उसने समझा कि शकुन ने ही उसे रेशमी वस्त्र दिये होंगे।

कवि-गोष्ठी प्रारम्भ होनी चाहिए। प्रोफेसर इन्द्र स्वयं-निर्वाचित सभापति की भांति बोल पड़े।

"गोष्ठी के सभापतित्व के लिए मैं प्रोफेसर इन्द्र का नाम प्रस्तावित करता हूँ।" बाबू श्यामसुन्दर का स्वर गूँज उठा।

"मैं अनुमोदन करता हूँ।" प्रोफेसर इन्द्र के एक विशेष कृपापात्र कवि महोदय ने गंभीरता से कहा।

प्रोफेसर इन्द्र ने हँसकर स्वीकृति दे दी। वे उठकर सभापति का आसन ग्रहण करने ही वाले थे कि कमल बोल पड़ा:—

"धृष्टता के लिए क्षमा चाहता हूँ। पर मेरे विचार से गोष्ठी के लिए सभापति चुनने की कोई आवश्यकता नहीं है।"

प्रोफेसर इन्द्र उठते-उठते फिर बैठ गये।

"कमल जी ठीक कहते हैं। यह इन्फार्मल गोष्ठी है। इसमें सभापति की क्या आवश्यकता है?" शैलजा बोल पड़ी।

शैलजा की बात का कौन विरोध करे?

"मगर बेटी, गोष्ठी के संचालन के लिए कोई आदमी तो होना ही चाहिए।" रायबहादुर ने पान का बीड़ा मुंह में दबा कर कहा।

"प्रोफेसर साहब से अच्छा संचालक और कौन मिलेगा, डैडी।" शैलजा बोली और फिर बैग से कवियों की सूची निकाल कर प्रोफेसर इन्द्र को देकर कहा—"यह लिस्ट है कवियों की।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रोफेसर इन्द्र ने सूची को देखकर मुस्कराते हुये कहा :—"एक नाम तो छूट ही गया है।"

"किसका ?" शैलजा के मुख पर सहज आश्चर्य था।

"तुम्हारा।" कहकर प्रोफेसर इन्द्र ने जेब से कलम निकाला और सूची में शैलजा का नाम बढ़ा दिया।

गोष्ठी प्रारम्भ हो गयी।

कवि गणों में जागृति की लहर दौड़ गयी।

कविता-पाठ के साथ-साथ 'वाह!' 'बहुत सुन्दर!' 'क्या बात है!' के स्वर हाल में गूंज उठे।

कुछ कवियों ने सस्ते शृंगारी गीत सुनाये जिन्हें सुनकर बाबू श्याम सुन्दर ने नाक-भौं सिकोड़ी, प्रोफेसर इन्द्र हाल के बाहर देखने लगे और महिला-समाज ने सिर झुका लिया। एक कवि महोदय ने व्रज-भाषा के सवैये सुनाये। उनका रंग खूब जमा। जब वे उठकर अपने स्थान पर गये तब उनका सीना फूलकर दूना हो गया था। और एक सज्जन ने तो रायबहादुर का कृपा-पात्र बनने के लिए और भविष्य की गोष्ठियों में अपना स्थान सुरक्षित रखने के लिए रायबहादुर तथा शैलजा का प्रशस्ति-गान ही सुना डाला। उनकी रचना की समाप्ति पर जब शैलजा ने उनकी ओर मधुर मुस्कान से देखा तब वे फूलकर कुप्पा हो गये। अन्य कवियों पर विजय की गर्व पूर्ण दृष्टि डालकर वे अपने स्थान पर बैठ गये।

"अब आपके सामने कमल जी कविता-पाठ करेंगे। आइये, कमल जी!" प्रोफेसर इन्द्र ने कमल की ओर देखा।

शैलजा का हृदय उछलने लगा।

कामेश्वर की साँसों की गति तीव्र हो गयी।

ललित सँभलकर बैठ गया।

कमल ने जो गीत सुनाया वह भाषा, शैली और भावों की दृष्टि से सब से भिन्न था। उसके गीत में सस्ती शृंगारी भावना नहीं थी; अतृप्ति

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का क्रन्दन नहीं था। फिर भी उसमें एक ऐसा दर्द था जो सब पर छा गया। रचना की समाप्ति पर श्रोता गण मंत्र-मुग्ध से रह गये। वाह वाही करने या तालियाँ बजाने तक का होश नहीं रहा।

गीत सुनाकर कमल अपने स्थान पर बैठ गया।

"एक गीत और सुनाइये कमल जी।" शैलजा ने आग्रह किया।

"अब मैं क्षमा चाहता हूँ।" कमल का उत्तर था।

"एक गीत और! एक गीत और!!" कई कंठों का समवेत स्वर हाल में गूंज उठा।

मगर कमल अपने स्थान से न उठा।

"कमल जी अस्वस्थ होते हुये भी आ गये हैं यह उनकी महान कृपा है। अब उन्हें और परेशान न कीजिये।" ललित को खड़े होकर कहना ही पड़ा।

हाल में शान्ति छा गयी।

कमल ने आँखों ही आँखों में ललित को धन्यवाद दिया।

ललित फिर अपने स्थान पर बैठ गया।

"अब शैलजा जी आपको अपना मधुर गीत सुनायेंगी।" प्रोफेसर इन्द्र ने शैलजा की ओर देखकर कहा।

"मुझे क्षमा नहीं मिल सकती, प्रोफेसर साहब?" शैलजा धीमे स्वर में बोली। उसका उत्साह कमल की अस्वस्थता का समाचार सुनकर न जाने कहाँ विलुप्त हो गया था।

"यह कैसे हो सकता है? हम तो आपका गीत सुनने के लिए ही आये हैं।" कई कवि-गण एक साथ बोल पड़े।

विवश होकर उसने एक छोटा सा गीत अनमने भाव से सुना दिया। कवि गणों ने झूम-झूम कर दाद दी।

"तुम तो बहुत अच्छा लिखती हो।" बाबू श्यामसुन्दर ने भी प्रशंसा की।

"सब आपकी कृपा है।" कहकर शैलजा ने सिर झुका लिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कामेश्वर ने कानों से अधिक उपयोग अपनी आँखों का किया था। वह कवितायें न सुनकर सरला की ओर देखता रहा था। एक बार शैलजा ने देख भी लिया था पर उसने सरला की ओर से दृष्टि न हटायी थी। उसका विचार था कि जिस प्रकार कमल को अपना प्रतिद्वन्दी मानकर वह ईर्ष्या की आग में जल रहा है उसी प्रकार सरला को अपनी प्रतिद्वन्दिनी मानकर शैलजा भी ईर्ष्या की आग में जलेगी।

सरला को कामेश्वर की लोलुप दृष्टि तीखे तीर सी चुभ रही थी। उसे लगा कि वह उसे आँखों ही आँखों से खा जाना चाहता था। वह मन-ही-मन उसे कोसने लगी। कितना धृष्ट और लम्पट है यह युवक, उसने सोचा। कमल का गीत सुनकर वह अपनी सुधि भूल बैठी। उसके गीत के दर्द का भीगा नशा उसकी रग-रग में बिंध गया। उसके हृदय में एक कसक सी उठी और आँखों में आँसू भर आये।

शैलजा के गीत के बाद गोष्ठी समाप्त हो गयी।

"अब आप लोग पीछे वाले लान में चलकर रूखा-सूखा ग्रहण करने की कृपा करें।" रायबहादुर ने खड़े होकर हाथ जोड़ते हुये कहा।

"मीठे-मीठे गीत सुनने के बाद यदि मीठे-मीठे पदार्थ भी खाने को मिलें तो इससे बढ़कर और सौभाग्य क्या हो सकता है!" बाबू श्याम सुन्दर ने अपनी सहज मुस्कान के साथ कहा।

सब लोग पीछे वाले लान की ओर चल दिये।

कमल ललित का हाथ पकड़ कर उसे बाहर बरामदे में ले गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नौ

"तुम जानते हो कि यहाँ आकर मैंने अपनी आत्मा का हनन किया है।" बाहर आकर कमल गंभीर स्वर में बोला।

"जानता हूँ। आपको धन्यवाद देने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। यदि आप न आते तो मेरी नौकरी अवश्य चली जाती।" ललित ने कृतज्ञता से कहा।

"जब कोई मुझसे 'आप' कहता है तो मैं एक दूरी का अनुभव करता हूँ। अच्छा हो यदि तुम 'तुम' का ही प्रयोग करो।" कहकर कमल ने कुर्त्ते की जेब से बीड़ी का बन्डल निकाला और एक बीड़ी अधरों के बीच दबाकर बोला, "दियासलाई है तुम्हारे पास ?"

ललित हाल से दियासलाई ले आया।

बीड़ी जलाकार कमल बोला, "अब मैं जा रहा हूँ।"

"यह कैसे हो सकता है। प्रीत-भोज.....।"

"मैं प्रीत-भोज के लालच से नहीं आया हूँ।" कमल के स्वर में दृढ़ता थी।

"मैं शैलजा जी को बुलाये लाता हूँ। अच्छा हो यदि उन्हीं से बात कर लो।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कमल मौन रहा।

ललित चला गया और शीघ्र ही शैलजा को बुला कर आ गया।

"अब मैं आज्ञा चाहता हूँ।" कमल ने शैलजा को देख कर कहा।

"अभी से! प्रीत-भोज के बाद जाइयेगा।" शैलजा के स्वर में अगाध आग्रह था।

"प्रीत-भोज में सम्मिलित न हो सकने के लिए क्षमा चाहता हूँ। मुझे अभी जाना है।" कहकर कमल ने हाथ जोड़कर अभिवादन किया।

"यदि आपने भोजन नहीं किया तो....तो...।" आगे शैलजा कुछ न कह सकीं। उसकी वाणी अवरुद्ध हो गयी।

कमल ठिठक गया।

"तो क्या होगा?" कमल ने पूछा।

"यदि आप चाहते हैं कि मैं अपने जन्म-दिन पर रोऊँ तो आप जा सकते हैं।" रुद्ध कंठ से शैलजा नें कहा।

कमल उसकी ओर देखता रहा।

"शैलजा जी के आग्रह को न टालो।" ललित ने कमल का हाथ पकड़कर कहा। "आओ! सब लोग हमारी प्रतीक्षा कर रहे होंगे।"

कमल सिर झुकाकर ललित के साथ चल दिया।

शैलजा की आँखों की गहरी झीलों में मुस्कान के हँस तैरने लगे।

ललित ने कमल को एक रिक्त स्थान पर बिठा दिया। शैलजा उसी के समीप बैठ गयी।

कामेश्वर ने यह सब देखा तो उसका रक्त खौल उठा। क्रोध के कारण वह काँपने लगा। उसकी इच्छा हुई कि वह जाकर कमल का गला दबा दे पर किसी प्रकार वह क्रोध के तीखे घूँट को पी गया। देख लूँगा तुम्हें बच्चू, उसने मन-ही-मन कहा।

कमल और शैलजा के सामने ही शकुन और सरला बैठी थीं। कमल को अपने सामने देखकर सरला का हृदय जोर से धड़कने लगा।

"कमल जी! आपने एक गीत सुनाकर तो हमारी प्यास को बढ़ा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिया है।" भोजन के बीच में शकुन ने कहा।

कमल ने दृष्टि उठाकर शकुन की ओर देखा और फिर उसकी दृष्टि सरला की ओर गयी। सरला को पसीना आ गया। उसका हाथ काँपने लगा; ग्रास गले में फँस गया।

"यह मेरी बड़ी बहन शकुन हैं।" शैलजा ने परिचय कराते हुये कहा। "और यह इनकी सहेली हैं।"

"आप लोगों के दर्शन करके वास्तव में बहुत प्रसन्नता हुई। मेरा सौभाग्य है जो आपको हमारी रचना पसन्द आयी।" कमल ने विनम्रता से कहा और फिर दृष्टि झुकाकर भोजन करने लगा।

"तुम्हारी सहेली का नाम क्या है, सिसी ?" शैलजा ने अचानक ही शकुन से पूछ लिया।

"सरला।" शकुन ने छोटा सा उत्तर दे दिया।

"नामों की भी सार्थकता होती है।" कमल ने दृष्टि उठाकर धीमे स्वर में कहा।

सरला को लगा जैसे उसके नीचे की धरती फट गयी है और वह विद्युत वेग से रसातल की ओर धँसती चली जा रही है।

तभी पास बैठा हुआ मुन्ना बोल पड़ा—"बुआ जी पानी।"

सरला ने गिलास उठाकर उसे पानी पिलाना चाहा पर उसका हाथ इतना अधिक काँप रहा था कि शैलजा को हँसी आ गयी। सरला और भी हड़बड़ा गयी और फलस्वरूप गिलास का अधिकाँश जल छलककर मेज पर आ गिरा। सरला ने समहल कर गिलास मेज पर रख दिया।

"कुछ लोगों को टेबिल-मैनर्स भी नहीं आते।" शैलजा ने व्यंग्य किया।

"शैल !" कठोर स्वर में शकुन ने कहा।

शैलजा चुप हो गयी।

शकुन ने उठकर मुन्ना को पानी पिला दिया।

"टेबिल-मैनर्स जानना ही जीवन की सार्थकता नहीं है।" कमल ने गंभीर स्वर में कहा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सरला की दृष्टि स्वतः ही ऊपर उठ गयी।

"इनकी ओर से मैं क्षमा माँगता हूँ।" कहकर कमल फिर खाने लगा।

शैलजा का शरीर इस प्रकार जलने लगा मानो उसे तीव्र ज्वर हो। ईर्ष्या की आग की चिनगारियाँ उसकी आँखों से निकलने लगीं। उसने आग्नेय नेत्रों से सरला की ओर देखा। वह सहम कर और भी सिकुड़ गयी। फिर उससे खाना न खाया गया।

प्रीत-भोज के बाद अतिथि लोग जाने लगे। कवि गणों को बिदाई के रूप में ग्यारह-ग्यारह रुपये दे दिये गये। कमल ने रुपये लेने से स्पष्ट इन्कार कर दिया। शैलजा ने उससे कुछ देर और रुकने का आग्रह किया। वह रुक गया। शैलजा ने इसे अपनी जीत समझी।

कामेश्वर भी रुक गया और उसने अपने मामा को भी रोक लिया। प्रोफेसर इन्द्र को रायबहादुर ने रोक लिया।

सब लोग कमरे में बैठ गये।

कमल के आग्रह और शकुन की आँखों के मौन निमंत्रण के कारण ललित भी जाकर एक कुर्सी पर बैठ गया। उसका बैठना शैलजा को अच्छा नहीं लगा। पर वह कुछ बोली नहीं।

"आपके गीत का जादू अब तक मेरे सिर पर है।" बाबू श्यामसुन्दर ने कमल की ओर मुड़कर कहा।

कमल हाथ मलता रहा, कुछ बोला नहीं।

"गीत तो अच्छा था परन्तु उसमें निहित पराजय और निराशा का भाव मुझे पसन्द नहीं।" प्रोफेसर इन्द्र का समालोचक जागरुक होकर बोला।

"आपने यदि मेरे गीत में पराजय और निराशा के भाव देखे हैं तो मुझे यह कहना पड़ेगा कि आपने उसे समझा ही नहीं।" आवेश में आकर कमल बोला। "उसमें पराजय और निराशा की नहीं, संघर्ष और आशा की भावना थी।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कमल की बात सुनकर प्रोफेसर इन्द्र भड़क उठे। क्रुद्ध स्वर में बोले:—

"तुम्हारे कहने का आशय यह है कि गीत समझने की भी बुद्धि नहीं है मुझमें। वर्षों से बी० ए०, एम० ए० वालों को पढ़ा रहा हूँ; सूर-तुलसी से लेकर निराला-पंत तक के साहित्य पर दर्जनों समालोचनायें लिख डाली हैं और मैं तुम्हारे जैसे नौसिखियों का साधारण सा गीत नहीं समझ सकता। तुम्हारा गीत न हुआ, कबीर की उल्टवासी हो गयी।"

वातावरण में अजीब सा तनाव आ गया। रायबहादुर ने कम्पित हाथों से पान के दो बीड़े मुंह में दबा लिये। बाबू श्यामसुन्दर अपने पैर जोर से हिलाने लगे। कामेश्वर की आँखों में चमक आ गयी। शैलजा का हृदय धड़कने लगा। शकुन ऊँघते हुये मुन्ना को गोद में लेकर अपने कमरे की ओर चली गयी। ललित का गला सूखने लगा। सरला के रक्तचाप की गति तीव्र हो गयी।

"अशिष्टता के लिए क्षमा चाहता हूँ।" कमल ने गंभीर स्वर में कहना शुरू किया। "आपने जो कुछ कहा उसके उत्तर में मुझे केवल यही निवेदन करना है कि समय के साथ मूल्य भी बदलते हैं। अपनी पुरानी कसौटी पर आज की नयी कविता को कसकर आप साहित्य का उपकार नहीं, अपकार ही करेंगे।"

"कल से लेखनी पकड़ी है और आज ही उन्हें चुनौती देते हो जिन्होंने साहित्य-सेवा में अपना जीवन खपा दिया है।" प्रोफेसर इन्द्र ने तेजी से कहा। "फुटकर गीतों के लिख लेने से कोई महाकवि नहीं बन जाता। कितनी कृतियाँ आयीं हैं तुम्हारी प्रकाश में?"

"कई वर्ष पूर्व एक कृति प्रकाशित हुई थी। साहित्य के तथा कथित ठेकेदारों ने उसका गला घोंट दिया। तब से मैंने निश्चय कर लिया है कि तब तक कोई संग्रह प्रकाशित न कराऊँगा जब तक नयी मान्यताओं को समझने की बुद्धि हमारे दकियानूसी समालोचकों में नहीं आ जायेगी। कमल ने दृढ़ स्वर में उत्तर दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शकुन आकर फिर अपने स्थान पर बैठ गयी।

"यह क्यों नहीं कहते कि तुम्हारी टकैयल चीजों को छापने के लिए कोई प्रकाशक तैयार ही नहीं है।" प्रोफेसर इन्द्र ने तीखा प्रहार किया।

"आप यही समझ सकते हैं यदि आपको इस विचार से सन्तोष मिलता है तो।" कहकर कमल मुस्करा पड़ा।

उसकी मुस्कान से प्रोफेसर इन्द्र जल गये।

"मैं समझती हूँ अब किसी दूसरे विषय पर बात की जाये।" शैलजा ने साहस करके कहा।

"अच्छा, अब मैं तो चलता हूँ। कल सबेरे ही कालेज जाना है।" कहकर प्रोफेसर इन्द्र उठ खड़े हुये। रायबहादुर उन्हें फाटक तक छोड़ आये।

"यदि कोई आपत्ति न हो तो एक गीत और सुना दीजिये।" शकुन ने कमल से आग्रह किया।

"आज तो क्षमा कीजिये। फिर कभी सुना दूँगा।"

"अब न जाने कब भेंट हो!" शकुन बोली।

"विश्वास रखिये। आप जब भी स्मरण करेंगी, आ जाऊँगा।" कमल ने हँसकर कहा। फिर रायबहादुर की ओर मुड़कर बोला—"अब आज्ञा दीजिये। बहुत दूर जाना है मुझे।"

"आप चिन्ता न करें। कार छोड़ आयेगी।" रायबहादुर ने सहज स्वर में कहा।

"मैं पैदल जाना ही पसन्द करूँगा।" कहकर कमल उठ खड़ा हुआ।

कमल ने ललित की ओर देखा। वह उठकर कमल के साथ बरामदे में आ गया।

"तुम नहीं जाओगे घर?" कमल ने पूछा।

"बस मैं भी चलता हूँ। सरला और मुन्ना को बुला लूँ।" कहकर ललित अन्दर चला गया।

कमल बीड़ी जलाकर बरामदे में टहलने लगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"कोई अपराध हो गया हो तो क्षमा कीजियेगा।" अन्दर से आकर शैलजा ने कहा। "अस्वस्थ होते हुये भी आप आये इसके लिए धन्यवाद।"

"क्षमा तो मुझे माँगनी चाहिए। मैंने अकारण ही प्रोफेसर साहब को रुष्ट कर दिया।"

"आपने ठीक ही किया। आज उन्हें छठी का दूध याद आ गया होगा।" कहकर शैलजा खिलखिलाकर हँस पड़ी।

तभी अन्दर से ललित आ गया। उसके पीछे गोद में मुन्ना को लिए सरला थी। शकुन भी साथ थी। बरामदे में आकर शकुन ने ड्रायवर को कार लाने का आदेश दिया। कार आकर पोर्टिको में लग गयी।

"अगर पैदल ही चलने की शपथ न खाई हो तो एक बात कहूँ।" हँसकर शकुन ने कमल से कहा।

"कहिये।"

"ललित को छोड़ने कार जा रही है। आप भी उसी में चले जाइये।" शकुन ने सहज स्वर में कहा।

कमल ने ललित की ओर देखा।

"शकुन जी की आज्ञा तो माननी ही पड़ेगी। आओ।" ललित बोला और कार में बैठ गया।

सरला भी बैठ गयी।

कमल खड़ा रहा।

"आओ भी।" ललित ने पुकारा।

कमल झिझकता हुआ कार तक गया और फिर अगली सीट पर बैठने लगा।

"अरे, वहाँ कहाँ बैठ रहे हो। पीछे आओ।" ललित ने बुलाया।

कमल पीछे जाकर बैठ गया।

ललित और कमल के बीच में बैठी सरला कुछ और सिकुड़ गयी।

शैलजा खड़ी न रह सकी। वह डगमगाते डगों से अन्दर चली गयी। कामेश्वर ने कुछ पूछना चाहा पर वह तेजी से अपने कमरे की ओर बढ़

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गयी। कामेश्वर चिढ़ गया। रूखे स्वर में अपने मामा से बोला :—
"अब चलिये, मामा जी।"

"यह मेरी बहन सरला है।" कुछ देर बाद ललित बोला।

"छल, आडम्बर और असत्य के समाज में इन्हें देखकर मुझे आश्चर्य हो रहा था। अब मेरी समझ में सब कुछ आ गया।" कहकर कमल तेजी से पीछे छूटने वाले बिजली के खम्भों को देखने लगा।

ललित और सरला के कार से उतर जाने के बाद कमल ने ललित से सस्नेह कहा—"कभी-कभी आ जाया करो।" और फिर हँसकर बोला, "मैं देखने में जितना बुरा लगता हूँ उतना बुरा हूँ नहीं।"

"अवश्य आया करूँगा, मित्र! पराजय और निराशा के क्षणों में मुझे तुमसे बहुत बल मिलेगा।"

"और मुझे तुमसे।" कमल का उत्तर था।

गली में पहुँचकर ललित ने सरला की गोद से मुन्ना को ले लिया और धीमे स्वर में रुकते-रुकते पूछा :—"ये साड़ी-ब्लाउज और सैन्डिल क्या शकुन.....?"

"भाभी परोस से माँग लायी थीं।" सरला ने बीच में ही धीमे और उदास स्वर में कहा।

ललित कुछ बोला नहीं। सिर झुकाये चुपचाप चलता रहा।

ड्रायवर को राममोहन के हाते का पता देकर कमल अपने विचारों में खो गया। वह सोच रहा था शकुन के बारे में, सरला के बारे में, शैलजा के बारे में। शकुन और शैलजा के स्वभाव तथा उनकी सहज प्रकृति में पूर्व-पश्चिम का अन्तर पाकर वह आश्चर्य कर रहा था।

और सरला?

सरला की आँखों में जिस गहन वेदना और विषम परिस्थितियों से उत्पन्न निराशा का भाव उसने देखा था उसके स्मरण से उसका मन भी भारी हो गया। उसके मुख से एक दीर्घ निःश्वास निकल गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दस

उस रात सरला को बहुत देर तक नींद नहीं आयी। तरह-तरह के विचार उसके मस्तिष्क में आते रहे। वह शकुन के बारे में सोचती रही। शकुन कितनी अच्छी है! पैसे का गर्व उसे छू तक नहीं गया है। स्वयं मुझे लेने आयी, सहेली बता कर परिचय दिया और हर समय साथ रही। यदि वह साथ न रहती तो मेरी क्या दशा हुई होती! और सरला अनुभव करने लगी कि वास्तव में शकुन ही उसकी एक मात्र ऐसी सहेली है जिससे वह सुख-दुख की बातें कर सकती है, जिसके सामने वह निःसंकोच अपना हृदय खोलकर रख सकती है!

शकुन के बाद वह शैलजा के बारे में सोचने लगी। कितनी अकड़ है उसमें! सीधे मुंह बात भी नहीं कर सकती। मेरे अभिवादन का उत्तर नहीं दिया; मुझमें टेबिल-मैनर्स की कमी बता कर मेरा अपमान करने की चेष्टा की। कमल ने करारा उत्तर देकर उसे लज्जित कर दिया नहीं तो और न जाने क्या-क्या बकती।

कमल! कितना सीधा और सरल युवक है! कितनी पीड़ा है उसके स्वर में! फिर भी संघर्ष के प्रति जागरुक रहता है! प्रोफेसर इन्द्र को कितने करारे उत्तर दिये! बोलती बन्द हो गयी उनकी। अपने को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बहुत विद्वान समझते थे।

और कामेश्वर! कितना अशिष्ट और धृष्ट था वह! ऐसे घूर रहा था जैसे कच्चा ही चबा जायेगा। मनुष्य के वेश में भयंकर भेड़िया था वह जिसके जीवन का उद्देश्य भोली भेड़ों के माँस से अपनी तुष्टि करना ही है! सोचते-सोचते उसका हृदय घृणा से भर गया।

सुबह वह मालती की साड़ी-ब्लाउज और सैन्डिलें लौटाने गयी, परन्तु मालती के द्वार से ही लौट आयी। उसे याद आ गया कि भाभी ने एक बहाना बनाकर चीजें माँगी थीं। यदि मालती या उसकी माँ कुछ पूछ बैठीं तो वह क्या उत्तर देगी!

घर लौटकर उसने भाभी से कहा, "तुम्हीं लौटा आओ ये चीजें।"

ललित गुड़ की चाय पीकर और दोपहर के लिए खाना लेकर मील चला गया था। मुन्ना अपने साथियों को पिछली रात के मजे सुनाने के लिए बाहर गली में निकल गया था। मुन्नी का ज्वर उतर गया था। वह बरामदे में खेल रही थी।

"तुम्हीं दे आओ न!" दया ने हँसकर कहा।

"मैं नहीं जाती। मुझे शर्म लगती है।" सरला बोली।

"शर्म? काहे की शर्म!" दया ने आश्चर्य से पूछा। वह कदाचित भूल गयी थी कि उन चीजों को माँगने के लिए उसने क्या बहाना बनाया था।

"तुम कह ही ऐसी बात आयी हो।" कहकर सरला कमरे में भाग गयी।

दया को हँसी आ गयी। वह साड़ी-ब्लाउज और सैन्डिलें लेकर द्वार की ओर बढ़ी।

"जरा अखबार भी लेती आना, भाभी।" सरला ने अन्दर से ही कहा।

दया जानती है कि सरला को समाचार-पत्र पढ़ने का चाव है। घर में तो कोई पत्र आता नहीं था। अतः वह मालती के यहाँ जाकर नित्य 'विश्वमित्र' पढ़ लिया करती थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुछ देर बाद जब दया लौट कर आयी तो उसके हाथ में 'विश्वमित्र' था।

सरला ने झपट कर अखबार ले लिया।

समाचार पढ़ते-पढ़ते उसकी दृष्टि एक विज्ञापन पर पड़ी। विज्ञापन के ऊपर मोटे-मोटे शब्दों में लिखा था—'लड़की चाहिए।'

सरला पूरा विज्ञापन एक साँस में ही पढ़ गयी। उसमें लिखा था :—

"पैंतालीस वर्षीय एक धनी निःसन्तान विधुर के लिए एक निःसन्तान विधवा की आवश्यकता है। जाति-पाँति का कोई बन्धन नहीं। दहेज का भी कोई प्रश्न नहीं है। तत्काल ही ब्याह करने की इच्छा रखने वाले पत्र-व्यवहार करें। ब्याह आर्य-समाज की रीति से होगा।"

पत्र-व्यवहार के लिए एक पोस्ट-बाक्स का पता दिया हुआ था।

विज्ञापन पढ़ कर सरला को लगा कि उसे समस्या का समाधान मिल गया है। जो मार्ग अभी तक अंधकार से आच्छादित था वही प्रकाश की किरणों से आलोकित हो उठा। उसने सोचा कि भाई की चिन्ताओं को दूर करने का यही सर्वोत्तम उपाय है। निश्चय की दृढ़ता उसके नेत्रों में चमक बनकर प्रकाशित हो उठी।

दोपहर को जब दया सो गयी तब उसने विज्ञापन के उत्तर में लिखा :—

"प्रिय महोदय,

आपका विज्ञापन 'विश्वमित्र' में देखा। मैं विधवा नहीं, एक कुमारी कन्या हूँ। अवस्था अठारह वर्ष की है। देखने में भी अच्छी हूँ। घर-गृहस्थी के कामों में भी निपुण हूँ। मैं विश्वास दिलाती हूँ कि आप यदि मुझसे शादी करेंगे तो आपको निराश नहीं होना पड़ेगा।

यह जानकर हर्ष हुआ कि आप दहेज नहीं चाहते। हमारे पास देने के नाम पर कुछ है भी नहीं। हम तो आपसे कुछ लेना ही चाहते हैं। क्या आप दस हजार रुपये मेरे भाई को दे सकते हैं?

आप यह न सोचें कि मेरे भाई मुझे बेच रहे हैं। यह पत्र मैं अपनी ओर से लिख रही हूँ। भैया-भाभी को मैंने कुछ नहीं बताया है। दस हजार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रुपये मैं भैया के लिए नहीं, अपनी दो साल की भतीजी के लिए माँग रही हूँ।

आप मुझे पागल न समझेंगे। पर मैं विश्वास दिलाती हूँ कि मैं पागल हूँ नहीं। मैं जो कुछ लिख रही हूँ उसे भली प्रकार समझती हूँ। आप पूछेंगे कि दो साल की बच्ची इतना रुपया लेकर करेगी क्या? मैं बताती हूँ।

हम लोग निर्धन प्राणी हैं। मेरी चिन्ता भैया को दिन-रात सताती रहती है। जिससे बात चलाते हैं वह लम्बी-चौड़ी माँग करता है। भैया का यह दुख मुझसे देखा नहीं जाता। उन्हें चिन्ता से मुक्त करने के लिए ही मैंने यह कदम उठाया है। किन्तु यह समस्या मुझी तक सीमित नहीं है। जो स्थिति आज है वही तब भी होगी जब वह दो साल की बच्ची युवती हो जायेगी। इसीलिए मैं दस हजार रुपये की माँग कर रही हूँ। ये रुपये बच्ची के नाम से किसी भी बैंक में आप जमा कर सकते हैं।

इस प्रकार आप देखेंगे कि आप मुझे अपनाकर केवल मेरा ही उद्धार नहीं करेंगे किन्तु उस भावी युवती का भी करेंगे जो आज केवल दो साल की भोली-भाली बच्ची है। मुझे आपकी सहृदयता में विश्वास है। मैं अपना पता नीचे दे रही हूँ। आप किसी भी दिन शाम को आकर मेरे भाई से बात कर सकते हैं।"

और पत्र के नीचे उसने अपना नाम तथा पता लिख दिया।

उसने पत्र एकबार प्रारम्भ से अन्त तक पढ़ा और फिर सन्तोष की साँस लेकर पत्र मोड़कर लिफाफे में रख दिया। लिफाफे पर पता लिखकर उसे चिपका दिया और फिर द्वार भेड़कर दबे पाँव घर से बाहर निकल गयी।

गली के नुक्कड़ पर लगे लेटर-बाक्स में लिफाफा छोड़कर जब सरला घर आयी तब भी दया सो रही थी।

सरला ने अनुभव किया कि उसकी छाती पर रक्खा हुआ बोझ बहुत कम हो गया है। उसे अपना तन-मन फूल की तरह हल्का ही लगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दया जब सोकर उठी तब उसने सरला में बहुत बड़ा परिवर्तन पाया। सदैव शान्त और उदास रहने वाली सरला की आँखों में एक विचित्र चमक थी और वह बरामदे में बैठी किसी गीत की पंक्तियाँ गुनगुना रही थी।

"क्या बात है? बहुत प्रसन्न दिखाई दे रही हो।" दया ने सरला के पास बैठकर पूछा।

"कोई खास बात तो नहीं है।" सरला ने मुस्करा कर कहा।

"आँखें तो कमल की तरह खिली जा रही हैं।" •दया ने चुटकी ली।

"तुम्हारे कल वाले बहाने के बारे में ही सोच-सोचकर हँसी आ रही है, भाभी।" कहकर सरला फिर मुस्करा पड़ी।

दया ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा। उसकी समझ में न आया कि सरला को हो क्या गया है।

"तुम तो मुझे ऐसे देख रही हो जैसे कभी देखा ही न हो।" सरला ने आँखें नचाकर कहा।

"सोच रही हूँ कहीं कल का झूठा बहाना सच न हो गया हो।" दया ने गूढ़ दृष्टि से उसके मुख की ओर देख कर कहा। "क्या किसी मोहन ने पसन्द कर लिया है मेरी राधा को?"

. "तुम्हें तो हर समय हँसी ही सूझती है, भाभी! मुझ काली-कलूटी, बैगन लूटी को कौन पसंद करेगा?" सरला ने मुँह को तिकोना बनाकर कहा।

दया की गंभीरता हास्य के स्वच्छन्द प्रवाह में बह गयी।

धूप आँगन से खिसक कर दीवार पर चढ़ गयी थी। दिन का दूसरा प्रहर समाप्त हो कर तीसरा लग चुका था। स्कूल से लौटने वाले बच्चों की तेज आवाज सुनाई पड़ने लगी थी।

"मुन्ना क्या दोपहर भर बाहर ही रहा?" दया अचानक ही पूछ बैठी।

"खैल रहा होगा। क्या बुलाऊँ?"

"इतना कहती हूँ कि दोपहर को घर में ही रहा कर। मगर वह सुनता ही नहीं। आने दो आज। ऐसी मरम्मत करूँगी कि......।"

दया का वाक्य अपूर्ण ही रह गया। हँसता-कूदता मुन्ना अन्दर आया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"बुआ की गोद में आजा, राजा बेटे !" सरला ने दोनों हाथ फैलाकर प्यार भरे स्वर में मुन्ना को बुलाया।

वह आकर उसकी गोद में बैठ गया।

"बहुत शैतान हो गया है तू !" दया ने उसका कान पकड़कर कड़े स्वर में कहा। "बोल कहाँ था अब तक ?"

मुन्ना रोने लगा।

"यह क्या आदत है तुम्हारी। जब देखो तब डाँटती ही रहती हो मुन्ना को।" सरला ने दया से कहा और फिर मुन्ना को चुपाने लगी।

दया चूल्हा जलाने की तैयारी करती हुई बोली :—"तुम्हीं ने तो सिर पर चढ़ा-चढ़ा कर बिगाड़ दिया। तुम तो चली जाओगी ससुराल और उमर भर भुगतना पड़ेगा हमें।"

"अगर कहो तो मुन्ना को भी अपने साथ ले जाऊँ।" सरला ने कृत्रिम गंभीरता से कहा।

उसकी बात सुनकर दया मुस्करा पड़ी।

मुन्ना सरला की गोद से उतरकर आँगन में खेलने लगा।

"तुम अभी गीत कौन सा गुनगुना रही थीं ?" सहसा दया को जैसे भूली बात याद आ गयी हो ऐसे ढंग से वह पूछ बैठी।

"कल की गोष्ठी में एक गीत सुना था, भाभी ! उसी की कुछ पंक्तियाँ याद हो गयी हैं।" सरला ने सहज स्वर में कहा।

"बहुत पसन्द आया वह गीत ?"

"हाँ, भाभी ! उस गीत में बहुत दर्द था। पर....पर वह दर्द ऐसा नहीं था जो हमें आहें भरने के लिए छोड़ दे। उसमें चुनौती थी, जूझने की, दर्द और दुख का अन्त करने के लिए मर-मिटने की। आशा और विश्वास के स्वर उस गीत में मुखरित हो उठे थे।" सरला ने आँखें बन्द करके भावावेश में आकर कहा।

दया उसके मुख की ओर निर्निमेष दृष्टि से देखने के अतिरिक्त और कुछ न कर सकी। उसे लगा कि सरला इस वास्तविक जगत से दूर—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बहुत दूर किसी काल्पनिक लोक में पहुँच गयी है।

चूल्हा जला कर दया ने बटलोई में अदहन चढ़ा दिया और फिर वह पीतल की फूटी थाली में अरहर की दाल निकालकर उसे बीनने लगी।

कमरे से मुन्नी के रोने की आवाज आयी। वह जाग गयी थी।

सरला ने उसे गोद में ले लिया और उसे प्यार से चूमने लगी।

अचानक सरला की इच्छा हुई कि वह मुन्ना-मुन्नी को जी भर कर प्यार करे भाभी के गले लगकर जी भरकर रोये। उसे पूरा विश्वास था कि विज्ञापन कर्त्ता विधुर उसका पत्र पढ़कर उसकी दशा पर तरस खायेंगे और.. और उसे शीघ्र ही ससुराल जाना पड़ेगा। जिस घर में खेल-खेलकर वह सयानी हुई, जिस घर की ईंट ईंट से उसका स्नेह-नाता है, उसी घर से बिछुड़ने का ध्यान आते ही अजीब सी उदासी उसके प्राणों पर छा गयी और वह मुन्नी को कलेजे से लगाकर रोने लगी।

सिसकियों का स्वर सुनकर दया कमरे में गयी। सरला को रोता देख कर उसने घबराये स्वर में पूछा :—"क्या हुआ ?"

"कुछ नहीं, भाभी !" सरला ने संयत होकर कहा। "तुम्हारे कल वाले बहाने को याद करके रोने लगी थी।"

दया को सन्देह हुआ कि कहीं सरला पागल तो नहीं हो गयी है। वह उसकी ओर ध्यान से देखने लगी। फिर एक विचार सहसा उसके मस्तिष्क में बिजली की तरह कौंध गया। वह झपट कर दो लाल मिर्चें ले आयी और उन्हें सरला के ऊपर घुमाकर शीघ्रता से फिर बरामदे में चली गयी।

सरला ने बाहर आकर देखा कि दया उन मिर्चों को चूल्हे में डाल रही है।

"यह क्या तमाशा किया, भाभी ?" सरला ने हँसकर पूछा।

"नजर उतारी थी। लगता है कल तुम्हें किसी मन चले की नजर लग गयी है। तभी तो बहकी-बहकी बातें कर रही हो आज।" दया के स्वर में सहज गंभीरता थी।

चूल्हे की तेज आग में जलकर मिर्चें राख हो गयीं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"देखो, जरा भी भस नहीं उड़ी। तुम्हें जरूर नजर लगी है।" दया ने विश्वास के साथ कहा और फिर एक क्षण रुककर बोली, "और लगती भी क्यों न? इन्द्रलोक की अप्सरा लग रही थीं। मेरे मन में तो आया कि तुम्हारे गाल में एक छोटा सा काला तिल बना दूँ मगर जल्दी में काजल की डिबिया मिली ही नहीं।"

"तिल से क्या होता, भाभी?"

"फिर मजाल थी कि किसी की नजर लग जाती!" कहकर दया आटा गूँथने लगी।

सरला के मुख से मुक्त हास्य की मृदु लहरियाँ निकल कर वायुमंडल में दौड़ने लगीं।

× × ×

शाम को जब ललित मील से लौट कर आया तब काफी थका हुआ और उदास था। वह आँगन में पड़ी चारपाई पर कटे हुये वृक्ष की भांति गिर पड़ा। दया चौके से निकलकर उसके पास गयी और धीमे स्वर में पूछा—"तबियत तो ठीक है?"

ललित मौन रहा।

"क्या बात है?" दया घबरा गयी।

"तुम्हारी अंकल को रो रहा हूँ।" उठकर बैठते हुये ललित बोला। "मील में शकुन का फोन आया था। झूठ बोलने के लिये मुझे डाँट रही थी।"

दया की समझ में कुछ नहीं आया।

"मैंने उसे कह दिया था कि सरला की बात चल रही है और जल्द ही सम्बन्ध तय हो जायेगा, मगर तुमने सब गुड़-गोबर कर दिया।" ललित ने चिढ़ कर कहा।

"मुझे क्या मालूम था कि तुमने क्या कहा है! मुझसे उन्होंने पूछा और मैंने सच्ची बात बता दी।" कह कर दया फिर चौके में आ गयी।

"सत्य की देवी एक तुम्हीं तो हो दुनिया में।" ललित ने रूखे स्वर में कहा और फिर वह उठकर आंगन में बेचैनी से टहलने लगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ग्यारह

शैलजा के व्यवहार से कामेश्वर बहुत चिढ़ गया था। वह उस पर क्रुद्ध हो उठा था। और उसने मन-ही-मन निश्चय कर लिया था कि उसे अधिक छूट देना ठीक नहीं है। शीघ्र से शीघ्र अपना उल्लू सीधा करने के लिए भांति-भांति की योजनाओं का निर्माण वह रातभर करता रहा था। वह इसे भली भांति जानता था कि यदि उसकी पकड़ कहीं पर जरा सी भी ढीली रही तो वह मछली की तरह फिसल कर निकल जायेगी। इससे पहले कि चिड़या के परों में उड़ने की शक्ति आये उसे घने जाल में जकड़ लेने की आवश्यकता का अनुभव उसका रोम-रोम करने लगा। काफी सोच-विचार के बाद अन्त में उसने एक योजना बना ही डाली। उसे विश्वास था कि यदि उसने सावधानी और बुद्धिमानी से काम लिया तो योजना अवश्य सफल हो जायेगी।

जब वह कालेज में शैलजा से मिला तो उसके अधरों पर रोज से अधिक मधुर मुस्कान थी। उसकी मुख-मुद्रा देखकर कोई भी यह अनुमान नहीं लगा सकता था कि वह शैलजा के किसी व्यवहार से कभी भी खिन्न हुआ होगा। उसका रुख देखकर शैलजा को आश्चर्य हुआ। वह समझती थी कि कामेश्वर उससे रुष्ट हो गया होगा और वह रूखा व्यवहार करेगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"बहुत खुश दिखाई दे रहे हो! क्या बात है?" शैलजा ने पूछा।

"आज हमारे नये जीवन का नया दिन है। इससे ज्यादा खुशी की बात और क्या हो सकती है?" कामेश्वर ने मुस्करा कर कहा।

शैलजा की समझ में उसका तात्पर्य नहीं आया, फिर भी वह मुस्करा दी।

"कल की गोष्ठी कैसी लगी?" उसने पूछा।

"स्प्लेन्डिड! कमल के गीत ने तो कमाल ही कर दिया। ही इज इनडीड अ जीनियेस!" कामेश्वर ने सहज स्वर में कहा।

उसके मुख से कमल की प्रशंसा सुनकर शैलजा को आश्चर्य भी हुआ और हर्ष भी।

"कमल का गीत तुम्हें पसन्द आया?" उसने कामेश्वर की आँखों में अपनी दृष्टि गड़ाकर पूछा।

यह क्षण बहुत खतरनाक था। कामेश्वर जानता था कि शैलजा उसके आन्तरिक भावों को पढ़ने की चेष्टा कर रही है। शायद उसे उसकी बात पर विश्वास नहीं हुआ है। यदि उसकी मुख-मुद्रा में तनिक भी परिवर्तन हुआ तो वह उसके हृदय में कमल के प्रति पनपने वाली घोर घृणा का भाव जान लेगी।

"जिसे उसका गीत पसन्द न आये वह इन्सान नहीं, पत्थर है।" कामेश्वर ने अपने आन्तरिक भावों को मुस्कान के आवरण में छिपा कर कहा। "जैसे प्रोफेसर इन्द्र।"

शैलजा ने अपनी दृष्टि कामेश्वर की ओर से हटा ली। उसे लगा कि उसने कामेश्वर को समझने में भूल की है। वह वास्तव में कमल का प्रशंसक है यह जानकर वह प्रसन्न हो उठी।

"तुम्हें कमल की प्रतिभा में विश्वास है?" शैलजा ने धीमे स्वर में पूछा और वह सामने मैदान की ओर देखने लगी।

"हाँ। एक दिन वह इन्डिया का टापमोस्ट पोइट हो जायेगा।" कामेश्वर ने पूरे विश्वास के साथ कहा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"आई टू थिंक सो।" शैलजा धीमे स्वर में बोली। कुछ देर रुक कर उसने कहा—"तुम अपने मामा से कहकर उसका संग्रह प्रकाशित क्यों नहीं करा देते?"

कामेश्वर ने गूढ़ दृष्टि से शैलजा की ओर देखा।

शैलजा ने मुख दूसरी ओर कर लिया। उसे भय था कि कहीं कामेश्वर उसके हृदय के एकान्त कोने में अंकुरित कमल के प्रति आकर्षण को देख न ले। वह यह नहीं चाहती थी कि कामेश्वर को वास्तविकता का ज्ञान हो। वह चाहती थी कि कामेश्वर यही समझे कि जो कुछ वह कह या कर रही है वह केवल सहानुभूतिवश ही है; साधनों के अभाव में कुंठित होने वाली प्रतिभा को प्रकाश में लाकर और उसे विकसित होने का अवसर देकर वह मानवीय धर्म का पालन भर कर रही है।

कामेश्वर को धोखा देने की चेष्टा व्यर्थ थी। वह वास्तविकता का आभास पहले ही पा चुका था। फिर भी उसे तो ऐसा ही अभिनय करना था। मानो वह धोखा खा गया है, असत्य के रेशमी जाल में फँस गया है।

"कल ही विचार मेरे दिमाग में भी आया था।" कामेश्वर ने स्वर में सत्य की झलक लाकर कहा। "मगर जो कुछ कमल ने कहा उससे तो मैंने यही नतीजा निकाला है कि वह अभी कोई कलेक्शन छपाना ही नहीं चाहता।"

"उन्हें मैं समझा लूंगी। तुम मामा जी को तो राजी कर लोगे?"

"ह्वाई नॉट! मैं जरूर राजी कर लूंगा।" कामेश्वर ने विश्वास दिलाया।

"ओह! आई एम सो ग्रेटफुल टू यू! शैलजा ने प्रसन्न स्वर में कहा।

"मेरी बात पर कुछ सोचा?" कामेश्वर ने सहसा बात का रुख बदल कर पूछा।

शैलजा कठिनाई में पड़ गयी। सच तो यह था कि उसने कामेश्वर के प्रस्ताव पर गंभीरता से सोचा ही न था। कामेश्वर को प्रसन्न करने के लिए उसने असत्य का आश्रय लेकर मधुर स्वर में कहा—"कल से उसी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पर सोच रही हूँ। मगर....मगर अभी तक माइन्ड मेक अप नहीं कर पायी हूँ।"

"मैं जल्द से जल्द तुम्हारा जवाब चाहता हूँ, शैल! तुम जानती हो, मेरे लिए यह जिन्दगी और मौत का सवाल है।" कामेश्वर के स्वर में आर्द्रता आ गयी।

"जानती हूँ।" शैलजा ने मादक मुस्कान छोड़ते हुये तिरछी दृष्टि से उसकी ओर देखकर कहा। "रेस्ट अश्योर्ड! फैसला जिन्दगी के ही पक्ष में होगा।"

कामेश्वर समझ गया कि उसे लासा दिया जा रहा है, किन्तु फिर भी दृष्टि और स्वर में परम कृतज्ञता और प्रसन्नता का भाव भर कर बोला—"थैंक्स! मेनी मेनी थैंक्स!!"

शैलजा ने कोई उत्तर देना उचित न समझा!

तभी घंटी बज उठी।

दोनों क्लास-रूम की ओर चल दिये।

पीरियड भर दोनों एक दूसरे की ओर तिरछी दृष्टियों से देखते रहे।

दोनों में मानों एक दूसरे को धोखा देने, छलने की होड़ लगी थी।

नारी पुरुष को छलने की चेष्टा कर रही थी।

पुरुष नारी को छलकर उसकी दुर्बलता पर कटु आघात करने की घात में बैठा था।

पीरियड समाप्त होने के बाद शैलजा 'गर्ल्स रिटायरिंग रूम' की ओर बढ़ी।

"जरा सुनना तो।" कहकर कामेश्वर उसके पीछे चल दिया।

शैलजा रुक गयी।

"कल शरद पूर्णिमा है। बोटिंग करने चलोगी?" कामेश्वर ने पूछा।

शैलजा सोच में पड़ गयी।

"मुझे पानी से डर लगता है।" एक क्षण बाद उसने धीमे स्वर में दृष्टि नीची करके कहा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"अगर नहीं चलना है तो साफ इन्कार कर दो। बहाना बनाने से क्या फायदा ?" रूखे स्वर में कामेश्वर ने कहा और फिर वह जाने का उपक्रम करने लगा।

शैलजा को लगा कि उसका बना-बनाया खेल बिगड़ा जा रहा है। वह कामेश्वर को रुष्ट करके कमल के निकट नहीं आ सकती थी। कमल को जीतने के लिए उसने जो उपाय सोचा था उसका एक अनिवार्य अंग था उसके संग्रह का प्रकाशन और यह कार्य कामेश्वर की सहायता से ही भली प्रकार हो सकता था।

"तुम तो नाराज हो गये।" मुस्कराते हुये शैलजा बोली। "इतनी छोटी-छोटी बातों पर बिगड़ोगे तो कैसे काम चलेगा ?"

कामेश्वर ने सोचा कि उसका तीर निशाने पर पड़ा है। वह रुक गया और कृत्रिम रोष से बोला—"इसे तुम छोटी बात कहती हो ? खैर ! मैं कल सात बजे आऊँगा। तैयार रहना।"

"मैं तुम्हारा वेट करूँगी।" कहकर झूमती हुई शैलजा रिटायरिंग रूम की ओर बढ़ गयी।

जब कामेश्वर कालेज से घर पहुँचा तब वह बहुत प्रसन्न था। उसके पैर जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। उसका फैलाया हुआ जाल शैलजा को चारों ओर से जकड़ चुका था। उसे विश्वास हो गया था कि बहुत शीघ्र ही वह पंछी के पर तोड़कर उसे हमेशा-हमेशा के लिए तड़पने के लिए छोड़ देगा।

सीटी बजाता हुआ जैसे ही वह अपने कमरे की ओर बढ़ा वैसे ही गोमती ने हर्षित होकर कहा—"आ गया, बेटा ! झटपट कपड़े बदल ! मैं अभी चाय लाती हूँ।"

वह कपड़े बदल भी न पाया था कि गोमती चाय और नाश्ता लेकर आ गयी।

"तुमसे कई बार कह चुका हूँ, माँ कि तुम तकलीफ न किया करो।" कामेश्वर कमीज उतारकर कुर्त्ता पहनते हुये बोला। "मगर तुम सुनती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ही कहां हो।"

"बेटे का काम करने में माँ को जो सुख होता है उसे तू क्या जाने!" गोमती स्नेह से उसके सिर पर हाथ फेरती हुई बोली। "मैं तो अब तभी आराम से बैठूँगी जब तेरी सेवा करने के लिए बहू आ जायेगी।"

कामेश्वर चाय पीने लगा।

"बेटा! मैंने तेरे लिए एक बहुत अच्छी लड़की देखी है। पढ़ी-लिखी भी है और सुन्दर भी।" गोमती उसके पास बैठकर मीठे स्वर में बोली। "दहेज भी काफी मिलेगा। बोल, उनसे हाँ कर दूँ?"

कामेश्वर ने चाय का प्याला मेज पर रख दिया और फिर गोमती की ओर बचपन भरी दृष्टि से देखकर बोला—"माँ! मैं ब्याह-शादी के झंझट में पड़ना नहीं चाहता।"

"ब्याह-शादी झंझट है?" गोमती के स्वर में कड़ाई आ गयी। "यह कह क्या रहा है तू?"

"ठीक कह रहा हूँ, माँ! मैं शादी नहीं करूँगा।"

"शादी नहीं करेगा तो क्या जिन्दगी भर आवारा छोकरियों के पीछे डोलता रहेगा?" गोमती क्रुद्ध होकर बोली। "तू समझता है मैं कुछ जानती नहीं। तेरी इन्हीं हरकतों से भय्या नाराज हैं। अगर.....।"

"मैं किसी की नाराजी की परवाह नहीं करता।" कामेश्वर बीच में ही आवेश से बोला। "किसी को खुश करने के लिए मैं अपनी आजादी नहीं बेच सकता।"

क्रोध से गोमती का चेहरा तमतमा गया। इतना सयाना होकर भी कामेश्वर बच्चों जैसी बातें करता है; स्थिति की गंभीरता भी नहीं समझता। उसकी इच्छा हुई कि उठकर बाहर चली जाये। उसका क्या है? दो-चार बरस की जिन्दगी है। भैया रोटी तो दे ही देंगे! अपनी मूर्खता का फल कामेश्वर स्वयं भुगतेगा। किन्तु माँ की ममता ने फिर अँगड़ाई ली। नहीं, उसे कामेश्वर के हित की रक्षा करनी चाहिए; उसे समझा-बुझा कर ठीक करना ही चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"बेटा !" गोमती ममता भरे मधुर स्वर में बोली। "भैया तुझसे बहुत नाराज हैं। अगर उन्होंने तेरे लिए कुछ भी न किया तो. . . . तो क्या होगा? सोच तो जरा।"

"मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा।" कामेश्वर चौकन्ना हो गया।

"अगर उन्होंने अपनी वसीयत में तेरे नाम कुछ भी न छोड़ा तो क्या होगा?" गोमती के स्वर में पीड़ा बोल उठी।

"मगर. . . मगर यह कैसे हो सकता है?" कामेश्वर हकला कर बोला। "मेरे सिवाय उनका और है ही कौन?"

"बहुत भोला है तू।" गोमती ने धीमे स्वर में कहा। "अगर वे सारी सम्पत्ति दान कर दें तो क्या तू उन्हें रोक सकता है?"

कामेश्वर ने इस बारे में कभी कुछ सोचा ही न था। वह अपने को मामा की समस्त सम्पत्ति का उत्तराधिकारी समझता है। वह उतराधिकार से वंचित भी किया जा सकता है ऐसा विचार कभी स्वप्न में भी उसके मन में न आया था। गोमती की बात सुनकर वह काँप उठा। उसके माथे पर पसीने की बूँदें झलकने लगीं।

"क्या. . . . क्या मामाजी मुझसे बहुत नाराज हैं?" उसने भर्राये स्वर में गोमती से प्रश्न किया।

"होंगे नहीं। तेरे बिल चुकाते-चुकाते परेशान हो गये हैं। और इन सब झगड़ों की जड़ हैं वे लड़कियाँ जिनके पीछे दीवाना होकर तू पैसा पानी की तरह बहाता फिरता है।" गोमती ने दुखी होकर कहा और फिर कामेश्वर की ओर स्नेहपूर्ण दृष्टि डालकर बोली—"अगर तेरी शादी हो जाये तो सब बखेड़ा खतम हो जाये। नाक में नकेल पड़ते ही तेरा इधर-उधर घूमना बन्द हो जाये और फिर भैया को भी शिकायत का कोई मौका ही न मिले।"

कामेश्वर चिन्तामग्न हो गया।

"क्या कहता है तू?" गोमती ने आशा भरे स्वर में पूछा।

"शायद तुम ठीक कहती हो, माँ! लगता है शादी करनी ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पड़ेगी।"

कामेश्वर का उत्तर सुनकर गोमती की बाछें खिल गयीं। हर्ष के आवेग से उसकी धूमिल आँखों में ज्योति आ गयी। आगे झुककर उसने पुत्र का मस्तक चूम लिया।

"बड़ा राजा बेटा है तू।" प्रसन्न स्वर में गोमती बोली। "तू चिन्ता न कर। मैं सब ठीक कर लूँगी।"

और फिर वह चाय की ट्रे उठाकर कमरे से बाहर चली गयी।

कामेश्वर की उद्विगनता बढ़ गयी। बेचैन होकर वह कमरे में टहलने लगा।

और वह तब तक टहलता रहा जब तक बाबू श्यामसुन्दर न आ गये। जब बाबू श्यामसुन्दर ने उसे अपने कमरे से पुकारा तब वह जाकर विनीत भाव से खड़ा हो गया।

"बैठ जाओ।" बाबू श्यामसुन्दर ने आदेश दिया।

वह कोच पर बैठ गया। उसे लगा कि कमरा घूम रहा है, कमरे की हर वस्तु घूम रही है।

"शायद तुम ठीक कहते थे। पुराने साहित्यकारों में अब कुछ नवीनता नहीं रह गयी है।" बाबू श्यामसुन्दर ने शेरवानी के बटन खोलते हुये कहा।

"जी!" बड़ी कठिनाई से कामेश्वर के मुख से निकला।

"आज मैंने उपन्यास की पाण्डुलिपि पढ़ी।" बाबू श्यामसुन्दर आराम से पैर फैलाकर बैठते हुये बोले। "बोझिल होने के साथ-साथ उसमें कोई नयी बात भी नहीं है। लगता है या तो पुराने लोगों का कोष समाप्त हो गया है या फिर प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा ने उन्हें पागल कर दिया है। वे समझने लगे हैं कि हम जो कुछ भी लिख देंगे वह अमर हो जायेगा।"

कामेश्वर की समझ में नहीं आया कि क्या बोले। हाँ, साँस लेने में जो कठिनाई उसे पहले हो रही थी वह दूर हो गयी। वह आराम से बैठ गया और खुलकर साँस लेने लगा।

"मैंने पाण्डुलिपि लौटा दी है।" बाबू श्यामसुन्दर फिर बोले।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"आपने ठीक किया, मामाजी।" इस बार कामेश्वर बोला। "पुराने लोगों का खून ठंडा हो गया है। समय के साथ वे चल नहीं सकते; आज की माँगें उनसे पूरी नहीं हो सकतीं।"

"कल कमल ने ठीक ही कहा था। समय के साथ मूल्य भी बदलते हैं। आज पुरानी मान्यतायें समाप्त हो रही हैं; नयी बन रही हैं। यह युग क्रान्ति का युग है। नयी प्रतिभाओं को प्रोत्साहन देना आज का युग-धर्म है।" बाबू श्यामसुन्दर ने कहा।

"आप ठीक कहते हैं। नये खून में गर्मी है, खानी है।"

"नये खून में जोश तो बहुत है मगर संयम का अभाव है। फिर भी हमें नये विचारों, नयी मान्यताओं, नयी सम्भावनाओं को प्रकाश में तो लाना ही है।" कहकर बाबू श्यामसुन्दर गंभीर हो गये।

"कमल के बारे में आपकी क्या ओपीनियन है?" कामेश्वर ने डरते-डरते पूछा।

"तुमसे सैकड़ों बार कह चुका हूँ कि मुझसे खिचड़ी भाषा न बोला करो।" बाबू श्यामसुन्दर क्रुद्ध होकर बोले। "न जाने क्या हो गया है तुम लोगों को कि ठीक से बोल भी नहीं सकते।

कामेश्वर ने सहम कर सिर झुका लिया।

"क्या पूछ रहे थे तुम?" बाबू श्यामसुन्दर ने जोर से पूछा।

"जी, कमल के बारे में आपका क्या विचार है?" कामेश्वर ने धीमे स्वर में पूछा।

"मुझे उसके अतिरिक्त और कोई जँचा ही नहीं? वही घिसी-पिटी शृंगारी भावनायें, वही शब्द-विन्यास, वही शैली, वही अलंकार! कमल में नवीनता है। प्रतिभाशाली तरुण है वह!" बाबू श्यामसुन्दर ने निर्णय दिया।

"तो क्यों नहीं आप उसका कोई संग्रह निकालते हैं?"

बाबू श्यामसुन्दर के मुख पर चमक आ गयी। उत्साह से बोले—"अवश्य निकालूंगा।" फिर दूसरे ही क्षण उदास होकर धीमे स्वर में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहा—"मगर वह देगा भी ?"

"आप उसकी चिन्ता न करें, मामाजी ! संग्रह में ले आऊँगा।"

"तब ठीक है। मुझे जिस दिन पाण्डुलिपि मिल जायेगी उसी दिन प्रेस में दे दूंगा।" कहकर बाबू श्यामसुन्दर उठकर टहलने लगे।

कामेश्वर उठकर बाहर चला गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बारह

शारीरिक क्रियाओं का संचालक मस्तिष्क होता है। हमारे अंग मस्तिष्क के आदेश से ही समस्त क्रियायें करते हैं। हमारी सचेष्ट क्रियायें चेतन मस्तिष्क के आदेशों का परिणाम होती हैं। कुछ क्रियायें ऐसीं भी होती हैं जिनका सम्बन्ध मस्तिष्क से नहीं होता। वे अपने आदेश उपचेतना मस्तिष्क से प्राप्त करती हैं। हमारा उपचेतन मस्तिष्क भी कभी-कभी विचित्र कौतुकों की सृष्टि करता है।

शैलजा ने कालेज जाने के लिए जब कार स्टार्ट की तब उसने स्वप्न में भी न सोचा था कि कार कालेज की ओर न जाकर राममोहन हाते की ओर मुड़ जायेगी। उसके उपचेतन मस्तिष्क में कमल से मिलने, उससे संग्रह देने के विषय में बात करने की बलवती इच्छा थी अवश्य, पर घर से निकलते समय उसने उसके घर जाने का विचार तक नहीं किया था। पुस्तकें लेकर वह कालेज के लिए ही चली थी परन्तु जैसे ही कार उस चौराहे पर पहुँची जहाँ से एक मार्ग कालेज की ओर जाता था और दूसरा कमल के घर की ओर वैसे ही उसके उपचेतन मस्तिष्क ने अपनी लीला दिखा दी। फलस्वरूप उसके हाथों ने कार का स्टियरिंग ह्वील कमल के घर की ओर मोड़ दिया और वह पाँच मिनट बाद ही राममोहन के हाते पहुँच गयी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कार फाटक के पास छोड़कर वह पैदल ही अन्दर गयी। उसे आश्चर्य हो रहा था कि वह कालेज न जाकर यहाँ क्यों आ गयी और साथ ही साथ इस विचित्र घटना पर हँसी भी आ रही थी।

शैलजा कुछ दूर ही चली थी कि उसे सामने से आता हुआ कमल दिखाई दिया। वह प्रसन्न हो उठी। कमल ने भी उसे देख लिया था। उसके मुख पर आश्चर्य के चिन्ह थे।

"कोई परिचित रहता है आपका यहाँ?" कमल ने पास आकर विस्मय से पूछा।

"जी हाँ!" कहकर शैलजा ने मुक्त हास्य बिखेर दिया और फिर कटाक्ष करती हुई बोली। "क्या आप मेरे परिचित नहीं हैं?"

कमल की परेशानी देखकर शैलजा को हँसी आ गयी। कितना भोला है यह सीधी सी बात भी नहीं समझता!

"मैं आपके पास ही आयी हूँ।" शैलजा ने उसकी परेशानी दूर करने के अभिप्राय से कहा।

किन्तु कमल की परेशानी कम होने के बजाय और बढ़ गयी। उसकी समझ में न आया कि उसके पास आने की शैलजा को क्या आवश्यकता पड़ गयी।

"मेरे पास....? आप परिहास कर रही हैं।" कमल ने अपने लम्बे बालों पर हाथ फेरते हुये कहा।

"आपसे परिहास करने की धृष्टता कैसे कर सकती हूँ? मैं आपके पास ही आयी हूँ।" शैलजा ने गंभीरता से कहा। "यहाँ खड़े-खड़े बात करने से अच्छा तो यह है कि आप फाटक के बाहर चले चलें। वहाँ मेरी कार खड़ी है। किसी अच्छी जगह चलकर बातें होंगी।"

कमल घबरा गया। वह ऐसी स्थिति के लिए तैयार नहीं था। बचने की चेष्टा करता हुआ बोला—"देखिये, इस समय मैं बहुत आवश्यक कार्य से जा रहा हूँ। क्षमा कीजिये। फिर कभी बातें कर लेना।"

आपतो इस तरह घबरा रहे हैं जैसे आप लड़की हों और मैं लड़का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहकर शैलजा खुल कर हँस पड़ी।

कमल सकपका गया। घबरायी दृष्टि से उसने गली में इधर-उधर देखा कि कहीं कोई देख तो नहीं रहा है। गली में उस समय कोई नहीं था। उसने सन्तोष की साँस ली।

"चलिये, देवी जी, बाहर चलिये।" कहकर वह तीव्र गति से फाटक की ओर बढ़ा।

शैलजा मुस्करा कर उसके पीछे चल दी।

"कहिये, क्या काम है आपको?" कार के पास रुककर कमल ने पूछा।

"आप बैठिये तो।" कार का द्वार खोलकर शैलजा बोली। "अभी बताती हूँ सब।"

कमल बैठ गया।

शैलजा ने अपने स्थान पर बैठकर कार स्टार्ट कर दी।

"कहाँ ले जा रही हो मुझे?" कमल पूछ बैठा।

"आप तो लड़कियों से भी ज्यादा डरपोक हैं।" शैलजा ने शरारत भरे स्वर में कहा और फिर रुककर बोली। "मुझे बहुत जोर से भूख लगी है। पहले कुछ खा-पी लें, फिर बातें होंगी।"

कमल अपने दुर्भाग्य पर अदृश्य आँसू बहाता चुपचाप बैठा रहा।

कार "क्वालिटी" के सामने जाकर रुक गयी।

"आइये।" नीचे उतर कर शैलजा बोली।

"आप जलपान कर आइये। मैं यहीं बैठा हूँ।" कमल कार के अन्दर से ही बोला।

"जी।"

"मैं भागूँगा नहीं।" कमल ने विश्वास दिलाया।

"आइये भी।" शैलजा ने कमल का हाथ पकड़ कर खींचते हुये कहा। "सीधी तरह नहीं आइयेगा तो गोद में ले जाना पड़ेगा।"

कमल ने हल्का झटका देकर हाथ छुड़ा लिया। वह सिर झुका कर उतर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आया और धीमे स्वर में बोला--"आप क्या कर रही हैं, देवी जी! पहले मेरे वस्त्रों को देखिये और फिर सोचिये कि मुझे अन्दर ले जाना कहाँ तक ठीक है।"

"उन्हें वस्त्रों से नहीं, पैसों से मतलब है। आप आइये तो।"

"एक बार फिर सोच लीजिये। मेरा कुछ नहीं बिगड़ेगा। आपको मुझ जैसे लंगूर के साथ देखकर लोग आपकी हँसी उड़ायेंगे।"

"आप मेरी चिन्ता न करें। मेरी हँसी उड़ाने का साहस किसी में नहीं है।" कहकर शैलजा आगे बढ़ गयी।

कमल भी झिझकता हुआ साथ चल दिया।

'क्वालिटी' जैसा रेस्ट्राँ जनसाधारण की पहुँच के बाहर था। वहाँ तो वही जा सकते थे जो चाय या काफी के बजाय पैसा पीने की सामर्थ्य रखते थे। और पैसों वालों को सुबह इतना अवकाश कहाँ कि 'क्वालिटी' में बैठकर समय नष्ट करें! इसलिए 'क्वालिटी' का हाल शाम को तो हँसी और कहकहों से गूँजा करता था पर सुबह प्रायः खाली ही रहता था। उस दिन भी हाल में शान्ति थी। कोने की मेज पर बैठी एक एंग्लो इन्डियन दम्पत्ति के अतिरिक्त हाल में कोई न था। शैलजा और कमल दूसरे कोने में जाकर बैठ गये।

शैलजा को रेस्ट्राँ के सभी बैरे जानते थे। स्वयं मैनेजर उससे परिचित था क्योंकि वह वहाँ बहुधा जाया करती थी---कभी अकेले, कभी कमलेश्वर के साथ। कभी-कभी शकुन और रायबहादुर के साथ भी चली जाती थी। जैसे ही शैलजा और कमल गद्दीदार कुर्सियों पर बैठे वैसे ही मैनेजर अपने स्थान से उठकर वहाँ आ गया।

"गुड मार्निंग, मिस!" शैलजा के अजीब से साथी को देखकर जो आश्चर्य उसे हो रहा था उसे छिपाने की चेष्टा करता हुआ वह बोला।

"गुड मार्निंग।" शैलजा ने मृदु मुस्कान सहित कहा। "प्लीज सेन्ड केक्स, पैस्ट्री, सैन्डविचेज एन्ड काफी।"

मैनेजर ने वहीं से एक बैरे को आदेश दे दिया और फिर वह कमल पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उलझन भरी दृष्टि डालकर अपने स्थान पर चला गया।

बैरा एक बड़ी प्लेट में केक्स, पैस्ट्री और सैन्डविचेज लाकर रख गया।

"खाइये।" शैलजा ने सहज स्वर में कमल से कहा।

"भूख मुझे नहीं, आपको लगी है।" कमल का रूखा उत्तर था।

शैलजा की मीन जैसी चंचल आँखों में स्थिरता आ गयी; उसके चाँद जैसे चेहरे पर उदासी की घटा छा गयी। कमल का रूखा व्यवहार उसे बुरा लगा। फिर भी अपने को संयत करके धीमे स्वर में बोली :—

"क्या आप चाहते हैं कि इन सबके सामने मैं आपको अपने हाथ से खिलाऊँ ?"

कमल उसकी ओर देखता भर रहा।

"खाइये।" कहकर उसने एक पेस्ट्री कमल के हाथ में थमा दी और फिर प्लेट से दूसरी पेस्ट्री उठाकर स्वयं खाने लगा।

कमल भी अनिच्छा से खाने लगी।

बैरा काफी और क्रीम रख गया।

शैलजा ने काफी बनाकर एक प्याली कमल के सामने खिसका दी और दूसरी अपने अधरों से लगा ली।

कमल सिर नीचा किये खाता-पीता रहा।

शैलजा कनखियों से उसकी ओर देखती रही।

"आपका गीत हम सबको बहुत पसन्द आया।" जलपान के बाद शैलजा ने अपनी उँगली में पड़ी हीरे की अँगूठी से खलते हुये कहा।

"धन्यवाद।" कमल के स्वर में रूखापन था। "क्या यही कहने के लिए आपने कष्ट किया है ?"

कमल की बात सुनकर शैलजा हँस पड़ी।

"लगता है रूखापन आपका स्वभाव बन गया है।" शैलजा अपनी हँसी रोककर एक क्षण बाद बोली। "बात यह है कि कल की गोष्ठी में एक प्रकाशक भी थे। उन्हें आपकी रचना बहुत पसन्द आयी है। वे आपकी कविताओं का संग्रह निकालना चाहते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"मैं अभी अपना कोई संग्रह प्रकाशित कराना ही नहीं चाहता।"

"यह सुनहला मौका हाथ से न खोइये। बाबू श्यामसुन्दर प्रान्त के प्रमुख प्रकाशक हैं। बड़े-बड़े साहित्यिक उन्हें अपनी कृतियाँ देने के लिए लालायित रहते हैं।" वह समझाने के ढंग से बोली।

"रहते होंगे।" कहकर कमल अधगोरी दम्पत्ति की ओर देखने लगा।

"मैं आपकी ओर से उन्हें वचन दे चुकी हूँ।" शैलजा ने कहा और वह कमल की ओर आशा भरी दृष्टि से देखने लगी।

"अपनी ओर से वचन देने के लिए मैंने कभी आपको अनुमति दी हो ऐसा मुझे स्मरण नहीं है।" कमल झुंझलाकर बोला।

शैलजा तिलमिला उठी। उसे लगा कि कमल उसका जान-बूझ कर निरादर कर रहा है, अपमान कर रहा है। उसका गोरा चेहरा लाल हो उठा।

"आपने कभी अनुमति तो नहीं दी थी पर मैंने जो कुछ किया आपकी भलाई और भविष्य को ही ध्यान में रखकर किया है।"

"मेरे भविष्य का ध्यान रखने वाला भी कोई है। यह जानकर मुझे हर्ष हुआ।" कमल ने उत्तर दिया। "पर मेरे लिए क्या अच्छा और क्या बुरा है यह आपसे अधिक मैं जानता हूँ।"

"बैरा, बिल लाओ।" कहकर शैलजा अपना बैग टटोलने लगी।

कमल चुपचाप बैठा रहा।

बैरा बिल ले आया। बिल तीन रुपये ग्यारह आनेका था।

शैलजा ने पाँच रुपये का नोट प्लेट पर रख कर कहा—"बाकी तुम ले लेना।" बैरा ने प्लेट उठा ली और वह झुककर सलाम करके चला गया

"आज हम लोग बोटिंग के लिए जा रहे हैं। चलेंगे?" शैलजा ने पूछा।

"नहीं।"

"चाँदनी रात में गंगा की लहरों पर खेलना आपको अच्छा नहीं लगता? चलिये न! नये-नये भाव उत्पन्न होंगे; नयी-नयी प्रेरणायें मिलेंगी।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शैलजा के स्वर में आग्रह था।

"प्रेरणा प्राप्त करने के लिए मेरे चारों ओर दुख, दर्द, निर्धनता, बेकारी, भूख और बीमारी ही यथेष्ट है। चाँद और चाँदनी की प्रेरणा उन कवियों को चाहिए जिनके लिए लिखना धर्म नहीं, फैशन है।" कमल आवेश में आकर बोला। "मैं कल्पना का नहीं, जीवन का गायक हूँ। मैं आकाश के चाँद को नहीं देखता, मेरा काम धरती के उन लाखों-करोड़ों चाँदों को देखना है जिनकी चाँदनी चन्द लोगों की तिजोरियों में बन्द है, जिनपर बेबसी के बादलों का पहरा है, जिन्हें आँसुओं का राहु दिन-रात ग्रसे रहता है। यदि आप अपने को साहित्यिक समझती हैं, यदि आप एक सच्चे कलाकार का धर्म पूरा करना चाहती हैं तो कल्पना के सपनों की गोद छोड़कर जीवन के कठोर सत्य को पहचानिये। आइये, मैं आपको ऐसे प्रेरक दृश्य दिखाऊँगा जिनकी कल्पना कभी आपने स्वप्न में भी न की होगी। फिर... फिर आपको अपने कृत्रिम जीवन से ग्लानि हो जायेगी; पिकनिकें, पार्टियाँ फिर आपको निरर्थक लगने लगेंगी। बोलिये, साहित्यकार का कर्त्तव्य पूरा करने का साहस है आप में? और....और यदि नहीं है तो लिखना बन्द कर दीजिये। व्यर्थ में समय नष्ट करने से कोई लाभ नहीं है?"

बोलते-बोलते कमल हाँफने लगा।

शैलजा को कमल की बातें विचित्र सी लगीं। उसकी समझ में न आया कि काव्य का भूख, दुख, दर्द, गरीबी और बेबसी से क्या सम्बन्ध है! काव्य ललित कला है! यह आवश्यक नहीं कि कविता में आँसुओं का ही राग हो! बँगले में रहकर, कार में घूमकर, डान्स-डिनर का आनन्द लेकर भी कविता लिखी जा सकती है। कविता के लिए वह जीवन के वे सुख-साधन क्यों छोड़े जो उसे भाग्य ने दिये हैं? वह समस्त साधनों का भोग करती हुई तीन-चार सालों से लिख रही है और उसके गीतों की प्रशंसा प्रोफेसर इन्द्र जैसे कट्टर आलोचकों ने की है! नहीं, कविता का काम रोना-रुलाना ही नहीं है, हँसना-हँसाना भी है!

शैलजा सोच रही थी और कमल ध्यान से उसके मुख की ओर देख

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर उसकी भावनाओं को पढ़ने का प्रयास कर रहा था।

"चलिये! काफी देर हो गयी है।" कहकर शैलजा खड़ी हो गयी।

कमल भी खड़ा हो गया।

दोनों द्वार की ओर बढ़े। दोनों ही मौन थे।

"आइये आपको घर तक छोड़ दूँ।" कार का द्वार खोलकर शैलजा बोली।

"धन्यवाद! मैं पैदल ही चला जाऊँगा।" कमल के उत्तर में निश्चय की दृढ़ता थी।

"क्या कार पर बैठने से आपकी कविता को ठेस लगेगी?" शैलजा के स्वर में व्यंग्य का पुट था।

कमल ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह पैदल ही फूलबाग की ओर चल दिया।

शैलजा चिढ़ गयी। कार पर बैठकर उसने द्वार जोर से बन्द किया और कार स्टार्ट कर दी। वह कमल की ओर दृष्टि डाले बिना ही आगे निकल गयी।

कमल की रूखी और गर्वपूर्ण बातों से शैलजा का मूड खराब हो गया था। उसकी इच्छा हुई कि कामेश्वर की मीठी और चिकनी-चुपड़ी बातें सुने। फलस्वरूप वह घर न जाकर कालेज गयी, परन्तु जब कामेश्वर दिखाई न दिया तब उसे बहुत निराशा हुई। झुंझलाकर उसने कार घर की ओर बढ़ा दी।

घर पहुँच कर उसने फोन उठाकर कामेश्वर का नम्बर मिलाया। दैवात् फोन कामेश्वर ने ही उठाया।

"आज कालेज क्यों नहीं गये?" शैलजा ने पूछा।

"और तुम क्यों नहीं गयीं?" कामेश्वर का स्वर आया।

"यह मेरे सवाल का जवाब तो नहीं है। खैर, हाँ, बोटिंग का प्रोग्राम पक्का है न?" शैलजा ने हँसकर पूछा।

"एक दम पक्का! ठीक सात बजे में गाड़ी लेकर आऊँगा। तुम तैयार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रहना।" कामेश्वर की आवाज आयी।

"मैं बेचैनी से तुम्हारा इन्तजार करूँगी।"

"और तभी मैं तुम्हें एक गुड न्यूज सुनाऊँगा।" कामेश्वर का मीठा स्वर आया और फिर फोन कट गया।

फोन रखकर, बैग झुलाती हुई जब शैलजा अपने कमरे की ओर बढ़ी तब उसके मन का उल्लास उसके अधरों से निकलने वाले गीत की धीमी लय में पूर्णतया व्यक्त हो रहा था।

× × ×

कमल को लगा कि उसके पेट में भयंकर आग जल रही है और जो कुछ उसने खाया-पिया है वह उबल कर उसके गले में अटक रहा है। उसने बहुत बेचैनी का अनुभव किया। उसकी आँतों में विचित्र सी ऐंठन हो रही थी। शैलजा के साथ बैठकर, उसके पैसों से खाने-पीने के लिए उसे अपने पर क्रोध आ रहा था; आत्मग्लानि की ज्वाला उसे दग्ध कर रही थी।

रामनारायण बाजार पहुँचते-पहुँचते वह थक सा गया। उसके लिए एक पग भी उठाना कठिन हो रहा था। एक एकान्त में जाकर वह नाली के पास बैठ गया और हलक में उँगली डाकर उसने उल्टी की। वमन करने के बाद उसने गली के नुक्कड़ पर लगे नगरपालिका के नल से हाथ-मुंह धोया।

हाथ-मुंह धोकर जब वह राममोहन के हाते की ओर बढ़ा तब वह काफी हल्कापन अनुभव कर रहा था।

उसे लगा कि वह अब प्रसन्न और स्वस्थ है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तेरह
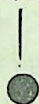
बाबू श्यामसुन्दर अपने कमरे में बेचैनी से टहल रहे थे। बारबार उनके मस्तिष्क में यही विचार आता था कि उन्होंने शादी के लिए पत्र में विज्ञापन देकर अच्छा नहीं किया है। इस ढलती अवस्था में शादी करने से लोग उन पर हँसेंगे, पीठ-पीछे तरह-तरह की बातें करेंगे। शायद गोमती को भी बुरा लगे। परन्तु....परन्तु किया क्या जाये? कामेश्वर के द्वारा अपने जीवन भर की कमाई को नष्ट होने देना भी तो ठीक नहीं है!

गोमती जब दूध लेकर आयी तब वे विचारमग्न होकर टहल रहे थे। दूध का गिलास मेज पर रखकर वह उनकी ओर प्रश्न भरीद दृष्टि से देखने लगी।

बाबू श्यामसुन्दर ने दूध पीकर गिलास फिर मेज पर रख दिया।

"क्या बात है, भैया? कुछ परेशान नजर आते हो।" गोमती ने धीमे स्वर में पूछा।

"परेशान? नहीं तो।" चौंककर, रूखी हँसी हँसते हुये बाबू श्यामसुन्दर बोले।

"कोई बात जरूर है।" दूध का गिलास उठाकर उसने कहा। "बताओ, भैया! क्या बात है?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"कुछ भी नहीं! यूँही जरा कामेश्वर के बारे में सोच रहा था।"

"उसकी फिकर न करो, भैया! मैंने उसे समझा दिया है।" गोमती ने आश्वासन दिया।

"समझा तो कई बार चुकी हो, मगर वह माने तब न।" कहकर बाबू श्यामसुन्दर फिर टहलने लगे।

"मानेगा कैसे नहीं? और फिर उसे ठीक करने का एक रास्ता और भी है।"

"क्या?"

"शादी!" गोमती ने सहज स्वर में कहा।

शादी के नाम से बाबू श्यामसुन्दर चौंक से पड़े। वे फटी हुई आँखों से गोमती की ओर देखने लगे।

"हाँ! जल्द से जल्द उसकी शादी कर दो। बस, फिर बहू अपने आप ठीक कर लेगी उसे।" कहकर गोमती हँस पड़ी।

तभी नौकर सुबह की डाक दे गया।

अधिकांश पत्र उनके व्यक्तिगत नाम और प्रकाशन संस्था के नाम के थे। एक लिफाफे पर पोस्ट-बाक्स का पता था।

बाबू श्यामसुन्दर को यह समझते देर न लगी कि वह पत्र उनके विज्ञापन के उत्तर में है। पत्र खोलते समय उनके हाँथ काँपने लगे। उन्हें लगा कि वे कोई बहुत भारी अपराध करने जा रहे हैं।

गोमती की तीव्र दृष्टि उनके मुख की ओर ही लगी थी। उसने उनके हाथों का काँपना भी देखा। उसने अनुमान लगाया कि दाल में अवश्य कुछ काला है, परन्तु क्या बात है वह यह न समझ सकी। वास्तविकता जानने के लिए उसकी नारी-सुलभ जिज्ञासा जागरूक हो उठी।

पत्र खोलकर बाबू श्यामसुन्दर पढ़ने लगे। पढ़ते समय उनके मुख पर कई रंग आये और गये। गोमती उन रंगों का अर्थ समझने का प्रयास करती रही।

पत्र समाप्त करके बाबू श्यामसुन्दर फिर टहलने लगे। पत्र उन्होंने जेब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में रख लिया। गोमती ने समझा कि उनकी बेचैनी बढ़ गयी है और उस पत्र को पढ़ कर वे और अधिक उद्विग्न हो उठे हैं।

"चिट्ठी में कोई ऐसी-वैसी बात तो नहीं है, भैया ?" साहस करके गोमती पूछ ही बैठी ।

"नहीं, नहीं तो।" कहकर वे शिथिल से आराम कुर्सी पर बैठ गये।

वे सोच रहे थे कि क्यों न गोमती को अभी सब-कुछ बता दिया जाये। उससे पत्र के बारे में राय ली जा सकती है! पहले से ही उनके मन में द्वन्द की आँधी चल रही थी पर उस पत्र ने उस आँधी को और भी तेज कर दिया था और उस वेग की तीव्रता में उन्हें अपने पैर उखड़ते से मालूम हो रहे थे।

"मुझसे कोई बात न छिपाओ, भैया! मैं देख रही हूँ, कल से परेशान हो।" कहकर गोमती उनके समीप ही बैठ गयी।

"मैंने....मैंने....शादी करने का निश्चय किया है।" बाबू श्यामसुन्दर बड़ी कठिनाई से कह सके।

गोमती को अपने कानों पर विश्वास न हुआ। वह आश्चर्य से उनकी ओर देखती रही।

"मैं ठीक कह रहा हूँ, गोमती! मैंने शादी के लिए समाचार-पत्र में विज्ञापन दिया था और यह पत्र उसी के उत्तर में आया है। मुझे....मुझे तुमसे कुछ राय लेनी है इस बारे में।"

गोमती उनकी बातें न तो ठीक से सुन ही सकी और न समझ ही सकी। उसकी सभी इन्द्रियाँ जैसे सुन्न हो गयी हों! उसके सामने तो कामेश्वर के भविष्य की बरबादी, अपनी योजनाओं के खँडहरों का ही दृश्य था। वह बेचैन हो उठी थी, परेशान हो उठी थी। उसने सोचा था कि उसका बेटा अगाध सम्पत्ति का स्वामी होकर राजसुख भोगेगा, पर यह क्या हो गया?

गोमती ने अपने को संयत रखने की लाख चेष्टा की, पर चिन्ता की रेखायें मस्तक पर खिंच ही गयीं। बाबू श्यामसुन्दर ने उन रेखाओं को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देखकर गोमती के मनोभावों को समझा।

"तुम चिन्ता न करो, गोमती। तुम लोगों को किसी शिकायत का मौका नहीं मिलेगा। जैसे अब रहती हो, वैसे ही बाद में भी रहना!" बाबू श्यामसुन्दर समझाने के ढंग से धीमे स्वर में बोले।

"इसमें चिन्ता की क्या बात है? मैं तो खुश हूँ, बहुत खुश हूँ।" गोमती अपने मन के भावों को छिपाने की चेष्टा करती हुई हँसकर बोली। "मेरी इच्छा कई बार हुई कि आपसे व्याह कर लेने के लिए कहूँ मगर डर के मारे कह न सकी! चलो, ठीक ही है! घर में भाभी आ जायेंगी तो मेरा भार हल्का हो जायेगा।"

"भार तो तब भी तुम्हारे ऊपर ही रहेगा, बल्कि और बढ़ ही जायेगा।" बाबू श्यामसुन्दर धीमे स्वर में बोले। एक क्षण रूककर उन्होंने फिर कहा—"मैं तो चाहता था कि कोई कुलीन विधवा मिल जाती तो अच्छा था, मगर. . . . मगर जो पत्र आज आया है वह कुमारी कन्या का है।"

"विधवा तो वह खोजे जिसे क्वाँरी लड़कियाँ न मिलें। हाँ, क्या उमर है लड़की की?" गोमती ने प्रसन्नता प्रदर्शित करते हुए पूछा।

"अठारह साल!"

गोमती प्रसन्न हो उठी। उसका दुख कम हो गया। उसने सोचा कि अठारह साल की भोली-भाली नादान छोकरी को उँगली के इशारों पर नचाना कठिन नहीं होगा।

"ठीक है। ज्यादा सयानी लड़की लाना भी ठीक नहीं।"

"मगर लोग क्या कहेंगे?" बाबू श्यामसुन्दर ने शंका की।

"लोगों की क्या है? वे तो बकते ही रहते हैं।" गोमती ने शंका का समाधान कर दिया।

"शायद तुम ठीक कहती हो गोमती।" कहकर बाबू श्यामसुन्दर गंभीर हो गये।

गोमती उनकी ओर निर्निमेष दृष्टि से देखती रही।

"वैसे शायद मैं इस लड़की से शादी न करता," कुछ देर बाद एक दीर्घ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निःश्वास छोड़कर बाबू श्यामसुन्दर बोले। "मगर उसका पत्र पढ़कर मैंने निश्चय कर लिया है कि व्याह उसी से करूँगा। बिचारी बहुत गरीब घर की है। माँ-बाँप हैं नहीं। भाई दहेज दे नहीं सकता।"

"तब तो उसका उद्धार करके पुन्य के भागी जरूर बनो, भैया।" गोमती के स्वर में आग्रह था। बाबू श्यामसुन्दर केवल 'हूँ' कहकर रह गये।

गोमती प्रसन्न-चित्त बाहर चली गयी। गरीब घर की एक नादान छोकरी को बुद्धू बनाकर अपना उल्लू सीधा करना कोई कठिन कार्य नहीं होगा, ऐसा उसका विश्वास था।

तभी गैलरी में कामेश्वर का स्वर आया। बाबू श्यामसुन्दर चौंक पड़े।

"अभी तक कालेज नहीं गये, कामेश्वर?" उन्होंने ऊँचे स्वर में पूछा।

"आज कालेज बन्द है, मामाजी।" कहकर कामेश्वर अन्दर आ गया और विनयपूर्वक सिर झुकाकर खड़ा हो गया।

"रोज कालेज बन्द रहता है! पढ़ाई क्या खाक होती होगी।" बाबू श्यामसुन्दर बड़बड़ाये।

"मामाजी!" धीमे स्वर में कामेश्वर बोला।

"क्या है?"

"आज शाम को मुझे बड़ी गाड़ी चाहिए।" विनीत स्वर में कामेश्वर ने कहा।

"क्यों?"

"कालेज के विद्यार्थी पिकनिक पर जा रहे हैं।"

"अच्छा! ले जाना। मैं छोटी गाड़ी से काम चला लूँगा।"

कामेश्वर प्रसन्न होकर बाहर चला गया।

बाबू श्यामसुन्दर ने जेब से वही पत्र निकाला और फिर उसे ध्यान से पढ़ने लगे। बार-बार उनकी दृष्टि पत्र भेजने वाली के नाम पर केन्द्रित हो जाती थी। तीन अक्षरों के उस नाम के वृत में ही सीमित उन्हें अपना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

संसार लगने लगा।

वह तीन अक्षरों का नाम था—सरला।

× × ×

ललित जब मील से घर पहुँचा तब काफी थका हुआ था। जूते उतार कर वह आँगन में पड़ी चारपाई पर लेट गया।

"बाबूजी! हमारे लिए क्या लाये?" पूछता हुआ मुन्ना भी उसके पास आकर बैठ गया।

"अरे, क्यों परेशान करने पहुँच गया उन्हें? इधर आ!" डाँट कर दया ने मुन्ना को बुलाया।

मुन्ना सहमकर ललित की ओर देखने लगा।

"बैठे रहो, बेटे!" कहकर ललित ने प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरा।

तभी बाहर से किसी ने द्वार खटखटाया।

सरला कमरे में थी, दया बरामदे के चौके में। ललित उठकर द्वार खोलने गया।

बाहर बाबू श्यामसुन्दर को खड़ा देखकर ललित को आश्चर्य हुआ। बाबू श्यामसुन्दर भी ललित को देखकर सकपका गये।

"यह....यह आपका ही घर है?" बाबू श्यामसुन्दर ने आश्चर्य से पूछा।

"जी, हाँ।"

"स.... र.... ला.....।"

"वह मेरी बहन है। कल आपने उसे रायबहादुर साहब के यहाँ देखा होगा। वह शकुन जी के साथ बैठी थी।"

"जरा मेरे साथ बाहर आइये। कुछ बातें करनी हैं आपसे।"

ललित घबरा गया। उसकी समझ में नहीं आया कि बाबू श्यामसुन्दर क्यों आये हैं, उन्होंने सरला का नाम क्यों लिया है और वे उससे क्या बातें करेंगे। जूते पहन कर वह शंकित हृदय और कम्पित पैरों से उनके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साथ चल दिया।

गली के छोर पर बाबू श्यामसुन्दर की कार खड़ी थी। वे द्वार खोलकर उसमें बैठ गये। उनका संकेत पाकर ललित भी उनके पास बैठ गया।

"तुमने मुझे कल गोष्ठी में देखा होगा। मैं कामेश्वर का मामा हूँ।" बाबू श्यामसुन्दर ने धीमे स्वर में [कहा। "मैं एक उलझन में पड़ गया हूँ और उसे सुलझाने के लिए तुम्हारी राय चाहता हूँ।"

"मैं....मैं...क्या राय दे सकता हूँ आपको?" ललित ने कहा।

"दे सकते हो। पहले मेरी समस्या तो सुन लो। बात यह है....।" और फिर क्षण भर के लिए वे रुक गये मानों यह सोच रहे हों कि बात किस प्रकार शुरू की जाये। "बात यह है कि कामेश्वर की हरकतों से ऊब कर..,"

"जी....।" बीच में ही ललित के मुख से निकल गया।

"ओह! देखो, समझ में नहीं आता बात कैसे शुरू करूँ।" परेशानी के स्वर में बाबू श्यामसुन्दर बोले। "कामेश्वर मेरी विधवा बहन का पुत्र है। दोनों मेरे साथ ही रहते हैं। मैंने सोचा था कि कामेश्वर को ही कानूनी तरीके से गोद लेकर अपनी सारी सम्पत्ति उसके नाम कर दूंगा। मगर... मगर...वह बुरी संगत में पड़ गया है। बताओ, जब वह मेरे सामने ही पैसे को पानी की तरह बहाने लगा है तब मेरे पीछे क्या करेगा।"

बाबू श्यामसुन्दर ललित के मुख की ओर देखने लगे।

ललित मौन रहा। उसकी समझ में नहीं आया कि इन सब बातों से उसका क्या सम्बन्ध है और बाबू श्यामसुन्दर उसी से राय लेने क्यों आये हैं।

"मैंने कामेश्वर को समझाने की बहुत चेष्टा की पर उसकी समझ में कुछ आता ही नहीं। वह सुरा और सुन्दरियों के पीछे पागल हो रहा है। इसीलिए मैंने विवश होकर यह निश्चय किया है कि उसे अपने उत्तराधिकार से वंचित ही रक्खूँ।"

"निश्चय तो ठीक है आपका। सच तो यह है कि सारे पापों की जड़ पैसा ही है।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बाबू श्यामसुन्दर ने उसकी उक्ति का प्रतिवाद नहीं किया। वे बोले—"अब प्रश्न यह है कि फिर अपना उत्तराधिकारी किसे बनाऊँ?"

"यदि आप चाहें तो अपनी सम्पत्ति दान कर सकते हैं।" ललित ने साहस करके धीमे स्वर में सुझाव दिया।

बाबू श्यामसुन्दर ने ललित की ओर देखा और फिर एक क्षण बाद गंभीर स्वर में बोले—"तुम शायद पैसे का मूल्य नहीं जानते इसीलिए दान करने का सुझाव दे रहे हो! मैं जानता हूँ क्योंकि मैंने दिन-रात एक करके पैसा कमाया है। मैं वे दिन भूला नहीं हूँ जब मैं पाई-पाई के लिए मोहताज था। नहीं, अपनी गाढ़ी कमाई को मैं दान नहीं कर सकता।"

"मैं क्षमा चाहता हूँ.....।" कहकर ललित हाथ मलने लगा।

"मेरी बात का बुरा न मानना। तुम अभी बच्चे हो। मैंने दुनिया देखी है, मैं ऊँच-नीच समझता हूँ। मैं चाहता हूँ कि मेरे परिश्रम के फल का भोग मेरी सन्तान करे और इसीलिए मैंने दूसरी शादी करने का निश्चय किया है। बोलो, मेरा निश्चय गलत तो नहीं है?"

ललित की समझ में न आया कि वह क्या उत्तर दे।

"शायद तुम सोच रहे हो कि मैं तुमसे यह सब क्यों पूछ रहा हूँ!"

रँगे हाथों पकड़े जाने पर चोर की जो दशा होती है वही दशा ललित की हो गयी। घबराकर बोला—"नहीं, नहीं! ऐसी बात नहीं है। आपका निश्चय ठीक ही है।"

"मैंने दैनिक 'विश्वमित्र' में विज्ञापन दिया था और उसके उत्तर में मुझे एक पत्र मिला है। वह पत्र.... वह पत्र तुम्हारी बहन सरला का है। कहकर बाबू श्यामसुन्दर ने सन्तोष की साँस ली मानो एक भारी बोझ उनकी छाती से उतर गया हो।

ललित को चक्कर आ गया। उसे लगा, जैसे हजारों बिच्छुओं ने उसे एक साथ डस लिया है और वह उनके डंकों के तीव्र विष के प्रभाव से मूर्च्छित हुआ जा रहा है।

"जी....।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"मैं ठीक कह रहा हूँ। यह देखो।" कहकर बाबू श्यामसुन्दर ने पत्र अपनी जेब से निकालकर ललित के हाथ पर रख दिया।

ललित बड़ी कठिनाई से पत्र पढ़ सका।

"और पत्र में जो कुछ लिखा है उसे ध्यान में रखते हुये मैंने सरला से शादी करने का निश्चय कर लिया है। मैं कल ही तुम्हारी बच्ची के नाम बैंक में दस हजार रुपये जमा कर दूँगा।

"मुझे नहीं चाहिए आपके रुपये!" ललित चीख पड़ा। "मैं बहन को बेचने वाला नहीं हूँ।"

ललित ने दाँत पीसते हुये पत्र फाड़कर कार के बाहर फेंक दिया।

"कौन कहता है तुम बहन को बेच रहे हो!"

"दुनिया कहेगी। आपको ऐसे शब्द मुंह से निकालने में लज्जा नहीं आयी? आश्चर्य है! यदि आपको शादी ही करनी है तो किसी विधवा से कीजिये।" ललित आवेश के कारण काँप ने लगा।

"सोचा तो मैंने भी यही था पर क्या करूँ? पत्र तुमने स्वयं पढ़ लिया है। मैंने सारी स्थिति तुम्हारे सामने रख दी। तुम समझदार हो, आशा है मुझे गलत न समझोगे।" संयत स्वर में कहकर बाबू श्यामसुन्दर ने ललित के कन्धे पर हाथ रक्खा।

ललित की आँखों में आँसू आ गये।

"रोना कायरता है हमें जीवन के कटु सत्यों का सामना हँस कर करना चाहिए। क्या...क्या तुम चाहते हो कि तुम्हारी बहन आत्म-हत्या कर ले?"

ललित फूट-फूट कर रोने लगा।

"मेरी स्वयं समझ में नहीं आता कि क्या करूँ! मैं अपने को उस देवी के सर्वथा अयोग्य पाता हूँ जो परिवार के सुख और नन्हीं भतीजी के भविष्य के लिए इतना महान् त्याग कर रही है।" कहते-कहते बाबू श्यामसुन्दर सहसा रुक गये। उनका स्वर कुछ काँप-सा गया। खांस कर फिर बोले—"अच्छा, एक बात बताओ'! यदि मैं तुम्हें सरला की शादी किसी योग्य

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वर से करने के लिए रुपये दूँ तो क्या तुम स्वीकार करोगे ?"

ललित आँसू भरी दृष्टि से उनकी ओर देखने लगा।

"बोलो, उत्तर दो।"

"मेरा अपमान न कीजिये। मैं निर्धन अवश्य हूँ, पर भिखारी नहीं।" ललित ने दुखी स्वर में कहा।

"तब क्या बहन को जीवन भर क्वाँरी रक्खोगे ? उस भावना को समझने की चेष्टा करो जिससे प्रेरित होकर सरला ने पत्र लिखा। जाओ और शान्त चित्त से इस पर सोचो। मैं. . . .मैं. . . .हर तरह से तैयार हूँ।"

ललित ने शिथिल हाथ से कार का द्वार खोला और नीचे उतर कर खड़ा हो गया।

"भाई, अगर मेरी किसी बात से तुम्हारे चित्त को दुख पहुँचा हो तो क्षमा करना।" कहकर बाबू श्यामसुन्दर ने कार का द्वार बन्द कर लिया।

ललित सिर झुकाये, भारी पैरों घर की ओर चल दिया। उसे लग रहा था कि उसके शरीर में जीवन-शक्ति नहीं रह गयी है। अपनी बेबसी, अपनी सीमाओं पर उसे क्रोध आ रहा था और उस व्यवस्था के प्रति उसके हृदय में विद्रोह की चिनगारी सुलग रही थी जो एक को बड़ा तथा दूसरे को छोटा बनाती है, जो मनुष्य-मनुष्य के बीच में गहरी खाई और ऊँची दीवार का निर्माण करती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चौदह

सरला थी तो कमरे में परन्तु उसके कान द्वार की ओर ही लगे थे। जैसे ही बाबू श्यामसुन्दर ने द्वार खटखटाया उसका हृदय जोर से धड़कने लगा। उसके मन ने कहा कि हो न हो ये जरूर वही हैं जिन्होंने शादी का विज्ञापन किया था। जब ललित उनके साथ बाहर चला गया तब तो उसकी धारणा और भी पक्की हो गयी थी। वह बेचैनी से कमरे में टहलने लगी। उसके मानस में भयंकर प्रभंजन था।

अत्यन्त व्याकुलता और व्यग्रता से वह ललित के लौटने की प्रतीक्षा करने लगी। दया ने उसकी आकुलता को देखा पर वह उसका कारण न समझ सकी। सरला कमरे से निकल आयी। उसका दम घुटने सा लगा था। आँगन में आकर वह कुछ स्वस्थ हुई। दया के हाथ चौके के काम में व्यस्त रहे पर उसकी आँखें सरला की ओर ही लगी रहीं।

जब ललित ने धीरे से द्वार खटखटाया तब सरला को लगा कि जैसे उसकी छाती पर किसी ने घूँसा मारा हो। वह शिथिल होकर चारपाई पर बैठ गयी।

"खोलो!" बाहर से ललित का थका सा स्वर आया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दया ने सरला की ओर देखा।

सरला उठकर द्वार की ओर गयी और कम्पित हाथ से उसने द्वार खोल दिया।

ललित अन्दर आया। सरला को देखकर उसे रुलाई आ गयी। किसी प्रकार अपने को संयत करके वह चारपाई पर बैठ गया।

सरला जब कमरे की ओर चली तब उसे लगा जैसे उसके पैर जवाब दे रहे हैं।

"यहाँ आओ, सरला।" तभी ललित ने टूटेस्वर से पुकारा।

सरला मन्द गति से जाकर फर्श पर बैठ गयी।

"सरला, यह. . . . यह तुमने क्या किया ?" और ललित अपनी बाहों में मुंह छिपा कर बच्चों की तरह फूट-फूट कर रोने लगा।

दया घबरा कर ललित के पास पहुँची। उसने समझा कि सरला कोई ऊँच-नीच काम कर बैठी है। फर्श पर बैठकर वह सरला की पीठ पर हाथ फेरने लगी।

सरला सिर झुकाये बैठी थी मानो उसे काठ मार गया हो।

ललित की आन्तरिक पीड़ा सिसकियों के रूप में बाहर निकलती रही।

"अगर सरला कुछ ऐसा-वैसा काम कर बैठी है तो उसमें दोष उसका नहीं, तुम्हारा है। सालों से समझा रही हूँ कि उसके हाथ पीले करने की फिकर करो।" दया के धीमे स्वर में क्षोभ की झलक थी। "अब रोते हो। जवान बहन. . . . . .।"

"क्या बक रही हो ?" ललित बीच में ही कड़े स्वर में बोला। "तुम लोगों का ध्यान हमेशा बुराई की ओर ही जाता है।"

ललित की डाँट से दया सहम गयी। उसने समझ लिया कि उसका विचार सही नहीं है। सरला ने कोई ऐसा-वैसा काम नहीं किया है!

"सरला, तुमने भैया की बेबसी को चुनौती देकर अच्छा नहीं किया।" ललित फिर रुद्ध कंठ से बोला।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सरला मौन रही।

दया मौन न रह सकी। पूछा—"आखिर क्या किया है सरला ने? कुछ मुझे भी तो बताओ।"

और ललित ने थके, टूटे और दुखी स्वर में दया को सब कुछ बता दिया।

"सरला, यह क्या सूझा है तुम्हें? क्यों अपनी जान देने पर उतारू हो?" दया ने दुखी स्वर में पूछा।

"ऐसा न कहो, भाभी!" सरला ने अवरुद्ध कंठ से कहा।

"एक बूढ़े के साथ ब्याह करके तुम्हें सुख मिल सकेगा? क्या जान-बूझकर कुँये में कूद रही हो?" दया ने फिर समझाया।

"मैंने जो कुछ किया है सोच समझ कर किया है, भाभी! जिसे तुम कुँये में कूदना कहती हो वही मेरे लिए जीवन है।" सरला ने धीमे किन्तु दृढ़ स्वर में कहा।

"मैं जानता हूँ कि तुम जो कुछ कर रही हो, हम लोगों के लिए कर रही हो। मगर...मगर मैं तुम्हें ऐसा नहीं करने दूँगा।" ललित बोला।

"मेरा निश्चय अटल है, भैया! जो रास्ता मैंने चुना है उसके अतिरिक्त मेरे लिए और कोई मार्ग है ही नहीं।" कहकर सरला धीमी गति से कमरे में चली गयी।

"वह हमें चिन्ता से मुक्त करने के लिए अपनी बलि दे रही है, दया। और...और...मुन्नी के भविष्य के लिए भी....!" बोलते-बोलते ललित की आँखों में आँसू आ गये। "यह...यह सब मेरी बेबसी, मेरी गरीबी का ही फल है। अगर मैं दहेज देकर उसका ब्याह करने लायक होता तो उसे ऐसा क्यों करना पड़ता।" और ललित सिसकने लगा।

"मैं तो पहले ही कहती थी कि न हो तो शकुन से ही रुपये ले लो मगर तुम मेरी बात सुनो तब न! अब रोने-धोने से क्या होगा!" दया बोली।

शकुन का नाम सुनकर ललित में नयी चेतना आ गयी। विद्युत-वेग से उठकर वह द्वार की ओर बढ़ा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"अब कहाँ जा रहे हो ?" दया ने पूछा।

"शकुन को बुलाने। शायद उसके समझाने से सरला मान जाये।" धीमे स्वर में कहकर ललित बाहर चला गया।

गली में प्रकाश कम था, फिर भी वह तीव्र गति से आगे बढ़ रहा था। कई बार वह सड़क पर बैठी हुई गायों से टकराते-टकराते बचा।

"गाय बाँधने की जगह तो है नहीं मगर पालने का शौक है। सड़क पर छोड़ देते हैं मानो सड़क इनके बाप की हो !" वह क्रुद्ध स्वर में बुद-बुदाया।

मुख्य सड़क पर पहुँचते ही एक रिक्शा मिल गया। वह रिक्शे पर बैठ गया। रास्ते भर वह अपने विचारों में खोया रहा। जैसे ही रिक्शा शकुन के बँगले के फाटक पर पहुँचा वैसे ही अन्दर से एक बड़ी कार निकली। ललित ने देखा, उसमें कामेश्वर के साथ शैलजा बैठी है।

रिक्शे वाले को पैसे देकर वह अन्दर गया। बरामदे में पहुँच कर वह ठिठक गया। शकुन के कमरे की ओर जाने का उसमें साहस न था।

संकेत से चौकीदार को बुलाकर ललित बोला—"शकुन बीबी हैं ?"

चौकीदार ने सिर हिलाया, जिसका अर्थ था—हाँ !

"जाकर कह दो कि मैं मिलना चाहता हूँ।"

चौकीदार चला गया।

ललित बरामदे में टहलता रहा।

दो मिनट बाद ही शकुन तीव्र गति से बरामदे में आयी। ललित की बेचैनी उससे छिपी न रह सकी। उसका हृदय धड़कने लगा।

"कुशल तो है ?" उसने धीमे स्वर में पूछा।

"सरला.....।" ललित आगे न बोल सका।

"क्या हुआ सरला को ?" शकुन ने घबरा कर पूछा।

"उसने अपनी बलि देने का निश्चय किया है। अब तुम्हीं उसे समझा सकती हो।"

"बलि देने का निश्चय ?" न समझने के ढंग से शकुन बोली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"अगर तुम्हें कष्ट न हो तो मेरे साथ चली चलो। रास्ते में सब कुछ बता दूँगा।"

"शोफर, गाड़ी लाओ!" शकुन ने ऊँचे स्वर में कहा और फिर वह ललित की ओर देखने लगी।

शोफर ने गाड़ी पोर्टिको में लगा दी।

"तुम यहीं रहो। मैं खुद ले जाऊँगी।" शकुन ने शोफर से कहा।

शोफर उतर कर एक ओर खड़ा हो गया।

शकुन और ललित गाड़ी में बैठ गये। गाड़ी तीव्र गति से ललित के घर की ओर उड़ चली।

मार्ग में ललित ने शकुन को वस्तु स्थिति से अवगत करा दिया।

"यह सब तुम्हारे झूठे अभिमान का फल है।" सुनकर शकुन बोली। "अगर तुम मुझे पहले ही सच्ची बात बता देते तो ऐसी स्थिति न आती।"

"जो हो गया सो हो गया। अब तुम उसे समझा-बुझाकर मना लो। फिर... फिर मैं कर्ज लेकर, भीख माँगकर, जैसे भी होगा वैसे उसका ब्याह किसी अच्छी जगह कर दूँगा।" कहकर ललित अपनी आँखों के आँसू पोंछने लगा।

गाड़ी सड़क पर छोड़ कर दोनों तेजी से गली में घुसे।

"जरा सँभल कर आना! रास्ते में गायें बैठी हैं।" ललित ने कहा।

"मैं तो ऊँची-नीची गली में गिर जाऊँगी।" शकुन के स्वर में शरारत थी।

बिना कुछ कहे ललित ने उसका हाथ पकड़ लिया।

"अब ठीक है। कोई सहारा हो तो गिरने का भय नहीं रहता।" कहकर शकुन हँस पड़ी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ललित ने अपनी हँसी रोकने की लाख चेष्टा की पर रोक न सका। वह भी हँस पड़ा।

शकुन के साथ जब ललित घर पहुँचा तब दया ने आकर द्वार खोला। सरला कमरे में ही थी। मुन्ना-मुन्नी सो गये थे। कमरे में लालटेन जल रही थी और बरामदे में दीया। आँगन में चाँदनी छिटकी हुई थी। शकुन आँगन में ही चारपाई पर बैठ गयी।

"सरला, देखो कौन आया है!" दया ने ऊँचे स्वर में कहा।

सरला बाहर आ गयी। दीपक के प्रकाश में शकुन को उसका चेहरा पाण्डु रोग के रोगी सा पीला लगा। वह आँगन में आयी और शकुन को देखकर मुस्करा पड़ी।

"आओ, बैठो।" शकुन ने उसका हाथ पकड़कर अपने पास बिठा लिया।

शकुन ने ललित को बाहर जाने का संकेत किया क्योंकि वह जानती थी कि उसके सामने खुलकर बातें नहीं हो सकेंगी।. ललित बाहर चला गया।

इसके पूर्व शकुन कुछ बोल सके, सरला ने कहा—"भैया ने आपको बेकार ही कष्ट दिया।"

"सरला, तुम क्षणिक भावुकता में पड़कर पागलपन कर रही हो। आवेश में आकर जीवन भर के सुख से खिलवाड़ करना ठीक नहीं।" शकुन ने समझाते हुये कहा।

"मैंने भावुकता और आवेश में आकर ऐसा नहीं किया है।" सरला ने कहा। "मैं विश्वास दिलाती हूँ कि मैंने सोच-समझकर कदम उठाया है, और अब जो कदम उठ चुका है वह पीछे लौट नहीं सकता।"

"जान-बूझकर गले में फांसी का फन्दा लगा रही हैं यह।" तभी बीच में दया बोल पड़ी।

दया की बात से सरला चिढ़ गयी। उसका चेहरा तमतमा गया। वह आवेश में आकर बोली—"मैंने फांसी लगाकर या जहर खाकर मरने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का रास्ता नहीं चुना है इसीलिए तुम ऐसा कहती हो!"

सरला की बात सुनकर दया सुन्न रह गयी। चुपचाप उठकर वह चौके में चली गयी। उसे याद आ गयी अपने मैके की बात। उसकी एक सहेली ने अपने निर्धन बाप को चिन्ता से मुक्त करने के लिए कुँये में कूदकर जान दे दी थी। उसकी याद से वह काँप गयी। उसने सोचा—सरला ठीक ही तो कहती है! वह भी फांसी लगाकर जहर खाकर, कुँये में कूदकर जान दे सकती थी। मगर नहीं, उसने कायरता का रास्ता नहीं चुना! और दया ने अनुभव किया कि सरला ने जो मार्ग चुना है वह ठीक ही है।

"तो....तो क्या तुम्हारा निश्चय पक्का है?" शकुन ने धीमे और उदास स्वर में पूछा।

"हाँ! और यही वह मार्ग है जिससे सबको सुख मिलेगा। भैया-भाभी की चिन्ता और उदासी दूर होगी, छोटी मुन्नी का भविष्य बनेगा और...और मैं भी सुखी बनूँगी।" सरला ने कहा।

"लेकिन तुम दोनों की अवस्था.....।"

"अवस्था की खाई मुझमें कोई अन्तर उत्पन्न नहीं करेगी, ऐसा मैं विश्वास दिलाती हूँ। मैं सच्चे मन से उनकी सेवा करूँगी।"

"सेवा और त्याग में अन्तर होता है, सरला।" शकुन के मुँह से निकल गया।

"क्या यह भी बताने की आवश्यकता है कि मैं जिन संस्कारों में पली हूँ उनमें पत्नी का परमेश्वर पति ही है! मैं उन्हें प्यार नहीं कर सकूँगी ऐसा सोचकर आप मेरे ही साथ नहीं, भैया के साथ भी अन्याय कर रही हैं।" सरला का स्वर सहसा अवरुद्ध हो गया।

"मुझे क्षमा करो, बहन।" कहकर शकुन ने सरला को हृदय से लगा लिया और फिर वह सिसक-सिसक कर रोने लगी।

दया ने भी अपनी धोती के मैले अंचल से अपने आँसू पोंछ लिए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसी समय ललित अन्दर आया।

शकुन सरला को छोड़कर अपने आँसू पोंछने लगी।

ललित ने प्रश्न भरी दृष्टि से शकुन की ओर देखा।

"सरला का निश्चय अटल है।" निःश्वास छोड़कर शकुन ने धीमे स्वर में कहा। "भगवान की यही इच्छा है।"

शकुन उठकर द्वार की ओर चल दी। ललित भी साथ-साथ चल दिया।

"तुम रहने दो। मैं चली जाऊँगी।" शकुन बोली।

"चलो, कार तक तो पहुँचा ही दूँ।" ललित ने कहा।

वे लोग थोड़ी दूर चले होंगे कि उधर से आता हुआ कमल मिल गया। ललित को देखकर बोला—"मैं तो तुम्हारे यहाँ ही जा रहा था।"

"अभी चलता हूँ। जरा शकुन जी को कार तक छोड़ दूँ।"

"ओह, शकुन जी हैं। नमस्कार! क्षमा कीजियेगा मैं आपको पहचान न पाया था।"

कमल भी मुड़कर उनके साथ चल दिया।

"हाँ भाई, हमें क्यों पहचानोगे!" शकुन ने हँसकर कहा!

"भूल के लिए क्षमा माँग चुका हूँ।" कमल ने सहज स्वर में कहा फिर एक क्षण रुककर बोला—"आज शैलजा जी मेरे यहाँ आयी थीं।"

शकुन और ललित उसकी बात सुनकर चौंक पड़े।

"कब?" शकुन ने पूछा।

"सवेरे। कह रही थीं कि मैं अपना संग्रह बाबू श्यामसुन्दर को प्रकाशित करने के लिए दे दूँ।"

"ठीक तो कह रही थीं। तुम्हारा नया संग्रह बाजार में बहुत जल्द आना चाहिए।" ललित ने कहा।

"आपने क्या उत्तर दिया शैल को?" शकुन ने पूछा।

"मैंने मना कर दिया है।"

"क्यों?" ललित ने पूछा।

"वैसे ही। मैं नहीं चाहता कि मेरा संग्रह किसी के कहने से कोई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकाशक ले।" कमल ने विचित्र स्वर में कहा।

"तुम समझ रहे हो बाबू श्यामसुन्दर शैलजा की शिफारिश से तुम्हारा संग्रह ले रहे हैं?" ललित ने हंसकर पूछा।

"हाँ!" कमल का संक्षिप्त उत्तर था।

बात करते-करते वे लोग सड़क पर पहुँच गये थे।

"अगर आपको यहाँ और काम न हो तो चलिए मैं आपको घर तक छोड़ दूँ?" शकुन ने कमल से कहा। "और किराये के रूप में आप मुझे अपना संग्रह दे दें। मैं बाबू श्यामसुन्दर तक पहुँचा दूँगी।"

"संग्रह तो तुम्हें देना ही चाहिए। कहो तो मैं ही आकर ले जाऊँ।" ललित ने भी जोर दिया।

"तो आप लोगों की भी राय है कि संग्रह दे दूँ?" कमल बेबसी के स्वर में बोला।

"अवश्य!" दोनों ने एक साथ ही उत्तर दिया।

'ठीक है।" कहकर कमल हँस पड़ा।

"अभी रुकेंगे क्या?" कहकर शकुन कार पर बैठ गयी।

"लगता है मेरा भाग्य खुल रहा है। सुबह-शाम मोटर पर बैठने को मिलता है।" कहकर कमल हँस पड़ा। फिर ललित की ओर मुड़ कर बोला— मैं इसी विषय में राय लेने आया था तुम्हारे पास! अब चलता हूँ।"

कमल कार का पिछला द्वार खोलकर बैठने लगा।

"वहाँ नहीं, आगे आइये कविराज जी!" हँसकर शकुन बोली।

कमल शकुन के पास जाकर बैठ गया।

"संग्रह की पाँडुलिपि.....।"

"कल सुबह तुम्हें दे जाऊँगा।" ललित की बात बीच में ही काटकर कमल बोला। "फिर तुम चाहे शकुन जी को देना, चाहे शैलजा जी को और चाहे बाबू श्यामसुन्दर को।"

शकुन ने कार स्टार्ट की। ललित साश्रुनयनों से शकुन की ओर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देखने लगा।

"भगवान जो करता है, अच्छा करता है।" शकुन ने धीमे स्वर में कहा और कार आगे बढ़ा दी।

ललित वहीं खड़ा रहा। वह आँसू भरी दृष्टि से कार के पीछे की लाल बत्ती तब तक देखता रहा जब तक वह दिखाई देती रही। जब कार दूसरी ओर मुड़ गयी और उसकी बत्ती अदृश्य हो गयी तब ललित घर की ओर चला।

गली में वह कितनी बार गायों से टकराकर गिरा उसे ज्ञात नहीं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पन्द्रह

प्रतीक्षा की एक घड़ी भी युग सी बड़ी हो जाती है। सन्ध्या की प्रतीक्षा में कामेश्वर दिन भर बेचैन रहा। एक-एक मिनट कठिनाई से कट रहा था। बार-बार वह घड़ी की ओर देखता। उसे लग रहा था कि उसकी घड़ी ही मन्द नहीं है वरन सूर्य की गति भी नित्य की अपेक्षा बहुत धीमी है। वह चहाता था कि जल्द ही सूरज पश्चिम की गोद में छिप जाये और धरती पर प्यारा अँधेरा उतरे और उस अँधेरे को चीरकर पूनम का रुपहला चाँद निकले। उसकी आत्मा दिन के प्रकाश से ऊब कर रात के अँधेरे के लिए छटपटा रही थी--वह उस अँधेरे के लिए व्याकुल था जो चाँदनी का उजला परिधान पहन कर उसकी इच्छाओं की पूर्ति करने के लिए उतरने वाला था।

जैसे ही घड़ी की छोटी सुई छः और बड़ी सुई बारह पर पहुँची वह बड़ी कार लेकर माल रोड की ओर चल दिया। वस्त्र वह चार बजे ही बदल चुका था। 'क्वालिटी' के सामने उसने कार रोक दी और फिर वह अधरों के बीच में बिना जली सिगरेट दबा कर अन्दर घुसा। वह सीधा मैनेजर के पास पहुँचा।

"हलो, मिस्टर कामेश्वर! ह्वाट कैन आई डू फार यू?" मैनेजर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ने व्यवहार कुशलता से पूछा।

"कुछ खाने-पीने का सामान गाड़ी पर पहुँचवा दीजिये।" कामेश्वर ने सिगरेट जलाकर कहा। "आज पिकनिक पर जा रहा हूँ।"

मैनेजर ने बैरा को आवश्यक आदेश दे दिया।

बैरा चला गया।

मैनेजर ने बिल बनाकर कामेश्वर के सामने रख दिया।

उसने बिल पर हस्ताक्षर कर दिये।

मैनेजर ने बिल मेज की दराज में डाल दिया।

"मिस शैलजा तो आज सबेरे ही आ गयी थीं।" मैनेजर ने सहज स्वर में कहा।

"अच्छा!"

"हाँ! और साथ में न जाने कहाँ से एक बन्दर पकड़ लायी थीं। मैं तो बड़ी मुश्किल से अपनी हँसी रोक सका।"

"बन्दर?" कामेश्वर ने उत्सुकता से प्रश्न किया।

"बन्दर ही समझिये।" मैनेजर ने हँसकर कहा। "अजीब हुलिया थी। बड़े-बड़े बाल, गन्दे कपड़े!"

कामेश्वर समझ गया कि शैलजा के साथ कमल ही था। वह बहुत कठिनाई से अपने क्रोध को दबा सका।

'बड़े आदमियों की हाबीज भी अजीब होती हैं।" मैनेजर ने कहना जारी रक्खा। "मैं तो समझता हूँ कि मिस शैलजा किसी राह चलते भिखारी को पकड़ लायी थीं।" और अपनी बात पूरी करके वह हँस पड़ा।

कामेश्वर ने उसका साथ देने की चेष्टा की पर वह हँस न सका।

तभी बैरा ने कामेश्वर को सूचना दी कि सामान कार पर रख दिया गया है।

कामेश्वर कार पर आकर बैठ गया। उसका दबा हुआ क्रोध उबल पड़ा।

"आज भर की और बात है।" वह बुदबुदाया। "कल दूध की मक्खी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की तरह अपने जीवन से निकाल कर फेंक दूँगा।"

कार स्टार्ट करके वह "कपूर एन्ड सन्स" के यहाँ पहुँचा। वहाँ से उसने ड्राईजिन का एक अद्धा लिया।

"पैराडाइज होटल" के एक एकान्त केबिन में बैठकर जब उसने आधी मदिरा पी ली तब कहीं जाकर उसका क्रोध शान्त हुआ।

बची हुई मदिरा को प्यार भरी दृष्टि से देखकर उसने बोतल को चूमा। उसकी कुटिल योजना को सफल बनाने में वह बोतल बहुत ही महत्त्वपूर्ण भाग लेने वाली थी।

बोतल कार में छिपा कर वह शैलजा के बँगले पहुँचा। वह तैयार बैठी थी। सफेद रेशमी गरारा और कुर्त्ते पर सफेद ही ओढ़नी; आँखों में काजल की पतली रेखा; चेहरे पर हल्का पाउडर; गालों और अधरों पर हल्की लाली! कामेश्वर ने देखा तो देखता ही रहा।

"तुम तो ऐसे देख रहे हो जैसे कभी देखा ही न हो।" वह खिलखिलाकर हँसती हुई बोली।

"राज शैलजा को देखता था; आज इन्द्रलोक की अप्सरा को देख रहा हूँ।" कामेश्वर ने मुस्करा कर कहा।

"बहुत देर कर दी तुमने! मैं तो समझ रही थी, नहीं आओगे।" कार पर बैठती हुई शैलजा बोली।

"अगर मालूम होता कि कोई मेनका प्रतीक्षा कर रही है तो चार बजे ही आ जाता।" कहकर कामेश्वर ने कार स्टार्ट कर दी।

फाटक के बाहर उन्हें रिक्शे से उतरता हुआ ललित दिखाई दिया। शैलजा कामेश्वर के और निकट आ गयी।

कार तेजी से गंगा घाट की ओर बढ़ने लगी।

मार्ग में दोनों अधिकतर मौन रहे। शैलजा अपने विचारों में खोई रही और कामेश्वर अपने विचारों में।

गाड़ी घाट के किनारे छोड़कर वे लोग सीढ़ियाँ उतर कर नीचे पहुँचे उन्हें देखकर कई नाविक एक साथ आगे बढ़कर चिल्लाये—"बाबू जी,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इधर आइये !"

नाविकों के उस झुंड में कामेश्वर की आँखें किसी को खोज रही थीं। तब तक दूर पर उसे अपना खास नाविक दिखाई दिया। कामेश्वर को देखकर वह दौड़ता हुआ आया। पास आकर वह अन्य नाविकों से बोला—"अलग हटो ! जानते नहीं, बाबू जी हमारी सवारी हैं।"

"नाव किधर है ?" कामेश्वर ने उससे पूछा ।

"पास ही है, बाबू जी ! इधर आइये ।" कहकर वह चल दिया।

कामेश्वर शैलजा का हाथ पकड़कर उसके पीछे चल दिया।

जिस नाव पर नाविक ने बैठाया वह काफी अच्छी थी। नाव पर मोटा गद्दा बिछा था। चादर भी साफ थी। मोटे-मोटे कई तकिये भी रक्खे थे।

कामेश्वर उस नाविक का पुराना ग्राहक था और वह यह भी भली प्रकार जानता था कि बाबू जी जब कभी किसी लड़की को लेकर घूमन आते हैं तो उस घूमने का वास्तविक अर्थ क्या होता है।

"अबकी बहुत दिनों में आये बाबू जी !" नाविक ने हाथ जोड़कर कहा ।

"हाँ भाई ! काम के मारे फुर्सत ही नहीं मिल पाती। " कामेश्वर ने कहा और फिर एक क्षण बाद बोला। "ऊपर कार खड़ी है। उसमें खाने-पीने का सामान रक्खा है। जाकर ले आओ ।"

'अभी आया, सरकार।" कहकर नाविक चल पड़ा ।

जब वह कुछ दूर चला गया तब कामेश्वर नाव से उतर कर ऊँचे स्वर में बोला—"अरे, सुनना जरा ! एक बात तो भूल ही गया।"

नाविक रुक गया ।

"अभी आया।" कह कर नाविक कामेश्वर की ओर तीव्र गति से बढ़ा।

शैलजा पैर फैला कर नाव में लेट गयी। चाँदनी रात में, गंगा की गोद में शान्त होकर लेटना उसे बहुत अच्छा लगा! वह निर्निमेष दृष्टि से आकाश में हँसते हुये चाँद को देखने लगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नाविक के पास पहुँचकर कामेश्वर धीमे स्वर में बोला—"पिछली सीट के नीचे जिनकी बोतल रखी है। पान वाले से लैमन की बोतल लेकर खोल लेना और थोड़ी-थोड़ी जिन मिला देना। समझे?"

"सब समझ गया, सरकार।" खीसें निपोर कर नाविक बोला।

कामेश्वर लौटकर नाव की ओर बढ़ा। आधी दूर पहुँचकर उसने ऊँचे स्वर में नाविक से फिर कहा—"लैमन वहीं से खोल लाना। नहीं तो यहां झंझट होगी।"

"बहुत अच्छा, सरकार।" नाविक का उत्तर आया।

जब वह नाव पर पहुँचा तब भी शैलजा लेटी हुई चाँद को देख रही थी। कामेश्वर को देखकर वह उठी नहीं; हाँ, पैर कुछ समेट लिये। कामेश्वर उसी के पास बैठ गया।

"कहीं चाँद को सजर न लग जाये!" कामेश्वर ने मुस्करा कर कहा।

"चाँद को नजर न लगे इसीलिए तो भगवान ने उसमें काला दाग लगा दिया है।" चाँद की ओर से दृष्टि हटाकर शैलजा ने कहा।

"और इसीलिए शायद तुमने भी अपने बायें गाल के नीचे काला तिल बनाया है।" शैलजा के पास खिसक कर कामेश्वर बोला।

"चाँद इतना सुन्दर है यह मुझे आज ही मालूम हुआ।" उठकर तकिये के सहारे बैठती हुई शैलजा बोली।

"आकाश के चाँद से सुन्दर धरती का चाँद है।"

गंगा के निर्मल-शान्त जल में पड़नेवाले चाँद के प्रतिबिम्ब की ओर देखती हुई शैलजा ने कामेश्वर की बात का कोई उत्तर नहीं दिया। झुककर अपना हाथ जल में डालकर उसने शान्त जल को आन्दोलित कर दिया। शशि का प्रतिबिम्ब भी डोलने लगा।

"आकाश का चाँद स्थिर है और धरती का चाँद चंचल।" शैलजा ने कामेश्वर की ओर शरारत भरी दृष्टि से देखकर कहा।

"जिसे तुम चंचल कह रही हो वह चाँद नहीं, उसकी परछाईं है। धरती का चाँद तो तुम हो।" कामेश्वर ने साहस करके शैलजा का हाथ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपने हाथ में लेकर कहा।

"तुम भी कवि बन रहे हो।" शैलजा केवल इतना कह सकी।

तभी नाव की ओर नाविक आता दिखाई दिया। उसके साथ एक व्यक्ति और था। कामेश्वर ने शैलजा का हाथ छोड़ दिया।

नाविक के हाथों में लैमन की खुली हुई दो बोतलें थीं और उसके साथ वाले व्यक्ति के हाथ में खाने का सामान। खाने का सामान नाव पर रखवाकर कामेश्वर ने बोतलें अपने हाथों में ले लीं। नाविक पतवार सँभाल कर नाव में बैठ गया। उसका साथी चला गया।

"उस पार चलूँ, सरकार?" नाविक ने पूछा।

"हाँ!" कहकर कामेश्वर भी एक तकिये के सहारे टिक गया।

नाव जल को चीरती हुई आगे बढ़ी। जब नाव बीच धार में पहुँची तब कामेश्वर ने नाविक को नाव रोकने का संकेत किया। नाविक ने पतवार रख दिये। नाव धारा के साथ मन्दगति से रेलवे पुल की ओर बह चली।

"कोई गीत सुनाओ।" कामेश्वर ने शैलजा से अनुरोध किया।

"गाने का मूड नहीं है। इच्छा होती है, नाव में चुपचाप लेटी रहूँ और हवा का मादक संगीत सुनती रहूँ।" शैलजा ने तकिये के सहारे अधलेटी मुद्रा में होकर कहा। वातावरण की मादकता ने उसकी भावुकता को उभार दिया था।

"और मेरी इच्छा होती है कि नाव इसी तरह जिन्दगी भर धीरे-धीरे बीच धार में बहती रहे और हम दोनों एक दूसरे का हाथ पकड़े, एक दूसरे की आँखों में आँखें डाले बैठे रहें।" कामेश्वर ने भावुक होकर कहा।

शैलजा कुछ बोली नहीं।

"लो, लैमन पी लो।" कहकर कामेश्वर ने एक बोतल शैलजा की ओर बढ़ादी और दूसरी अपने मुंह से लगाली।

शैलजा लैमन पीने लगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"न जाने कैसा टेस्ट है!" बोतल खाली करके शैलजा बोली।

"मुझे भी पसन्द नहीं आया!" अपनी खाली बोतल गद्दे पर रखकर कामेश्वर बोला और फिर नाविक की ओर मुड़कर कहा—"किसी नयी दूकान से ले आये हो क्या?"

"पुरानी दूकान बन्द थी, सरकार!" नाविक ने विनम्रता से कहा।

"न जाने कब का बासी था।" कहकर कामेश्वर ने सिगरेट सुलगायी।

इसी बीच में नाव काफी निकल आयी थी। चाँदनी में घाट अजीब से लग रहे थे। रेलवे पुल की बत्तियाँ नाव वालों को आमंत्रित कर रही थीं।

"अरे, हम लोग काफी दूर आ गये।" सहसा चौंककर कामेश्वर बोला। "नाव उस पार ले चलो। रेती पर बैठकर खा-पी लें।"

नाविक ने फिर पतवार सँभाले। नाव किनारे की ओर बढ़ चली।

जैसे ही नाव उस पार पहुँची, कामेश्वर उछलकर रेती में उतर पड़ा। शैलजा का हाथ पकड़कर उसने उसे भी उतार लिया। दूर-दूर तक फैली हुई उजली रेत चाँदनी में बहुत मनोहर लग रही थी। शैलजा का मन हुआ कि वह बच्चों की तरह किलकारी भरकर रेत में दौड़े, खेले, गिरे और फिर दौड़े। अपने अन्दर वह नयी स्फूर्ति का अनुभव कर रही थी। जिन अपना मादक प्रभाव दिखा रही थी।

नाविक ने नाव का गद्दा रेत पर बिछा दिया और उसी पर खाने का सामान रख दिया। कामेश्वर गद्दे पर बैठ गया। शैलजा रेत के घरौंदे बनाने लगी।

"सरकार, अगर हुक्म हो तो कुछ हम भी खा-पी आयें। आज सबेरे से अन्न का दाना नहीं गया है पेट में।" नाविक ने गिड़गिड़ा कर कहा।

"जाओ। मगर जल्दी आना! हमें ज्यादा देर नहीं रुकना है।" कामेश्वर ने नाविक की ओर गूढ़ दृष्टि से देखकर कहा।

"अभी आता हूँ, सरकार, पाँच मिनट में।" सधे हुये नाविक ने अपने अभ्यस्त स्वर में कहा और फिर वह नाव पर बैठकर पतवार चलाने लगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

धीरे-धीरे नाव दृष्टि से ओझल हो गयी।

चाँद आकाश में उसी तरह हँस रहा था मगर बादल का वह सफेद टुकड़ा जो कुछ देर पहले उससे काफी दूर था, अब उसके पास आ गया था।

"आओ, कुछ खा लो।" कामेश्वर ने केक खाते हुये कहा।

शैलजा उसके पास बैठ गयी।

"खाओ।" कामेश्वर ने एक केक उसके हाथ में दे दिया।

"तुम खाओ। मेरा मन नहीं है।" कहकर शैलजा लेट गयी। "मुझे तो न जाने कैसा लग रहा है।"

"कैसा लग रहा है?" कामेश्वर ने खाने का सामान एक ओर खिसकाकर पूछा।

"तुम हँसोगे।" अँगड़ाई लेकर शैलजा बोली।

"नहीं हँसूँगा। बताओ।" कहकर वह उसके बालों से खेलने लगा।

"लगता है, मेरे पंख लग गये हैं और मैं इस चाँदनी में उड़ रही हूँ।" कहकर शैलजा ने आँखें बन्द कर लीं।

कामेश्वर उसके और पास आ गया।

"मन करता है, इस ठंढी रेत में जी भर कर नाचूँ।"

"अरे, कहीं ऐसा न कर बैठना! इन्द्रलोक में खलबली मच जायेगी।" कहकर कामेश्वर ने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया।

"न जाने किस जादू में बँध गयी हूँ मैं। मेरा मन मेरे बस में नहीं है।" कहकर शैलजा ने अधखुले आँखों से कामेश्वर की ओर देखा।

कामेश्वर का हृदय तीव्रगति से धड़क रहा था। वह समझ गया था कि मदिरा अपना रंग ला रही है। उसकी इच्छा हुई कि शैलजा को अपने बाहुपाश में कस ले परन्तु उसने अपने को संयत कर लिया। शीघ्रता करने में बना-बनाया खेल बिगड़ जाने का भय था।

शैलजा आकाश की ओर मुंह किये लेटी थी। उसकी चुन्नी एक ओर को सरक गयी थी। वह कभी आँखें बन्द कर लेती थी और कभी खोलकर आकाश की ओर देखने लगती थी। उसे अपनी पलकें भारी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लग रही थीं और उसकी इच्छा हो रही थी कि वह सो जाये।

बालों से खेलते-खेलते कामेश्वर ने साहस एकत्र कर लिया। वह शैलजा के ऊपर झुका और उसने उसके अधरों पर अपने अधर रख दिये।

उस बेसुधी की अवस्था में भी शैलजा ने अनुभव किया कि उसके अधरों पर किसी ने दहकता हुआ अंगार रख दिया है। वह शीघ्रता से उठकर बैठ गयी।

"बहुत बुरे हो तुम......।" कामेश्वर की धृष्टता का विरोध वह इतना कह कर ही कर सकी।

कामेश्वर ने झपट कर उसे बाहुपाश में कस लिया।

शैलजा जाल में फँसी मछली की तरह छटपटाने लगी।

"यह क्या करते हो? छोड़ो मुझे!" अपने को मुक्त करने का निष्फल प्रयत्न करती हुई तेज स्वर में शैलजा बोली।

कामेश्वर का बन्धन कसता ही गया।

"छोड़ दो मुझे! छोड़ो, जानवर कहीं के!" अपनी पूरी शक्ति लगाकर मुक्त होने की चेष्टा करती हुई शैलजा चीख कर बोली।

"इस चाँदनी रात के एकान्त में तुम जैसी सुन्दरी को पाकर कौन जानवर नहीं हो जायेगा?" कामेश्वर ने भर्राये गले से कहा और फिर वह भयंकर अट्टहास कर उठा।

शैलजा ने छूटने की बहुत कोशिश की पर हैवान के फौलादी चंगुल से वह छूट न सकी।

चाँद ने लजा से बादल के टुकड़े में अपना मुंह छिपा लिया।

उस किनारे पर लगी नाव में बैठे नाविक ने एक पीड़ा भरी चीख सुनी पर वह चुपचाप बैठा बीड़ी पीता रहा मानो वह संवेदनशील मनुष्य नहीं, जड़ मशीन है। चीख को सुनकर वह सहायता के लिए नहीं दौड़ा। वह तो प्रसन्न था; बहुत देर से वह उसी चीख को सुनने की आतुर प्रतीक्षा कर रहा था क्योंकि चीख का अर्थ था उसके लिए दस रुपए का करारा नोट!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बहुत इत्मीनान से बीड़ी का आखिरी कश लेकर नाविक ने पतवार उठाये। वह नाव को धीरे-धीरे खे रहा था। फलस्वरूप नाव को उस पार पहुँचने में काफी समय लग गया। उस पार पहुँच कर नाविक ने देखा कि खाने का सामान रेत में इधर-उधर बिखरा पड़ा है, शैलजा बाहों में मुंह छिपाये गद्दे पर पड़ी है और कामेश्वर बेचैनी से नाव की प्रतीक्षा में टहल रहा है।

"देर तो नहीं हो गयी, सरकार?" कह कर नाविक रेत में उतर कर गद्दे की ओर बढ़ा।

कामेश्वर ने शैलजा का हाथ पकड़ कर उठाना चाहा मगर वह स्वयं उठ गयी। नाविक ने गद्दा नाव में बिछा दिया। दोनों नाव पर बैठ गये। दोनों ही मौन थे।

नाव से उतर कर कामेश्वर ने दस रुपये का नोट नाविक के हाथ में थमा दिया।

"दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की हो, सरकार! अब फिर कब आना होगा?" प्रसन्न होकर नाविक ने पूछा।

"कह नहीं सकता।" कह कर कामेश्वर आगे बढ़ गया।

कार के पास पहुँच कर कामेश्वर द्वार खोलकर बैठ गया। द्वार उसने शैलजा के लिए खुला रहने दिया, मगर वह उसके पास न बैठकर पीछे बैठ गयी।

द्वार बन्द करके कामेश्वर ने कार स्टार्ट की।

"क्या नाराज हो?" कामेश्वर ने कहा और फिर एक क्षण रुककर बोला--"मैंने मामा जी को कमल का संग्रह प्रकाशित करने के लिए राजी कर लिया है। अब तो ख़ुश हो न?"

शैलजा मौन रही।

"तुम नाराज हो जाओगी तो मैं जिन्दा कैसे रहूँगा?" कामेश्वर उसे प्रसन्न करने के आशय से बोला।

"चुप रहो!" शैलजा क्रुद्ध स्वर में चोट खायी नागिन की तरह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फूत्कार कर बोली। "मुझे तुमसे नफरत है। मैं तुम्हारी शक्ल भी नहीं देखना चाहती। तुम आदमी नहीं, जानवर हो।"

और फिर वह सिसकने लगी।

कामेश्वर कुछ बोला नहीं।

जब कार शैलजा के बँगले में पहुँची तब तक शैलजा संयत हो चुकी थी। वह चुपचाप उतर कर अपने कमरे की ओर बढ़ी।

कामेश्वर कार घुमाकर अपने घर की ओर चल दिया। वह प्रसन्न था—अपनी विजय पर!

और शैलजा अपने कमरे का द्वार अन्दर से बन्द करके आधी रात तक रोती रही। वह लुट गयी थी। उसे लग रहा था कि उसका शरीर गन्दा हो गया है, कभी न छूटने वाली कीचड़ में सन गया है।

रोते-रोते ही वह सो गयी।

और फिर उसने स्वप्न देखा कि वह एक भयंकर अग्नि-कुंड में गिर गयी है। अग्नि शिखायें उसके रोम-रोम को भस्म कर रही हैं और वह चीख रही है, असह्य पीड़ा से तड़फ रही है।

और सचमुच ही उसका पसीने से तर शरीर पलँग पर उसी तरह तड़फने लगा जैसे जल के बाहर मछली तड़फती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सोलह

दूसरे दिन जब शैलजा सोकर उठी तब उसका चेहरा नित्य की तरह फूल सा खिला हुआ नहीं था। उसका मन भारी था, शरीर में थकान थी, रग-रग में दर्द था और सिर फटा जा रहा था। नौकरानी जब चाय लेकर आयी तब रोज की तरह शैलजा ने प्याली अधरों से नहीं लगायी। उसने नौकरानी से चाय ले जाने के लिए कहा। वह दबे पाँव चाय का प्याला लिए बाहर चली गयी।

शैलजा ने नहा-धोकर जब जल पान किया तब वह कुछ स्वस्थ हुई। फिर भी पिछली रात की घटना वह भूल न सकी। उसकी स्मृति बार-बार उसे आकुल कर रही थी। वह रह-रह कर काँप उठती; उसका हृदय कामेश्वर की नीचता के प्रति घृणा से भर उठता और वह अपने होंठ काटने लगती।

कालेज जाने का समय हुआ पर वह कालेज न गयी। अपने कमरे में जाकर लेट गयी। वह सोचने लगी कि कामेश्वर का विश्वास करके उसके साथ रात में गंगा-तट पर जाना ही उसकी भारी भूल थी और उसी भूल का महान दंड उसे मिला है! सभी पुरुष अन्दर से भेड़िये होते हैं—भूखे,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खूँख्वार भेड़िये! और फिर उसने निश्चय किया कि वह भविष्य में कभी किसी पुरुष पर विश्वास नहीं करेगी।

वह विचारों में खोयी थी और तभी कमरे में शकुन आ गयी।

"आज भी कालेज नहीं गयीं?" शकुन ने सहज स्वर में पूछा।

शैलजा न जाने क्यों शकुन के इस प्रश्न से चिढ़ गयी। उठकर बैठती हुई बोली—"तुम मेरी फिक्र क्यों करती हो? मेरा मन होगा, जाऊँगी, नहीं तो नहीं जाऊँगी।"

शकुन को आशा नहीं थी कि शैलजा ऐसा उत्तर देगी। वह कुर्सी पर बैठकर धीमे स्वर में बोली—"मैंने कोई बुरी बात तो नहीं कही, शैल!"

शैलजा फिर पलँग पर लेट गयी।

"क्या तबियत ठीक नहीं है?" शकुन ने स्नेहपूर्ण स्वर में पूछा।

शैलजा मौन रही। उसने मुंह दूसरी ओर कर लिया।

शकुन ने समझा कि अवश्य कोई ऐसी बात हुई है जिससे शैलजा नाराज है। उसने सोचा कि कल रात को वह कामेश्वर के साथ घूमने गयी थी, शायद तभी कुछ आपस में अनबन हो गयी हो।

"क्या कामेश्वर ने कुछ कह दिया है?" शकुन ने पलँग पर बैठकर सहज स्वर में पूछा।

कामेश्वर के नाम ने शैलजा के क्रोध में घी का काम किया। उसने समझा कि कामेश्वर का नाम लेकर शकुन उसकी हँसी उड़ा रही है, उसे चिढ़ा रही है। वह तिलमिला कर उठ बैठी और तीखे स्वर में बोली—"क्या मैं अपने कमरे में भी चैन से नहीं लेट सकती?" और फिर वह तकिये में मुंह छिपाकर सिसकने लगी।

शकुन घबरा गयी। आखिर शैलजा को हो क्या गया है?

कुछ देर बाद शैलजा का सिसकना बन्द हो गया। शकुन पलँग से उठकर आराम कुर्सी पर बैठ गयी थी। शैलजा उठकर बाथ रूम में गयी और मूँह धोकर लौटने के बाद शकुन से बोली—"मुझे माफ कर दो, सिसी!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मेरी तबियत ठीक नहीं है।"

"यह तो मैं पहले ही समझ गयी थी।" शकुन का सीधा सा उत्तर था।

"ललित रात को क्यों आया था?" सहसा शैलजा पूछ बैठी।

"मुझे बुलाने के लिए?"

"क्यों? कहाँ जाना था तुम्हें?" शैलजा की उत्सुकता जाग गयी।

"कल तुमने सरला को देखा था न!"

"हाँ! मगर तुमने यह नहीं बताया था कि वह ललित की बहन है। मुझे तो तब मालूम हुआ जब वह उसके साथ जाने लगी।" शैलजा के स्वर में फिर रूखापन आ गया।

"ललित को जो कुछ मिलता है उससे घर का खर्च ही कठिनाई से चलता है। बिचारा दहेज देकर सरला का व्याह कैसे कर पाता!" शकुन के स्वर में करुणा आन्दोलित हो उठी।

"डैडी से कहकर पे बढ़वा क्यों नहीं देतीं!" शैलजा ने व्यंग्य किया।

"सोचती तो मैं भी यही हूँ।" शकुन गंभीरता से बोली। "खैर, यह तो बाद की बात है। हाँ, तो सरला भैया-भाभी की चिन्ता से दुखी थी। उन्हें दुख और चिन्ता से छुटकारा देने के लिए उसने.......।"

"सुसायड कर ली?" बीच में ही शैलजा आँखें फैलाकर पूछ बैठी।

"आत्म हत्या तो नहीं की परन्तु.......।" और शकुन ने रुक रुककर धीमे और दुखी स्वर में सारी बात शैलजा को बता दी।

शैलजा मूक भाव से सुनती रही और अन्त में ठंढी साँस लेकर धीमे स्वर में बुद बुदायी—"पुअर सरला।"

और फिर उसकी आँखों के आगे कामेश्वर की पाशविकता का चित्र घूम गया। उसी पशु के साथ सरला को रहना पड़ेगा। क्या वह उसे मामी का आदर और सम्मान दे सकेगा? क्या भोली-भाली सरला उस चिकने-चुपड़े लुटेरे से अपनी रक्षा कर सकेगी? सोचते-सोचते शैलजा का हृदय सरला के प्रति करुणा से भर गया। "बिचारी सरला!" वह फिर बुदबुदायी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शकुन निश्चल होकर आराम कुर्सी पर आँखें बन्द किये लेटी थी। शैलजा पलँग से उठकर उसके पास आ गयी और दूसरी कुर्सी पर बैठकर धीमे स्वर में बोली—"सिसी, यह तो अन्धेर है! इसे रोकना चाहिए।"

"मैंने सरला को समझाने की बहुत कोशिश की।" शकुन ने आँखें खोलकर उदास स्वर में कहा, "मगर वह मानती ही नहीं। उसका निश्चय अटल है।"

यदि कल की दुखद घटना घटित न होती तो शायद शैलजा को सरला के दुर्भाग्य पर दुख न होकर सुख ही होता, क्योंकि उसने कमल की आँखों में उसके प्रति कोमल भावना देखी थी और फलस्वरूप वह उसे अपनी प्रतिद्वन्द्विनी मान बैठी थी। किन्तु कल की घटना ने स्थिति बदल दी थी। उसे पुरुष-जाति से घृणा हो गयी थी और इसीलिए उसके हृदय में सरला के प्रति, जो उसी की तरह दुर्बल नारी थी, सहानुभूति का भाव उदित हुआ था।

कमरे के वातावरण में एक अजीब सी उदासी छा गयी थी। शैलजा और शकुन आँखें बन्द किये सरला के करुण भविष्य की कल्पना में लीन थीं। सहसा शकुन को कमल की बात याद आ गयी। आँख खोलकर उसने स्वाभाविक स्वर में शैलजा से पूछा—"तुम कल कमल के घर गयी थीं?"

शैलजा ने चौंककर आँखें खोल दीं। वह तीखी दृष्टि से शकुन की ओर देखने लगी। उसकी समझ में न आया कि शकुन को यह बात कैसे ज्ञात हुई।

"गयी तो थी।" शैलजा ने उत्तर दिया। "मैं चाहती थी कि वह अपना संग्रह बाबू श्यामसुन्दर को दे दे। मगर वह बहुत जिद्दी है। मैं उसकी सहायता करना चाहती थी और उसने समझा कि इसमें मेरा कोई स्वार्थ है। फुलिश क्रियेचर!"

शैलजा ने कमल को 'मूर्ख प्राणी' की उपाधि इस ढंग से दी कि शकुन को हँसी आ गयी।

"वह यह समझता है कि तुमने बाबू श्यामसुन्दर से उसकी शिफारिश

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की है।" हँसी रोककर शकुन बोली।

"मुझे क्या गरज पड़ी है किसी की शिफारिश करने की?" चिढ़े स्वर में शैलजा बोली और फिर कुर्सी से उठकर वह ड्रेसिंग टेबिल के दर्पण में अपना मुख देखने लगी।

"खैर! कल वह ललित के यहाँ आया था। हमने उसे संग्रह देने के लिए राजी कर लिया है!" शकुन ने मुस्कराकर उसे सूचित किया।

इस सूचना से शैलजा को हर्ष नहीं हुआ। इसमें उसे अपनी पराजय दिखाई दी। उसका स्वाभिमान जाग उठा। उसने सोचा, जब कमल मेरी बात नहीं मानता तो मुझे क्या गरज पड़ी है उसकी सहायता करने की! वह अपने को समझता क्या है? प्रोफ़ेसर इन्द्र ठीक ही कहते थे। कल से लेखनी पकड़ी है और अपने को महाकवि समझने लगे हैं। और जो कमल पहले उसकी दृष्टि में 'जीनियस' था वही एकदम 'ट्रैश' बन गया।

"कमल ललित को अपना संग्रह सुबह दे गया होगा। वह संग्रह यहाँ ले आयेगा। फिर तुम बाबू श्यामसुन्दर को दे देना।" शकुन कुर्सी से उठकर बोली।

"संग्रह उसने मेरे कहने से तो दिया नहीं है। मुझे क्या पड़ी है जो बाबू श्यामसुन्दर की विनती करूँ! अब तुम जानो, तुम्हारा काम जाने।" घूमकर शैलजा ने उत्तर दिया।

शकुन उसकी ओर आश्चर्य से देखती रही। इस परिवर्तन का कारण उसकी समझ में न आया। "ठीक है। मैं बाबू श्यामसुन्दर से फोन से बात कर लूँगी।" कहकर वह बाहर चली गयी।

× × ×

कमल जब पाण्डुलिपि लेकर ललित के घर पहुँचा तब ललित मॉल जाने की तैयारी कर रहा था। कमल ने बाहर से आवाज दी। कमल का स्वर पहचान कर ललित ने उसे अन्दर बुला लिया। दया और सरला बरामदे में ही थीं। दोनों ने हाथ जोड़कर अभिवादन किया। वह सिर झुकाकर आँगन में पड़ी चारपाई पर बैठ गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"संग्रह ले आये ?" ललित ने कमरे से ही पूछा।

"हाँ।" कमल ने धीमे स्वर में उत्तर दिया।

कमल ने संकेत से मुन्ना को अपने पास बुलाया। वह झिझकता हुआ उसके पास गया। कमल ने उसे अपनी गोद में बिठा लिया।

"हमें जानते हो ?" कमल ने मुन्ना से पूछा।

उसने सिर हिला दिया।

"बताओ, हम कौन हैं ?" कमल ने प्यार से पूछा।

"गाने वाले चाचा !" कहकर मुन्ना तालियाँ बजाने लगा।

उसके उत्तर से कमल खिलखिलाकर हँस पड़ा। दया और सरला भी मुस्कराने लगीं।

"वाह भाई ! मेरा मुन्ना तो बहुत होशियार है।" कमल ने उसका माथा चूम कर कहा।

उसी समय ललित कमरे से बाहर आया। उसके हाथ में झोला था। कमल को देखकर वह मुस्कराया पर कमल को उसकी वह मुस्कान आँसुओं से भी गीली लगी। उसने देखा कि ललित की आँखें लाल हैं, मानों वह रात भर सोया न हो और चेहरे पर उदासी और व्यथा के चिन्ह हैं मानो वह बहुत-बहुत थका हो।

"लाओ।" कहकर ललित ने अपना हाथ कमल के आगे फैला दिया।

कमल से संग्रह लेकर उसने उलट-पुलट कर देखा और फिर उसे सावधानी से झोले में रख लिया।

घर से निकल कर दोनों गली में आ गये। कुछ देर तक दोनों मूक रहे, पर कमल से न रहा गया। उसने पूछा—"तुम उदास क्यों हो ललित ?"

"कोई खास बात नहीं है।" ललित ने मन्द स्वर में कहा।

"आम सही।" हँसकर कमल बोला। एक क्षण बाद गंभीर स्वर में कहा—"बताओ, क्या बात है ? एक दुखी दूसरे के दुख को अच्छी तरह समझ सकता है।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"क्या बताऊँ, भाई।" कहकर ललित ने व्यथित स्वर में सम्पूर्ण स्थिति स्पष्ट कर दी और फिर रुक कर बोला—"मुझे लगता है कि मैं एक महान अपराधी हूँ, कमल! कुछ समझ में नहीं आता क्या करूँ?".

कमल सिर झुकाये मौन भाव से चलता रहा। उसका मुख आन्तरिक पीड़ा से विकृत हो उठा। उसे लगा कि जैसे उसके अंग-अंग में किसी ने सहस्रों सुइयाँ चुभा दी हैं।

"मैं तो सरला को समझा कर हार गया। शकुन की बात भी उसने नहीं मानी। न हो तो एक बार तुम्हीं समझाओ उसे।" अत्यन्त धीमे स्वर में ललित ने आग्रह किया।

कमल चलते-चलते रुक गया। ललित को भी रुकना पड़ा।

"किस मुँह से समझाऊँ उसे?" कमल का स्वर बेबसी और पीड़ा से ओत-प्रोत था। "और क्या समझाऊँ? नहीं; तुम भूलते हो, मित्र! समझाने की कोई जरूरत नहीं है। जो हो रहा है, होने दो!"

"यह क्या कह रहे हो, कमल?"

"तुम्हें तो प्रसन्न होना चाहिए कि सरला ने आत्म हत्या का कायरता-पूर्ण मार्ग नहीं चुना।" आगे बढ़ता हुआ कमल गंभीर वाणी में बोला। "उसने साहसपूर्ण कदम उठाया है और मैं उस देवी का अभिनन्दन करता हूँ।"

"तुम पागल हो, कमल!" ललित कड़े स्वर में बोला।

"अगर हम सब पागल हो जायें तो फिर कोई कष्ट ही न हो। खेद तो यही है कि हम पागल नहीं हैं।" और फिर रुक कर ललित का हाथ पकड़ कर आवेश से बोला—"यही कष्ट, यही व्यथायें, यही चोटें हमें संघर्ष के प्रति जागरूक रखती हैं। दोस्त! आघातों को हँसकर सहो क्योंकि इन्हीं से क्रान्ति को बल मिलेगा। सरला जैसी देवियों के त्याग और बलिदान ही सामाजिक क्रान्ति को उभारें और फिर वर्गों की दीवारें ढहकर चूर हो जायेंगी, मानवीय सम्बन्धों को छिन्न-भिन्न करने वाली अव्यवस्था की खाइयाँ पट जायेंगी और मनुष्य को मनुष्य से अलग करने-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वाली दरारें मुंद जायेंगी। विश्वास रक्खो दोस्त, हम जो कुछ सह रहे हैं वह व्यर्थ नहीं जायेगा। नींव के इन्हीं पत्थरों पर नये समाज का प्रासाद खड़ा होगा।"

बोलते-बोलते कमल के मस्तक पर पसीना आ गया और वह हाँफने लगा। माथे का पसीना कुर्त्ते की बाँह से पोंछ कर वह फिर मन्द गति से आगे बढ़ा। ललित मंत्र-मुग्ध सा उसके पीछे चल दिया।

"अच्छा, अब मैं चलता हूँ।" कहकर कमल ने ललित के कन्धे पर हाथ रख दिया।

ललित दृष्टि नीची किये खड़ा रहा मानो उसे काठ मार गया हो।

"यह प्रश्न केवल सरला या तुम तक ही सीमित नहीं है।" ललित के कन्धे को जोर से दबाते हुये कमल बोला। "यह समस्या करोड़ों परिवारों की है। याद रक्खो, इस आग में जलनेवाले हमीं लोग नहीं हैं, करोड़ों हमारे साथी हैं। यह आग बहुत जल्द ही विषमता की फूस को भस्म कर देगी! जितनी तीव्र आग में हम जलेंगे उतना ही उग्र हमारा विद्रोह होगा। इसलिए जलो, खूब जलो।"

और फिर कमल दार्शनिक की भाँति सिर झुकाकर मन्द गति से राममोहन के हाते की ओर चल दिया।

ललित ने अनुभव किया कि कमल ने उसे नयी दृष्टि दी है, नया प्रकाश दिया है, वस्तुस्थिति को परखने के लिए नया दृष्टिकोण दिया है।

और जब वह कमल का काव्य-संग्रह देने के लिए शकुन के बँगले की ओर चला तब उसकी गति में दृढ़ता थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सत्रह

शाम को जब ललित घर लौटा तो द्वार पर बाबू श्यामसुन्दर का नौकर उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। उसने ललित को एक कागज दिया और कहा कि इसे भर कर लौटा दीजिये। ललित कागज लेकर अन्दर आ गया। आँगन में पहुँच कर उसने कागज खोलकर देखा। वह 'फिक्सड डिपाजेट अकाउन्ट' खोलने के लिए सेन्ट्रल बैंक का फार्म था।

ललित ने सरला और बाबू श्यामसुन्दर के ब्याह की स्थिति से तो समझौता कर लिया था पर उसकी आत्मा यह मानने को तैयार न थी कि बाबू श्यामसुन्दर से रुपया जमा कराया जाये। वह सोचता था कि यदि उसने उनसे एक भी पैसा लिया तो मोहल्ले वाले यही कहेंगे कि उसने बहन का सौदा किया है।

इसी उलझन में पड़ा वह चारपाई पर बैठ गया। उसने दया को बुलाया। वह आकर फर्श पर बैठ गयी।

"सरला कमरे में है क्या ?" उसने दबे स्वर में पूछा।

"परोस में गयी है। क्यों, क्या बात है ?" दया ने पूछा।

"बाबू श्यामसुन्दर ने बैंक का फार्म भेजा है। मैं नहीं चाहता कि उनसे एक भी पैसा लिया जाये। तुम्हारी क्या राय है ?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"मैं क्या बताऊँ? तुम जैसा ठीक समझो, करो।" दया बोली।

"तो फार्म लौटा दूँ?" ललित ने चारपाई से उठकर पूछा।

"लौटा दो।" दया ने धीमे स्वर में कहा।

उसी समय सरला आ गयी। ललित के हाथ में फार्म देखकर पूछा—

"क्या बात है, भैया?"

"कुछ नहीं! बाबू श्यामसुन्दर ने मुन्नी के नाम रुपया जमा करने के लिए फार्म भेजा है। हमारा विचार है कि फार्म लौटा दें।"

"क्यों! लाइये, मैं भरे देती हूँ! मुन्नी के नाम रुपया जरूर जमा होना चाहिए।" कहकर सरला ने ललित के हाथ से फार्म ले लिया और कमरे से कलम-दावात लाकर फार्म भरने लगी।

"संरक्षक के स्थान पर आपका नाम लिखे देती हूँ, भैया?" सरला ने कहा।

"मुझे नहीं चाहिए उनके रुपये।" कहकर ललित टहलने लगा।

"तो तुम्हारा लिखे देती हूँ, भाभी।" वह दया की ओर मुड़कर बोली।

"ना बाबा, मुझे तो इस झंझट से दूर ही रक्खो।" कहकर दया चौके में चली गयी।

सरला कठिनाई में पड़ गयी। उसकी हार्दिक इच्छा थी कि मुन्नी के नाम रुपया जमा हो। पर प्रश्न यह था कि सरंक्षक के स्थान पर किसके हस्ताक्षर हों। ललित और दया राजी नहीं थे। फिर.......?

सहसा बिजली की तरह एक विचार उसके मस्तिष्क में कौंध गया। क्यों न वही मुन्नी की सरंक्षिका बन जाये। वह अठारह साल की हो चुकी है और बालिग होने के नाते बैंक भी उसके सरंक्षिका बनने में कोई आपत्ति न करेगी।

सरंक्षक के स्थान पर अपना नाम लिखकर उसने हस्ताक्षर कर दिये।

"पन्द्रह साल के लिए रुपया जमा कराया है, भैया! लीजिये, फार्म दे आइये।" कहकर सरला ने फार्म ललित की ओर बढ़ा दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ललित ने फार्म पढ़ा और आश्चर्य से सरला की ओर देखने लगा।

× × ×

तीसरे दिन अत्यन्त सादगी से आर्य समाजी पद्धति द्वारा सरला का ब्याह बाबू श्यामसुन्दर के साथ सम्पन्न हो गया। वर पक्ष की ओर से कामेश्वर तथा बाबू श्यामसुन्दर के दो-एक घनिष्ट मित्र आये थे। वधू पक्ष की ओर से परोस की कुछ स्त्रियों के अतिरिक्त शकुन और शैलजा थीं। ललित ने कमल को भी बुला लिया था।

ललित और शकुन दोनों ने ही देखा कि शैलजा और कामेश्वर एक दूसरे से दूर रहने की चेष्टा कर रहे हैं उन्होंने बात करना तो दूर, एक दूसरे की ओर देखा तक नहीं। उनके उदासीन व्यवहार से ऐसा लग रहा था मानो दोनों बिल्कुल अपरिचत हों।

विवाह-संस्कार के पश्चात् विदा की करुण घड़ी आयी। यह समय ऐसा होता है जब पत्थरों का दिल भी पिघल जाता है। सरला जब दया के सीने में मुंह छिपा कर फूट-फुट कर रोने लगी तब सभी की आँखें भर आयीं। और तो और, मुन्ना-मुन्नी भी रोने लगे।

"सरला भोली-भाली लड़की है।" ललित ने रुद्ध कंठ से बाबू श्याम सुन्दर से कहा।" अगर उससे भूल-चूक हो जाये तो ध्यान न दीजियेगा।"

और फिर ललित की आँखों से आँसू की बूंदें सावन की वर्षा की तरह गिरने लगीं। कमल ने उसे धीरज बँधाने की चेष्टा की पर उसे समझाना तो दूर वह स्वयं बच्चों की तरह रोने लगा।

दया को छोड़कर सरला ललित से चिपट गयी। शकुन और दया रोती जा रही थीं और सरला को समझाती जा रही थीं। शैलजा आँगन के एक कोने में खड़ी अपने आँसू पोंछ रही थी। पास-परोस की स्त्रियाँ भी अपने को संयत नहीं रख पा रही थीं।

"भैया! सरला सिसक कर बोली। "मैंने बहुत कष्ट दिये हैं आपको। मुझे माफ कर देना, भैया, मुझे माफ कर देना।"

"माफी मुझे माँगनी चाहिए।" ललित सिसकता हुआ बोला।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"दोषी मैं हूँ। मैं......मैं....अपना धर्म भी पूरा न कर सका।"

और इसके बाद ललित ऐसा बिलख-बिलख कर रोया कि बाबू श्यामसुन्दर की आँखों में भी आँसू आ गये। कामेश्वर का हाथ पकड़कर वे बाहर चले गये।

आँसू, और सिसकियों के बीच सरला की विदा हुई। सरला के जाने के बाद घर में मातम की उदासी छा गयी। एक अजीब सा सूनापन ललित के तन-मन पर छा गया। शैलजा, शकुन और कमल के जाने के बाद वह निर्जीव सा चारपाई पर लेट गया। उसे लगा, जैसे सरला के रूप में घर की आत्मा ही चली गयी है।

उस दिन उसने भोजन भी नहीं किया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अट्ठारह

पुरुष की अपेक्षा नारी अधिक सरलता से परिस्थितियों तथा वातावरण के अनुकूल अपने को परिवर्तित कर लेती है। पुरुष यदि पाषाण है तो नारी मोम। यही कारण है कि ससुराल पहुँच कर नारी थोड़े समय में ही वर्षों के संस्कारों को भूलकर नये संस्कारों को ग्रहण कर लेती है और नये घर में इस प्रकार घुल मिल जाती है मानो वह वहीं जन्मी हो। सरला भी दो-चार दिनों में ही गोमती से घुल-मिल गयी। अपने मृदुल और मधुर व्यवहार तथा सहनशील स्वभाव के कारण उसने नौकरों तक का मन मोह लिया।

गोमती प्रसन्न थी क्योंकि सरला ने न तो घर गृहस्थी के कामों में दखल ही दिया और न गृह स्वामिनी के रूप में कभी अपने अधिकारों के प्रदर्शन की चेष्टा ही की। गोमती के अधिकार पूर्ववत रहे और इसीलिए वह सरला के प्रति अपनी ममता और अपने स्नेह का प्रदर्शन जी खोल कर करती रही। कामेश्वर के उत्तराधिकार से वंचित हो जाने से वह खिन्न और दुखी अवश्य थी किन्तु फिर भी आशा का सूत्र पूर्णतया नहीं टूटा था। "यदि सरला के सन्तान ही न हो तो।" रह रह कर यही विचार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसके मन में उठता था और इसी से उसके दग्ध हृदय को थोड़ी-बहुत शान्ति भी मिलती थी।

कामेश्वर को भी इस बात का दुख था कि वह मामाजी की अगाध सम्पत्ति का स्वामी नहीं बनेगा, परन्तु इस दुख की अपेक्षा में उसका वह सुख अधिक था जो सरला को निकट पाकर उसे आन्दोलित करता था। सरला को प्रथम बार जब उसने गोष्ठी में देखा था तभी वह उसकी दृष्टि में गड़ गयी थी। अब सरला उसके निकट थी—वह बहुत निकट थी पर थी मामी के रूप में। और यहीं उसका हृदय उसपर हावी हो जाता था। वह सरला को मामी के रूप में स्वीकार न कर सका। उसकी धारणा थी कि अठारह साल की पूर्ण युवती पैंतालिस साल के अधेड़ को अपना प्यार न दे सकेगी और उसे विश्वास था कि वह एक दिन सरला के हृदय के एकान्त कोने में अपना स्थान बना लेगा और फिर उसका मार्ग सीधा और साफ हो जायेगा। इसी उद्देश्य से वह अधिक से अधिक समय तक सरला के पास रहने की चेष्टा करता; जब-तब हास-परिहास भी कर बैठता मानों सरला उसकी मामी नहीं भाभी हो।

सरला को कामेश्वर का यह व्यवहार अच्छा न लगता। फिर भी वह इसका विरोध खुल कर न कर सकती थी। वह इतनी नादान थी कि कामेश्वर की आँखों में तैरने वाली घोर वासना के भाव को न समझ सके। वह उससे दूर रहने की चेष्टा करने लगी; उसे उससे भय लगने लगा।

कुछ दिन बाद जब ललित विदा कराने पहुँचा तब सरला प्रसन्न हो उठीं। बाबू श्यामसुन्दर ने ललित को आदर से कमरे में बिठाया। सरला ने अन्दर से जलपान का सामान भेज दिया।

"खाइये।" बाबू श्यामसुन्दर ने हँसकर कहा।

"मैं सरला से बड़ा हूँ। आपके यहाँ का कैसे खा सकता हूँ।" संकुचित स्वर में ललित बोला।

बाबू श्यामसुन्दर ठहाका मारकर हँसते हुये बोले—"इन दकियानूसी ख्यालों में क्या रक्खा है ? नाते-रिश्देतेदारों के यहाँ नहीं खाया जायेगा तो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फिर किसके यहाँ खाया जायेगा। खाइये। बेकार का संकोच ठीक नहीं।"

फिर ललित विरोध न कर सका। वह खाने लगा।

"कमल की पुस्तक प्रेस में दे दी है। महीने भर के अन्दर छप जायेगी।" बाबू श्यामसुन्दर ने जलपान के बाद ललित को बताया।

इस समाचार से ललित प्रसन्न हो उठा।

"बुरा न मानो तो एक बात कहूँ ?" दोनों हाथ मलते हुये संकोच से बाबू श्यामसुन्दर बोले।

"आपकी बात का बुरा कैसे मान सकता हूँ ?" ललित गंभीर स्वर में बोला। "कहिये, क्या कहना चाहते हैं।"

"तुम यह नौकरी छोड़ दो।' बाबू श्यामसुन्दर ने कहा।

"क्यों ?" चौंककर ललित ने पूछा।

"जब घर में ही काफी काम है तब बाहर नौकरी करने से क्या लाभ ? कामेश्वर का ध्यान काम में है नहीं। मैं चाहता हूँ तुम प्रेस का काम देखो।"

"यह कैसे हो सकता है ?" ललित ने विरोध किया। "नहीं, यह असम्भव है। आपके उपकारों के बोझ से वैसे ही बहुत दबा हूँ। अब और न दबाइये।" और ललित का गला भर आया।

बाबू श्यामसुन्दर समझ गये कि जोर देना बेकार है; ललित उनकी बात मानेगा नहीं। वे मौन हो गये।

कामेश्वर सरला और ललित को कार से छोड़ने आया। सरला मुन्ना-मुन्नी के लिए वस्त्र, फल, मिठाई और भांति-भांति के खिलौने लाई थी।

सरला को देखकर मुन्ना प्रसन्नता से तालियाँ बजा-बजाकर कहने लगा—"बुआजी आ गयीं ! बुआजी आ गयीं।"

सरला ने उसे गोद में लेकर चूमा और फिर वह खेल-खिलौनों में मग्न हो गया।

दया ने झपट कर सरला को सीने से लगा लिया।

सुबह शकुन सरला से मिलने आयी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"शैलजा जी कालेज गयीं क्या ?" सरला ने पूछा।

"उसे न जाने क्या हो गया है। दिन भर अपने कमरे में ही पड़ी रहती है। कहती है सिर में दर्द रहता है। कालेज जाना भी बन्द कर दिया है।" शकुन ने बताया।

सुनकर सरला को दुख हुआ। उदास स्वर में पूछा—"डाक्टर को दिखाया ?"

"वह दिखाने दे तब तो। कहती है, अपने आप ठीक हो जायेगा। उसकी जिद के सामने पिताजी भी कुछ नहीं कर सकते।"

उसके बाद सरला और शकुन काफी देर तक बातें करती रहीं। शकुन ने कोंच-कोंचकर ससुराल की बातें पूछीं और सरला संकुचित और लज्जित स्वर में उसके प्रश्नों का उत्तर देती रही।

शकुन ने सरला की बातों से निष्कर्ष निकाला कि वह ससुराल में पूर्ण रूप से सुखी है। शकुन ने सन्तोष की साँस ली।

"कमल की किताब तो प्रेस में चली गयी होगी ?" शकुन ने अन्त में पूछा।

"हाँ। महीने भर में ही छप जायेगी।" कहकर सरला कुछ रुकी और फिर धीमे स्वर में शकुन की ओर देखकर बोली—"कमल ने बिना किसी समझौते के संग्रह दे दिया है। मैं समझती हूँ उन्हें कुछ रुपया मिलना चाहिए।"

"अवश्य मिलना चाहिए। क्या तुमने उनसे कुछ बात की थी ?" शकुन ने पूछा। 'उनसे' से उसका तात्पर्य बाबू श्यामसुन्दर से था।

"अभी तो नहीं पर अब करूँगी।" सरला ने लजाकर कहा।

× × × ×

सरला कुछ दिन बाद फिर ससुराल चली गयी।

एक दिन अवसर देखकर वह बाबू श्यामसुन्दर से बोली—"आपने कमल से संग्रह तो ले लिया है, परन्तु उसे दिया कुछ नहीं।"

"और प्रकाशक तो कविता की पुस्तकों पर दस प्रतिशत रायल्टी भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुश्किल से देते हैं। मैं उसे पन्द्रह प्रतिशत दूँगा।" बाबू श्यामसुन्दर ने उसे आश्वासन दिया।

"रायल्टी तो किताबों की बिक्री पर दी जायेगी। मैं चाहती थी. . .।" बोलते-बोलते सरला रुक गयी।

"क्या चाहती हो तुम?" हँसकर बाबू श्यामसुन्दर ने पूछा।

"यह तो आप जानते ही हैं कि कमल किसी मित्र के यहाँ रहता है। उसकी आर्थिक दशा ठीक नहीं है। यदि. . . . .।" और फिर सरला अपना वाक्य पूरा न कर सकी।

"कुछ कहो तो। क्या उसे कुछ पेशगी दिलाना चाहती हो?"

सरला ने सम्मति सूचक सिर हिला दिया।

"तो इसमें संकोच की क्या बात थी? आज शाम को उसे चाय पर बुला लो। उससे मुख-पृष्ठ की डिजायन भी पसन्द करा लूँगा और रुपये भी दे दूँगा। कितना रुपया देना चाहती हो?"

"मैं क्या बताऊँ? जितना आप ठीक समझें।" सरला ने मन्द स्वर में कहा।

"चार सौ ठीक रहेगा?"

सरला ने फिर सम्मति सूचक सिर हिला दिया।

"ठीक है। आज शाम को उसे बुलाकर कह देना।" बाबू श्यामसुन्दर शेरवानी पहनने लगे।

"अगर कहें तो चाय पर भैया और शकुन को भी बुला लूँ?" सरला के स्वर में संकोच मूर्तिमान हो उठा।

"इसमें पूछने की क्या बात है? जरूर बुला लो।" हँसकर बाबू श्यामसुन्दर बोले।

उनके मुक्त हास्य से वह और भी संकुचित हो उठी।

बाबू श्यामसुन्दर के जाने के बाद सरला ने शकुन को फोन किया।

"मैंने उनसे बात कर ली है। वे कमल को चार सौ रुपये पेशगी दे देंगे।" सरला ने प्रसन्न स्वर में शकुन को बताया। "आज शाम को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हमारे यहाँ चाय है। आप ठीक पाँच बजे आ जायें और मील में भैया को फोन कर दीजिये कि कमल को लेकर वे भी आ जायें।"

"मैं अभी फोन कर दूँगी।" शकुन ने उत्तर दिया।

"आप भी जरूर आइयेगा।" सरला के स्वर में हार्दिक आग्रह था।

"जरूर आऊँगी।" शकुन ने वचन दे दिया।

नियत समय पर सब लोग पहुँच गये। चाय के बाद बाबू श्यामसुन्दर कमल और ललित गोल कमरे में बैठ गये। सरला शकुन को अपने कमरे में ले गयी।

बाबू श्यामसुन्दर ने कमल और ललित को मुख-पृष्ठ की डिजायन दिखायी। चित्र नगर के प्रसिद्ध कलाकार द्वारा बनाया गया था। दोनों ने चित्र बहुत पसन्द किया।

"आपने हमें अपना संग्रह प्रकाशित करने के लिए दिया इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ, कमल जी।" कुछ देर बाद बाबू श्यामसुन्दर विनम्र स्वर में बोले। "मैंने आपको पन्द्रह प्रतिशत रायल्टी देने का निश्चय किया है। यह है उसका एग्रीमेन्ट। इसपर हस्ताक्षर कर दीजिये।"

बाबू श्यामसुन्दर ने समझौते की दो प्रतियाँ कमल की ओर बढ़ा दीं। कमल ने दोनों पर बिना पढ़े ही हस्ताक्षर कर दिये। जब वह दोनों प्रतियाँ उन्हें लौटाने लगा तब बाबू श्यामसुन्दर बोले—"एक आप रख लीजिये।"

कमल ने एक प्रति अपने जेब में रख ली।

"आपने बिना पढ़े ही समझौते पर हस्ताक्षर कर दिये।" हँसकर बाबू श्यामसुन्दर बोले।

"पढ़ने की क्या आवश्यकता थी। मुझे आप पर विश्वास है।" कमल का उत्तर था।

"उसमें लिखा है कि मैं आपको एडवान्स के रूप में चार सौ रुपया दूँगा। यह रहे आपके रुपये।" कहकर उन्होंने जेब से सौ-सौ के चार नोट निकाल कर कमल की ओर बढ़ा दिये।

कमल और ललित आश्चर्य से बाबू श्यामसुन्दर की ओर देखने लगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"लीजिये।" कहकर बाबू श्यामसुन्दर ने नोट कमल के हाथ में थमा दिये।

कमल ने समझौते की प्रति जेब से निकाली। पढ़कर उसे फिर जेब में रख लिया और फिर नोट बाबू श्यामसुन्दर की ओर बढ़ा कर बोला—"मैं गरीब साहित्यकार हूँ। इतना रुपया कहाँ रक्खूँगा? इन्हें आप रख लीजिये। जब आवश्यकता होगी तब ले लूँगा।"

उसी समय शकुन सरला को साथ लेकर कमरे में अ गयी। सरला चुपचाप एक कुर्सी पर बैठ गयी। शकुन कमल के पास आकर बोली—"आयी हुई लक्ष्मी को ठुकराते हैं आप? नोट रख लीजिये। समय पर काम आयेंगे।"

"मैं इतने रुपयों का क्या करूँगा, शकुन जी? वस्त्र और भोजन मुझे मिल ही जाता है।" कमल ने विरोध किया।

"वस्त्र और भोजन के अतिरिक्त क्या मनुष्य की और कोई आवश्यकता है ही नहीं? कमल जी, आप क्यों संकोच कर रहे हैं? यह रुपया आपको दान में नहीं दिया जा रहा है। यह आपकी कमाई है; दिन की थकन और रात के जागरण का फल है; यह हृदय के रक्त की उन बूँदों का मूल्य है जिनसे आपने अपने गीत लिखे हैं।" शकुन आवेश से बोली।

"हृदय के रक्त की बूँदों का मूल्य कागज के इन टुकड़ों से नहीं चुकाया जा सकता। यदि.... यदि मेरे गीत पढ़कर एक भी निराश आत्मा को आशा की किरण मिली तो ... तो मेरा मूल्य मुझे मिल जायेगा; तो.. तो मैं दिन की थकन और रात के जागरण को सार्थक समझूँगा।" कमल भी भावावेश में आ गया।

"वह मूल्य तो आपको मिल गया।" धीमे और गंभीर स्वर में सरला बोली। "आपके गीत ने मुझे निराशा के क्षण में नयी प्रेरणा दी है, नया प्रकाश दिया है। फिर भी आपको रुपये लेने में आपत्ति नहीं करनी चाहिए। और कुछ नहीं तो कम से कम आप इनसे अपने मित्र का बोझ ही कुछ हल्का कर सकते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और तब कमल ने नोट जेब में रख लिए।

सबने सन्तोष की साँस ली।

पर जब गोमती को मालूम हुआ तब उसकी नाक-भौं सिकुड़ गयीं।

"यह कुलच्छिनी घर को लुटा कर ही चैन लेगी।" वह बड़बड़ाई। "कभी पैसा देखा हो तो दाँत से पकड़ना भी जाने।"

और कामेश्वर की प्रतिक्रिया भी कुछ इसी प्रकार की थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उन्नीस

शारीरिक व्याधियों की औषधि छोटे से छोटे डाक्टर के पास मिल सकती है पर चिन्ता-रोग का उपचार कोई नहीं कर सकता। किसी ने सत्य ही कहा है कि चिता तो मनुष्य को मृत्यु के बाद जलाती है पर चिन्ता की भयंकर ज्वाला जीवित मनुष्य को ही भस्म कर देती है। शैलजा भी इसी रोग से पीड़ित थी। उसके इस सन्देह की पुष्टि हो गयी थी कि उस चाँदनी रात में चाँद पर जो काला दाग लग गया था वह निरन्तर बढ़ रहा है और उसे भय होने लगा था कि वह दाग जल्द ही इतना बड़ा हो जायेगा कि संसार की दृष्टि उस पर पड़ने लगेगी। उसका रक्त पाप के बीज को जीवन दे रहा था। वह स्वयं पीली पड़ती जा रही थी। उसकी आँखें हर समय की चिन्ता और रात-रात भर के जागरण के कारण धँस गयी थीं। मानसिक यंत्रणा का भार असह्य हो रहा था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे, क्या न करे। कोई ऐसी अन्तरंग सहेली भी तो नहीं थी जिससे वह मन की बात कहकर व्यथा कम कर सकती या उससे कोई परामर्श ले सकती। मन-ही-मन वह घुली जा रही थी। उसका तन उस ज्वालामुखी की लपटों में झुलसा जा रहा था, जो उसके पेट में धधक रहा था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

काफी सोच-विचार के बाद एक ही रास्ता उसे दिखाई दिया। यदि कामेश्वर उससे तत्काल शादी करले तो वह कलंक से बच सकती ह। कामेश्वर से बात करने के विचार से वह एक दिन कालेज गयी। कामेश्वर उसे देखकर आश्चर्य में पड़ गया।

"तबियत तो ठीक है ?" उसने उखड़े स्वर में पूछा।

"ठीक ही है। जरा मेरे साथ आओ। मुझे तुमसे कुछ बातें करनी हैं।" वह कामेश्वर का हाथ पकड़कर कार तक ले गयी।

कामेश्वर पहले तो झिझका, पर बाद में बैठ गया। शैलजा कार ग्रीन पार्क में ले गयी। एक एकान्त स्थान पर उसने कार रोक दी।

"तुमने मेरे सामने जो प्रपोजल रक्खा था मैंने उस पर सोच लिया है। कई दिनों से तुमसे मिलने का इरादा कर रही थी, पर तबियत ढीली होने की वजह से आ न सकी।" शैलजा ने कामेश्वर का हाथ अपने हाथ में लेकर प्यार भरे स्वर में कहा। "मुझे तुम्हारा प्रपोजल मंजूर है।"

कामेश्वर ने धीरे से अपना हाथ उसके हाथों से खींच लिया। वह शैलजा की ओर व्यंग्य भरी मुस्कान से देखने लगा।

"डियर! मैं तुम्हारे बिना एक पल भी नहीं रह सकती। आई लव यू, डियर, आई लव यू! हम लोग कल ही सिविल मैरिज कर लेंगे।" शैलजा आतुर स्वर में बोली और उसने कामेश्व का हाथ फिर अपने हाथ में ले लिया।

"ऐसी जल्दी क्या है ?" कामेश्वर टालने के स्वर में बोला। "पहले हम ग्रेजुयेट तो हो लें।"

"उसमें तो अभी महीनों की देर है। मेरे लिए एक-एक मिनट भारी है। डोन्ट यू सी ? आई लव यू सो मच !" शैलजा की व्यग्रता बढ़ती जा रही थी।

"उस दिन तो तुमने कहा था कि तुम मुझसे घृणा करती हो।"

"घृणा प्यार का ही दूसरा नाम है।"

'मेरे लिए घृणा और प्यार दो विरोधी चीजें हैं।" कामेश्वर अपना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हाथ खींचकर बोला। "यू कैन इदर लव आर हेट अ मैन! यू कान्ट डू बोथ।"

"विश्वास करो, कामेश्वर! मुझे तुमसे प्यार है, सच्चा प्यार है।" शैलजा आँखों में आसू भर कर बोली। "यह आँसू मेरे गवाह हैं।"

"होगा। मगर अभी शकुन की शादी नहीं हुई है। बड़ी बहन क्वाँरी रहे और छोटी.......।"

"उनका क्या है?" कामेश्वर का वाक्य बीच में ही काटकर चिढ़े स्वर में शैलजा बोली—"वे ललित को प्यार करती थीं। उसने उनके प्यार को ठुकरा कर दूसरी लड़की से शादी कर ली। वे अगर अब जिन्दगी भर क्वारी ही रहें तो क्या मैं भी शादी न करूँ?"

"ललित बुद्धिमान मालूम होता है।" कामेश्वर ने कहा। "चतुर व्यक्ति उस लकड़ी से कभी भी शादी नहीं करता जिससे वह प्यार करता है।"

शैलजा भीत दृष्टि से उसकी ओर देखने लगी।

"संसार में सुखी व्यक्ति वही है जिसके घर में पत्नी है और बाहर प्रेयसी। न पत्नी प्रेयसी का स्थान ले सकती है और न प्रेयसी पत्नी का। मुझे खेद है मिस शैलजा, मैं तुमसे शादी नहीं कर सकता। अ ग्लेमर गर्ल कैन नेवर बी अ गुड हाउस वायफ।" कामेश्वर आवश्यकता से अधिक रूखे स्वर में बोला।

शैलजा को अपनी आशाओं का महल ढहता दिखाई दिया। भावी की कल्पना से वह काँप उठी। उसकी आँखों में आँसू आ गये और वह दोनों हाथों में मुंह छिपाकर सिसकने लगी।

कामेश्वर सिगरेट सुलगा कर धुंये के गोले बनाने लगा।

"तब तुम्हारा प्यार क्या धोखा था? मीठी-मीठी बातों में बहकाकर मुझे कहीं का न रखा!" सिसक कर शैलजा ने कहा।

"हम दोनों एक दूसरे को छलने की कोशिश कर रहे थे। जीत मेरी हुई। इसमें दुखी होने की क्या बात है? मैं न सही, कमल ही सही।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कामेश्वर ने व्यंग्य से कहा। कमल के प्रति पनपने वाली घृणा उसके स्वर में साकार हो उठी।

"इन बातों से अच्छा तो यही है कि मेरा गला घोंट दो। क्या मुंह लेकर जिन्दा रहूँ अब।" कहकर वह फिर बिलख-बिलख कर रोने लगी।

शैलजा सिसकती रही।

कामेश्वर सोचने लगा कि मामा की सम्पत्ति से तो अब कानी कौड़ी की आशा है नहीं। क्यों न शैलजा से शादी करके रायबहादुर की सम्पत्ति का स्वामी बन जाऊँ! शैलजा सुन्दर है, पढ़ी-लिखी है और सबसे बड़ी बात यह है कि बड़े बाप की बेटी है। इससे अच्छी लड़की और कहाँ मिलेगी? तभी उसके हृदय ने शंका की। शैलजा स्वच्छन्द तितली है। उसे बन्दी बनाकर नहीं रक्खा जा सकता। वह अच्छी पत्नी नहीं बन सकती, कभी नहीं बन सकती।

"कामेश्वर, अगर तुम मुझसे शादी नहीं करोगे तो मैं जहर खा लूँगी।" उसके कन्धे पर अपना सिर टिकाकर रुद्ध कंठ से शैलजा बोली। "तुम्हें मुझसे शादी करनी ही पड़ेगी। मैं... मैं... तुम्हारे... बच्चे... की... माँ...।" शैलजा आगे न कह सकी। वह फूट फूटकर रोने लगी और उसने अपना चेहरा अपनी बाहों में छिपा लिया।

कामेश्वर को पसीना आ गया। शैलजा के प्यार और शादी की उतावली का कारण उसकी समझ में आ गया। ओह! पाप के कलंक से बचने के लिए मुझे फाँसा जा रहा था!

"यह क्या बक रही हो तुम?" कामेश्वर कड़े स्वर में बोला। 'न जाने किसका पाप मेरे सिर मढ़ना चाहती हो!"

"ऐसा न कहो, कामेश्वर, ऐसा न कहो!" बिलख कर शैलजा बोली। "भगवान की सौगन्ध! तुम्हारे सिवाय......।"

"जो एक पुरुष के आगे झुक सकती है वह औरों के आगे भी झुक सकती है।" कामेश्वर कार से उतर कर बोला। "शादी करना तो दूर, मैं तुम जैसी लूज लड़की से बात करना भी नहीं चाहता।" और कामेश्वर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ने जोर से कार का द्वार बन्द कर दिया।

शैलजा को लगा कि कामेश्वर ने उसके गाल पर जोर से तमाचा मार दिया है। दर्द से तिलमिलाकर वह चीख कर बोली—'प्यार का ढोंग दिखाकर मेरे शरीर से खेलना ही तुम्हारा उद्देश्य था! तुम मनुष्य के वेश में जंगली जानवर हो।"

"डोन्ट बी एन्ग्री, मिस! बीस्ट्स आर आलवेज आफ्टर ब्यूटी।" कहकर कामेश्वर विजयपूर्ण अट्टहास कर उठा। "और हाँ, तुम्हें जहर खाने की जरूरत नहीं है। तुम तो बड़े बाप की बेटी हो। किसी भी लेडी डाक्टर के पास चली जाना। एवरी थिंग विल बी ओ० के०।"

और फिर कामेश्वर शैलजा की ओर देखे बिना ही तेजी से फाटक की ओर चल दिया।

शैलजा अपने दुर्भाग्य पर आँसू बहाती रही।

जब वह घर पहुँची तब निराशा, पीड़ा और चिन्ता से उसका मुख मलीन था। शकुन बरामदे में ही थी। शैलजा लड़खड़ाती हुई अपने कमरे में चली गयी। शकुन ने सोचा, उसकी तबियत ज्यादा खराब है। वह भी उसके कमरे की ओर गयी। कमरे में पहुँच कर उसने देखा कि शैलजा पलँग पर पड़ी सुबक-सुबक कर रो रही है।

शैलजा मन-ही-मन किसी आग में जल रही है, यह शकुन से छिपा न था। उसे बिलखते देखकर उसका भी मन भर आया। वह पलँग पर बैठकर शैलजा की पीठ पर स्नेह से हाथ फेरने लगी।

शकुन के स्पर्श से शैलजा छटककर दूर हट गयी। उसने तकिये में मुंह छिपा लिया।

"क्या बात है, शैल?' शकुन ने भीगे स्वर में पूछा।

"मैं पापिन हूँ। मैंने बहुत बड़ा पाप किया है। मुझे न छुओ, जीजी, मुझे न छुओ।" कहकर वह फिर बिलखने लगी।

शैलजा सदा शकुन को 'सिसी' कहकर ही सम्बोधित करती थी। उसके मुख से 'जीजी' सुनकर शैलजा ने चौंककर उसकी ओर देखा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हृदय का स्नेह उमड़ पड़ा और उसने शैलजा का मस्तक चूमकर साश्रु-नयनों से कहा—"शैल! तुम्हें क्या दुःख है? क्या पाप किया है तुमने? अपनी जीजी को बताओ।"

"किस मुंह से बताऊँ, जीजी! मैं कुल-कलंकिनी हूँ। मैं....मैं दुनिया को अपना मुंह नहीं दिखा सकती।" शैलजा की गोद में अपना मुख छिपाकर शैलजा सिसकती हुई बोली।

शकुन ने अपने अंचल से उसके आँसू पोंछे। फिर अपने हाथ से उसका मुख ऊपर उठाकर बोली—"मेरी अच्छी शैल! अपनी जीजी से कुछ न छिपाओ? क्या बात है?"

और फिर शैलजा ने रुक-रुककर रुद्धकंठ से शकुन को अपने मन की व्यथा बता दी। उसके बाद वह फिर सिसक कर बोली—"अगर डैडी को मालूम हो गया तो क्या होगा? जीजी, मुझे बचाओ! मैं अंधी थी, पागल थी!"

शैलजा की बात सुनकर शकुन स्तब्ध रह गयी। शैलजा इतनी भारी भूल कर बैठी होगी इसकी वह कल्पना तक न करती थी। वह गंभीर होकर विचारों के गहरे सागर में डूबने-उतराने लगी।

शकुन के गंभीर मौन का अर्थ शैलजा ने कुछ और ही समझा। आँखों से आँसू पोंछकर धीमे स्वर में बोली—"क्या तुम्हें भी मुझसे नफरत हो गयी, जीजी! होनी ही चाहिए! मैं पापिन जो हूँ! अब...अब...आत्म घात करने के अलावा और कोई रास्ता ही नहीं है।"

शकुन के धैर्य का बाँध टूट गया। उसकी आँखों से आँसू की धार बहने लगी। शैलजा को सीने से लगाकर रुद्धकंठ से बोली—"ऐसा न कहो शैल। तुम चिन्ता न करो। सब ठीक हो जायेगा। मगर....मगर....तुम यह कर क्या बैठीं?"

शकुन के प्रश्न का उत्तर शैलजा ने आँसुओं की मूक भाषा में दिया।

शैलजा उसकी पीठ सहलाती रही। कुछ देर बाद धीमे स्वर में बोली—"इस अवस्था में अधिकतर लड़कियाँ भावुकता में पड़कर भूल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर बैठती हूँ।" फिर रुक कर कहा--"दोषी तुम नहीं, कामेश्वर है।, उसने प्यार के पवित्र अंचल पर वासना की कालिख पोत दी है। खैर तुम निराश न हो। मैं सब कुछ ठीक कर लूँगी।"

शैलजा ने कृतज्ञता से उसकी ओर देखा।

शकुन उठ कर गैलरी में गयी जहाँ फोन रक्खा था।

× × ×

ललित के सामने खुली तो फायल पड़ी थी पर उसका ध्यान कहीं और था। वह सोच रहा था सरला के बारे में, दया के बारे में, मुन्ना-मुन्नी के बारे में! सरला के जाने के बाद घर में वैसे ही उदासी छा गयी थी। जब दया भी मैके चली गयी तब तो घर जैसे काटने को दौड़ने लगा। मील से जब वह घर जाता तब न तो मुन्ना ही आकर उससे चिपट जाता और न मुन्नी की ही किलकारी सुनाई देती। उसे लगता जैसे वह समाधि के अन्दर जीवित ही दबा दिया गया है।

वह अपने विचारों में डूबा था। फायल मेज पर खुली पड़ी थी। जब चपरासी ने सामने आकर सलाम किया तब भी उसका ध्यान न टूटा।

"हुजूर, आपका फोन है।" चपरासी ने विनम्र स्वर में कहा।

"हूँ! क्या कहा?" चौंक कर ललित बोला।

"आपका फोन है।" कहकर चपरासी चला गया।

ललित उठकर फोन के पास गया। चोंगा उठाकर उसने कहा—"हलो! मैं ललित बोल रहा हूँ।"

"मैं शकुन बोल रही हूँ।" उधर से आवाज आयी।

"वह तो मैं स्वर से ही पहचान गया। कहिये, क्या आज्ञा है?" ललित चिढ़ाते हुये बोला।

"तुमसे बहुत जरूरी काम है। शाम को मील से सीधे यहीं आना।"

"जो आज्ञा। और कुछ?"

"और बातें यहीं होंगी। मैंने बाबू जी से कह दिया है। तुम उन्हीं के साथ कार पर चले आना।" शकुन का संगीतमय स्वर आया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"कार न होती तब भी सिर के बल चलकर आता" ललित ने हँसकर कहा और फिर चोंगा रख दिया।

अपने स्थान पर बैठकर ललित सोचने लगा कि ऐसा कौन सा आवश्यक काम आ गया है जो शकुन ने बुलाया है। वह ध्यान दौड़ाता रहा, पर काफी सिर खपाने के बाद भी उसकी समझ में कुछ न आया।

जब रायबहादुर के अर्दली ने आकर सलाम की तब उसकी विचार-धारा भंग हुई।

"क्या है ?" उसने दृष्टि उठाकर पूछा।

"साहब जा रहे हैं। उन्होंने आपको सलाम भेजा है।" अर्दली ने कहा।

"ओह! मैं तो भूल ही गया था।" कहकर ललित ने अपना झोला उठाया और वह तेजी से चल दिया।

मार्ग में रायबहादुर ने मुस्कराकर कहा—"मैंने इसी महीने से तुम्हारे वेतन में बीस रुपये बढ़ा दिये हैं।"

"मेनी मेनी थैंक्स सर।" प्रसन्न होकर ललित ने अपनी कृतज्ञता प्रकट की।

"थैंक्स शकुन को देना।" कहकर रायबहादुर हँस पड़े।

ललित को यह समझते देर न लगी कि शकुन ने ही रायबहादुर से कहकर उसका वेतन बढ़वाया है।

कार जब कोठी पर पहुँची तब शकुन बरामदे में टहल रही थी। जैसे ही कार पोर्टिको में जाकर रुकी वैसे ही शकुन ने आकर द्वार खोल दिया।

"क्या बात है, बेटी? आज बहुत सेवा कर रही हो!" कार से उतर कर रायबहादुर हँसते हुये बोले।

शकुन लजा गयी।

"जाइये, बाबूजी! आप समझते हैं कि मैं स्वार्थिन हूँ।" रूठकर शकुन बोली।

"अरे, मैं तो हँस रहा था! पगली कहीं की।" कहकर रायबहादुर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

धीमे स्वर में विरोध किया।

"तुम चुप रहो। यह बम्बई है। यहाँ वही मनुष्य समझा जाता है जो अच्छे कपड़े पहनता है।" शकुन मन्द स्वर में बोली। "अगर अच्छे कपड़े नहीं पहनोगे तो होटल वाले......।"

"समझेंगे कि मैं नौकर हूँ। ठीक तो है।"

"मगर यहाँ तुम हमारे नौकर नहीं, साथी हो।" शकुन ने जल्दी से कहा।

दूकानदार ने मर्सरायज्ड पापलेन की छः कमीजें काउन्टर पर रखकर पूछा—"पतलूनें समर की दूँ या मक्खनजीन की?"

शकुन ने सोचा मक्खनजीन की अपेक्षा समर की पतलूनें ही ठीक रहेंगी। उनकी क्रीज भी खराब नहीं होगी और वे गन्दी भी नहीं होंगी। उसने दूकानदार से कहा—"समर की ही निकाल दीजिये। और हाँ, चार ही काफी होंगी।"

एक क्षण बाद ही पतलूनें भी काउन्टर पर आ गयीं। दूकानदार विनम्रता से ललित की ओर मुड़कर बोला—"अन्दर ड्रेसिंग रूम है। आप एक शर्ट और पेन्ट ट्राई कर लें।"

ललित एक कमीज और पतलून लेकर अन्दर चला गया।

"कितना हुआ?" शकुन ने अपना पर्स खोलते हुये पूछा।

दूकानदार ने बिल बनाकर सामने रख दिया। शकुन ने रुपये दे दिये।

ललित जब बाहर आया तो वह नयी कमीज और पतलून पहने था। फिटिंग इतनी अच्छी थी कि कोई भी यह नहीं कह सकता था कि यह वस्त्र सिले सिलाये लिए गए हैं। ललित ने पुरानी कमीज और पतलून काउन्टर पर रखकर शकुन से पूछा—"ठीक है?"

"एकदम फिट है। अब यही पहने रहो।" कहकर शकुन वस्त्रों का बंडल उठाने लगी, परन्तु तभी ललित ने मुस्कराते हुये आगे बढ़कर बन्डल उठा लिया।

शकुन ने देखा कि नये वस्त्रों पर ललित के पुराने जूते फब नहीं रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसने ललित के लिए नये जूते भी ले लिये।

टैक्सी जब होटल की ओर चली तब शकुन ने हँसकर कहा—"अब मालूम होता है कि आदमी हो।"

"और अभी तक क्या जानवर था?" ललित ने कृत्रिम रोष और गंभीरता से पूछा।

"शी....! आदमी को क्रोध नहीं करना चाहिए।"

और फिर दोनों खिलखिला कर हँस पड़े।

शैलजा ने जब ललित को नये वस्त्रों में देखा तब वह मुस्करा कर बोली—"तुमने तो ललित का काया-कल्प ही कर दिया, जीजी।"

साधारणतया ललित शैलजा की बात का उत्तर नहीं देता था क्योंकि वह उससे डरता था। पर उस दिन वह प्रसन्न मुद्रा में था और उसकी अभ्यस्त दृष्टि ने यह भी देख लिया था कि शैलजा के स्वभाव में पहले सी गर्मी नहीं रही है। इसलिए, इससे पहले कि शकुन कुछ कहे, वह बोल पड़ा—"केवल काया-कल्प ही नहीं, मन का कल्प भी कर दिया है।"

शैलजा खिलखिला कर हँस पड़ी। ललित ने उसका साथ दिया। बिचारी शकुन संकुचित होकर दूसरे कमरे में भाग गयी।

रात को भोजन के उपरान्त शैलजा तो सोने के कमरे में चली गयी परन्तु शकुन और ललित गोल कमरे में ही बैठे रहे। खिड़की खुली हुई थी और समुद्री हवा के ठंडे झोंके ललित को बहुत भले लग रहे थे। रेडियो से कोई नाटक प्रसारित हो रहा था। ललित आँखें बन्द किये नाटक को ध्यान से सुन रहा था।

"जीजी, रेडियो बन्द कर दो। मुझे नींद लगी है।" दूसरे कमरे शैलजा का स्वर आया।

शकुन ने रेडियो बन्द कर दिया ललित ने आंखें खोल दीं। "आओ बालकनी में बैठ कर समुद्र को देखें।" शकुन ने उठकर कहा।

दोनों बालकनी में कुर्सियाँ डाल कर बैठ गये। उस चाँदनी रात में ललित को समुद्र का दृश्य अत्यन्त रोमांचकारी लगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"ललित, तुम जानते हो मुझे तुमपर पूरा भरोसा है शकुन ने ललित की ओर देखे बिना ही धीमे स्वर में कहा। मुझे विश्वास है तुम मुसीबत में हमारी सहायता करोगे।"

शकुन की अटपटी बात सुनकर ललित ने अपनी दृष्टि समुद्र की लहरों से हटाकर शकुन के चेहरे पर जमा दी और फिर कृत्रिम गंभीरता से पूछा—"कौन सी मुसीबत आ पड़ी है तुम पर?"

"मैं बम्बई क्यों आयी हूँ, जानते हो?" शकुन ने अपनी दृष्टि समुद्र की ओर ही रक्खी।

"मन बहलाने और पैसा बहाने के लिए।"

"नहीं, यह बात नहीं है।" इस बार शकुन ने अपनी दृष्टि ललित की ओर करके कहा।" हम मुसीबत में फँस गयी हैं और उससे छुटकारा पाने के लिये हमें तुम्हारी मदद की जरूरत है। मदद करोगे न?"

"अगर विश्वास न था तो मुझे लायी ही क्यों?" ललित ने अपनी आँखें समुद्र की ओर करके पूछा।

"तुम ठीक कहते हो! मुझे तुम पर पूरा विश्वास था तभी तो तुम्हें लायी हूँ। बात यह है....! ओह, कैसे कहूँ, कुछ समझ में नहीं आता!" शकुन परेशानी के स्वर में बोली। "ललित, शैलजा बहुत भारी भूल कर बैठी है। नहीं, इसमें दोष उसका नहीं है, दोष कामेश्वर का है। पुरुष के पाप का फल नारी को भोगना पड़ रहा है।"

शकुन की बात सुनकर ललित हड़बड़ा गया। वह धीमे स्वर में बोला—"यह क्या कह रही हो तुम?"

"ललित, अगर यह बात खुल गयी तो हमारे वंश और नाम पर धब्बा लग जायेगा! इसीलिए मैं उसे यहाँ ले आयी हूँ।" अपनी कुर्सी ललित की कुर्सी के निकट खींचकर शकुन बोली। "यहाँ उसका अबारशन...।"

"लेकिन....लेकिन यह तो पाप है....।" ललित बीच में ही बोला।

"एक पाप को छिपाने के लिए दूसरा पाप करना ही पड़ेगा। और कोई चारा ही नहीं है। हमारी प्रतिष्ठा, हमारा सामाजिक मान दाँव पर है।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शकुन व्यग्रता से बोली।

"प्रतिष्ठा...सामाजिक मान।" ललित व्यंग्य से बोला। "अगर पहले ही इनका ध्यान रक्खा होता तो.....।"

"बहस करने से काम नहीं चलेगा। तुम्हें मदद करनी ही पड़ेगी, मेरे लिए!" शकुन का स्वर अवरुद्ध हो गया।

ललित कुछ देर तक शकुन की ओर देखता रहा और फिर धीमे स्वर में बोला—"जो कुछ करूँगा, तुम्हारे लिए ही करूँगा। शैलजा जैसी गर्वीली लड़की.......।"

"उसका गर्व चूर-चूर हो गया है, ललित।" शकुन बीच में ही बोली। उसे इस समय क्रोध नहीं, दया चाहिए; घृणा नहीं, सहानुभूति चाहिए। अगर तुमने मेरी मदद न की तो वह जहर खा लेगी।

"बोलो, क्या करना है मुझे?" कुछ देर मौन रह कर ललित ने मन्द स्वर में पूछा।

"अभिनय।" कहकर शकुन ने अपनी योजना उसे बता दी।

"परन्तु....।" पूरी बात सुनकर ललित ने शंका की।

"तुम वचन दे चुके हो।" शकुन ने मुस्करा कर कहा।

× × ×

दूसरे दिन सुबह जब सब लोग चाय पी चुके तब वेटर ने सूचित किया कि टैक्सी आ गयी है। सूचना देकर वेटर चला गया।

"जाओ, ललित!" शकुन ने कहा और फिर शैलजा की ओर मुड़कर बोली, "मैंने ललित को समझा दिया है। जाओ। सब ठीक हो जायेगा।"

शैलजा पानी-पानी हो गयी। जिस ललित का उसने सदा अपमान किया, जिसे उसने कभी नौकर के अतिरिक्त और कुछ नहीं समझा, उसी ललित के सामने उसकी दृष्टि झुक गयी।

"जीजी, तुम नहीं....।" शैलजा ने मन्द स्वर में कहा।

"मेरा जाना ठीक नहीं। तुम जाओ ललित के साथ। घबराओ मत। चलो, नीचे तक छोड़ आऊँ तुम लोगों को।" कहकर शकुन ने शैलजा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का हाथ पकड़ लिया।

पिछली सीट पर शैलजा और ललित बैठ गये। टैक्सी चल दी। शकुन फिर कमरे में आ गयी।

"आपको जीजी ने सब कुछ....।" जब टैक्सी कुछ दूर निकल गयी तब शैलजा ने रुँआसे स्वर में कहा, पर वह अपना वाक्य पूरा न कर पायी।

ललित ने धीरे से सिर हिला दिया।

"आपको मुझसे नफ़रत हो गयी होगी।" आँखों में आँसू भरकर शैलजा बोली।

"मैं पापी से नहीं, पाप से घृणा करता हूँ।" ललित धीमे स्वर में बोला।

शैलजा सड़क की ओर देखने लगी।

टैक्सी लेडी डाक्टर मिस दमयन्ती दामले की क्लीनिक के सामने रुक गयी। ललित ने टैक्सी का मीटर देखकर पैसे दे दिये। दोनों दवाखाने में पहुँचे।

दैवात् उस समय क्लीनिक में लेडी डाक्टर तथा उसकी नर्स के अतरिक्त और कोई न था। ललित ने मन-ही-मन भगवान को धन्यवाद दिया।

"डाक्टर, मुझे आपसे कुछ राय लेनी है।" ललित ने शैलजा को अपने पास बिठाकर कहा।

"वेल! माई कन्सल्टेशन फी इज टेन रुपीज।" लेडी डाक्टर ने ललित को सूचित किया और फिर उसने नर्स की ओर देखा। नर्स दूसरे कमरे में चली गयी।

"ठीक है। लेकिन कन्सल्टेशन के अलावा मुझे आपसे और भी काम लेना है।" ललित मुस्कराकर बोला, "आप तो जानती हैं कि हमारे देश को आजकल फेमिली प्लेनिंग की कितनी जरूरत है।"

"यस, यस! आप फेमिली प्लेनिंग के बारे में राय लेना चाहते हैं?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"वह तो बाद की बात है, डाक्टर! अभी तो....।" बोलते-बोलते ललित रुक गया और फिर धीमे स्वर में बोला। "हम लोगों की शादी तीन महीने पहले हुई है। शी इज माई वायफ।"

ललित की बात सुनकर शैलजा चौंक पड़ी। शकुन ने उसे यह तो बताया नहीं था कि उन्हें पति-पत्नी का अभिनय करना पड़ेगा। उसने ललित की ओर अजीब दृष्टि से देखा। ललित ने लेडी डाक्टर की दृष्टि बचाकर उसका हाथ दबा दिया। शैलजा उसके संकेत को समझ गयी। उसने दृष्टि झुका ली।

"यू हैव अ चार्मिंग वायफ।" लेडी डाक्टर ने शैलजा और ललित को प्रसन्न करने के लिए कहा।

"थैंक्स!" ललित ने उत्तर दिया। "हम सोच ही रहे थे कि किसी फेमिली प्लेनिंग सेन्टर में जायें मगर....मगर....यू नो, मैन प्रपोजेज, गाड डिस्पोजेज।"

"ओह, समझी!" हँसकर लेडी डाक्टर बोली।

"अब आपही बताइये, इतनी जल्दी माँ-बाप बनना कहाँ तक ठीक है? मैं कई दिनों से इनसे कह रहा था कि डाक्टर के यहाँ चलो, वे सब ठीक कर देंगी। मगर आप तो जानती हैं कि माँ का दिल कैसा होता है। बहुत मुश्किल से आज राजी हुई हैं आने के लिए। अब आप हमारी मदद कीजिये।"

"डाक्टर का काम ही मदद करना है। लेकिन आप जानते हैं, यह काम खतरे का है। अगर जरा भी बात लीक हुई तो आप भी थाने में जायेंगे और हमारा लायसेन्स भी कैन्सिल हो जायेगा।" लेडी डाक्टर ने आगे झुककर धीमे स्वर में कहा।

"मैं तो आपके पास बहुत आशा लेकर आया था, डाक्टर!" ललित ने उदास होकर कहा और उसके चेहरे पर भारी निराशा का भाव उभर आया।

"लेकिन फिर भी तुम्हारी मदद करना चाहती हूँ। यू आर अ यंग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कपुल।" लेडी डाक्टर कुछ सोचती हुई बोली। "मैं तुम्हारी मदद करूँगी। मगर.... मगर मैं पाँच सौ रुपया लूँगी।"

"पाँच सौ!" ललित आश्चर्य से बोला। "दिस इज टू मच, डाक्टर।"

"सौ रुपया नर्स को देना पड़ेगा। यू सी, टु क्लोज हर माउथ। मुझे सिर्फ चार सौ बचेगा। ऐन्ड दिस इज नथिंग फार सच अ बिग रिस्क! बोलो, तैयार हो?" लेडी डाक्टर ने उत्सुकता से पूछा।

"और कोई चारा भी नहीं है।" कहकर ललित ने सौ-सौ के पाँच नोट जेब से निकालकर लेडी डाक्टर की ओर बढ़ा दिये।

लेडी डाक्टर ने रुपये लेकर अपने बैग में रख लिये और फिर मुस्कराकर बोली—"तुम्हारी वायफ की माँग भी सूनी है और पैर भी।"

ललित काँप गया। शैलजा भी डर गयी। अगर उसे पहले ही शकुन ने बता दिया होता तो वह माँग में सिन्दूर लगा लेती! अब क्या हो?

"हम लोग काश्मीरी ब्राह्मण हैं।" ललित ने स्वर को स्वाभाविक रखने की चेष्टा करते हुये उत्तर दिया। "हमारे यहाँ सिन्दूर और बिछुये का चलन नहीं है।"

ललित की बात सुनकर लेडी डाक्टर फिर मुस्करायी। उसने ललित की घबराहट देखकर हँसते हुये कहा—"डोन्ट फियर! हमें पैसे से मतलब है।"

ललित ने उसकी बात का कोई उत्तर नहीं दिया।

"नर्स!" लेडी डाक्टर ने ऊँचे स्वर में पुकारा। और जब नर्स आ गयी तब बोली—"इन्हें अन्दर ले चलो।"

नर्स शैलजा के पास आकर खड़ी हो गयी। शैलजा ने कातर और भीत दृष्टि से ललित की ओर देखा।

"अन्दर जाओ, शैल! घबराओ मत! डाक्टर पर भरोसा रक्खो? मैं यहीं रहूँगा।" ललित ने शैलजा की पीठ थपथपा कर कहा।

शैलजा जब खड़ी हुई तब वह काँप रही थी।

"बी ब्रेव, माई गर्ल।" लेडी डाक्टर ने मीठे स्वर में कहा। "तीन-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चार घंटे बाद तुम मजे से घर चली जाना।" फिर ललित की ओर मुड़कर बोली—"आप तब तक यहीं वेट करेंगे, मिस्टर.....! अरे, मैंने आपका नाम तो पूछा ही नहीं।"

"प्रकाश। और वायफ का नाम है किरण।" ललित बहुत सफाई से स्वाभाविक स्वर में झूठ बोल गया।

"लवली नेम्स।" कहकर लेडी डाक्टर शैलजा को अन्दर ले गयीं।

नर्स ने ललित की ओर मदभरी, मुस्कराती हुई आँखों से देखा और फिर वह भी अन्दर चली गयी।

ललित बेचैनी से बाहर के कमरे में प्रतीक्षा करता रहा।

और जब दोपहर के बाद ललित और शैलजा होटल पहुँचे तब थोड़ी दुर्बलता के अतिरिक्त शैलजा पूर्णतया स्वस्थ थी। शैलजा को देखकर ही शकुन समझ गयी कि उनके बम्बई आने का उद्देश्य पूरा हो गया है। वह प्रसन्न हो उठी और उसने आँखों के द्वारा ललित को धन्यवाद देकर अपनी हार्दिक कृतज्ञता जता दी।

तीन-चार दिन में शैलजा की दुर्बलता भी दूर हो गयी। उसके चेहरे पर फिर गुलाबी पन आ गया। उसकी आँखों में फिर उत्साह और उमंगों की ज्योति आ गयी।

शकुन ने सोचा कि इतनी जल्दी लौटकर जाना ठीक नहीं। जब बम्बई आये हैं तो अच्छी तरह घूम ही लिया जाये। तब तक शैलजा और भी ठीक हो जायेगी।

बम्बई में घूमने-फिरने के स्थानों की क्या कमी? वे लोग कभी चौपाटी की सैर करते, कभी जुहू-तट का आनन्द लेते; कभी हैंगिंग गार्डेन से; कभी कमलानेहरू पार्क से; बम्बई नगरी की छटा निहारते, और कभी मैरिनड्राइव पर ही चहल कदमी करते।

ललित के लिए सभी स्थान नये थे। उसे घूमने-फिरने में बहुत आनन्द आता। शैलजा के प्रति उसके हृदय में जो मैल था वह धीरे-धीरे धुल गया। वह सोचता शकुन ठीक ही कहती है। शैलजा को क्रोध और घृणा नहीं,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दया और सहानुभूति चाहिए। जिस शैलजा से वह घबराता था, उसी से वह घुल-मिल गया।

एक दिन शैलजा हँसी-हँसी में बोली—"मैंने आपको बहुत भला-बुरा कहा है। कई बार अपमान कर चुकी हूँ आपका। और आपने मुझे क्षमा कर दिया। मैं तो समझती थी आप जीवन भर क्षमा नहीं करेंगे।"

शकुन उस दिन अकेले ही घूमने चली गयी थी।

"मैं यह सिद्ध करना चाहता हूँ कि पुरुष में नारी की अपेक्षा अधिक क्षमाशीलता होती है। मैं यह भूल गया हूँ कि आपने मेरे साथ क्या-क्या किया है, पर...पर आपके साथ जो व्यवहार हुआ है क्या आप उसे भूल सकती हैं?"

ललित की बात से शैलजा का घाव हरा हो गया। उदासी की घटा उसके मुख पर छा गयी। दृष्टि फर्श पर गड़ाकर वह धीमे स्वर में बोली—"शायद कभी नहीं।" और फिर वह उठकर दूसरे कमरे में चली गयी।

ललित ने सोचा कि बेकार ही शैलजा के दिल को दुखाया। आत्म-ग्लानि से उसका मन भर गया। शैलजा से क्षमा माँगने के लिए वह उसके कमरे में गया। उसने देखा, वह पलँग पर पड़ी, तकिये में मुंह छिपाये सिसक सिसक कर रो रही है।

"मुझे माफ कर दीजिये।" कुर्सी पर बैठकर दुखी स्वर में ललित बोला।

शैलजा उठकर बैठ गयी। आंचल से आँसू पोंछकर सिसकती हुई बोली—"आप भी पुरुष हैं, इसलिए नारी के मन की व्यथा नहीं समझ सकते। मेरे साथ जो कुछ हुआ है उसने मेरे मन में पुरुष जाति के प्रति अविश्वास, भय और घृणा भर दी है।"

"सारी पुरुष जाति के प्रति?" ललित के स्वर में शरारत थी।

"डैडी और आपको छोड़कर।"

ललित खिखिलाकर हँस पड़ा। शैलजा की आँसू भरी आँखों को भी हँसना पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"और कमल ?" ललित ने गूढ़ दृष्टि से शैलजा की ओर देखकर पूछा।

"कवि का हृदय पुरुष का नहीं, नारी का होता है।" शैलजा का उत्तर था।

उसी समय आ गयी शकुन। उसके हाथ में एक साप्ताहिक पत्र की प्रति थी। आते ही वह आवेश से बोली—"प्रोफेसर इन्द्र तो कमल के जानी दुश्मन बन गये हैं।"

"क्या हुआ ?" ललित और शैलजा के मुख से एक साथ निकल गया।

"उसके संग्रह की आलोचना की है। सिवाय गालियों के और कुछ है ही नहीं। लो, पढ़ लो।" कहकर उसने पत्र की प्रति ललित की ओर बढ़ा दी।

ललित जोर-जोर से पढ़ने लगा। आलोचना काव्य की कम और व्यक्ति की अधिक थी। शैलजा और ललित को भी बुरा लगा।

"जीजी, हमें घर चलना चाहिए।" शैलजा ने गंभीर होकर कहा।

"हम आज रात की गाड़ी से चल देंगे। बिचारे कमल की क्या दशा हुई होगी आलोचना पढ़कर ?" शकुन बोली।

"कमल इन छोटी-छोटी बातों से घबराने वाला नहीं है। मैं जानता हूँ, उसने हँसकर टाल दिया होगा।" ललित ने विश्वासपूर्वक कहा।

"मुझे प्रोफेसर इन्द्र से घृणा हो गयी है।" शैलजा ने मुंह बिगाड़कर कहा।

"होनी ही चाहिए। आखिर वे भी हैं तो पुरुष ही।" ललित ने शरारत भरे स्वर में कहा और फिर सामान बाँधने के लिए वेटर को बुलाने के उद्देश्य से उसने कमरे में लगी हुई बिजली की घंटी का बटन दबा दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बाइस

जिस जंगली पशु की दाढ़ में मनुष्य के रक्त की एक बूंद भी लग जाती है वह धीरे-धीरे नरभक्षी बन जाता है। फिर वह मनुष्य का शिकार केवल भूख मिटाने के लिए ही नहीं करता वरन् शौक के लिए भी करने लगता है। उसे मनुष्य को मारने में अतीव आनन्द का अनुभव होने लगता है और स्थिति यहाँ तक पहुँच जाती है कि उसे मनुष्य दिखाई भर दिया कि उसने झपटकर उस पर आक्रमण कर दिया।

कामेश्वर की दशा भी एक नरभक्षी जंगली जानवर की तरह ही थी। नारी के माँस का स्वाद उसकी जीभ पर चढ़ गया था। जब वह बाबू श्यामसुन्दर के साथ रहता था तब खर्चे की छूट थी और इसलिए वह छल और धन के बल से अपनी भूख मिटाने की चेष्टा करता रहता था। पर जब से वह गोमती के साथ अलग रहने लगा तब से स्थिति बदल गयी। बाबू श्यामसुन्दर गोमती को दो सौ रुपये मासिक देते थे। कामेश्वर को जेब खर्च के लिए केवल पन्द्रह रुपये मिल पाते थे। पन्द्रह रुपयों में वह न तो बोतल में बन्द आग से अपनी प्यास बुझा सकता था और न इतने साधन ही जुटा सकता था कि नारी के माँस से अपनी भूख मिटा सके। जो लड़कियाँ उससे प्यार का दावा करती थीं, वे आँखें फेरने लगीं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जिन नर्सों को उसने पिक्चर दिखाये थे, अमूल्य उपहार दिये थे और जिनका वह 'डार्लिंग' था वे ही उससे कतराने लगीं। कामेश्वर के हृदय पर इन बातों का बहुत दुखद प्रभाव पड़ा। वह अर्ध विक्षिप्त सा हो गया।

एक दिन वह घर में अकेला ही था। गोमती फूल बाग में होनेवाले कीर्तन में सम्मिलित होने गयी थी। लेटा-लेटा कामेश्वर अपने अतीत और वर्तमान के विषय में सोच रहा था। उसी समय किसी ने बाहर से द्वार खटखटाया। कामेश्वर ने उठकर द्वार खोल दिया। महरी एक साँवली सी युवती के साथ अन्दर आ गयी।

"आज वहुत जल्दी आ गयीं।" कामेश्वर ने महरी से कहा।

"हाँ बाबू, आज एक ज्योनार माँ जाये का है। याही से जल्दी है। हम दूसर घर माँ काम करै जाइत है। हमार बिटिया इहाँ कर दिहै।" कहकर महरी बाहर चली गयी।

महरी की बेटी नल के नीचे बैठकर बर्तन माँजने लगी।

कामेश्वर कमरे में आ गया। उसका दिल बेचैन हो रहा था। उसकी प्यास जाग गयी थी, भूख अँगड़ाई ले रही थी। महरी की लड़की थी तो साँवली, पर जवान थी और शरीर की गठन भी अच्छी थी। कामेश्वर का शरीर काँपने लगा, उसकी आँखों से वासना की जलती चिनगारियाँ निकलने लगीं।

"अरे, दरवाजा बन्द कर दे। तू बर्तन माँजती रहेगी और कोई घुसकर सामान ले जायेगा।" कामेश्वर ने अन्दर से ही ऊँचे स्वरमें कहा।

कामेश्वर ने द्वार वन्द होने और कुंडी लगने की आवाज सुनी। उसके हृदय की गति वहुत तेज हो गयी।

"एक गिलास पानी दे जा।" कामेश्वर ने भर्राये स्वर में कहा और फिर वह पलँग पर बैठ गया।

एक क्षण बाद ही लड़की जल लेकर आ गयी। दृष्टि नीची करके उसने गिलास मेज पर रख दिया और फिर जाने लगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"तुझे यह भी नहीं मालूम कि पानी हाथ में देना चाहिए ।" कामेश्वर बोला ।

वह विचारी लौट आयी और उसने गिलास उठाकर कमेश्वर की ओर बढ़ा दिया ।

कामेश्वर ने गिलास न लेकर उसका हाथ पकड़ लिया । गिलास छूटकर फर्श पर गिर पड़ा और पानी से फर्श भीग गया ।

भूखे मकड़े के जाल में फँसकर यदि मक्खी निकल जाये तो संसार का आठवाँ आश्चर्य होगा ।

भूखे पुरुष से दुर्बलनारी भी अपनी रक्षा न कर सकी और जब पुरुष ने नारी के हाथ में जबरदती दो रुपये का लाल नोट ठूँस दिया तब वह समझा कि नारी अपने अस्पमान की बात भूल जायेगी, अपने लुटने की व्यथा अपने तक ही सीमित रक्खेगी ।

पर ऐसा हुआ नहीं । कामेश्वर शायद यह नहीं जानता था कि छोटे लोगों की इज्जत पर डाका डालने का युग अब नहीं रहा है । लड़की ने लपने लुटने की करुण कहानी सिसक-सिसक कर अपनी माँ से कही । माँ की आँखों से अंगार निकलने लगे । हम गरीब हैं इससे क्या ? हमारी भी इज्जत है, आबरू है ! और फिर वह अपनी अभागिन बेटी को लेकर पुलिस चौकी पहुँची । रिपोर्ट दर्ज कर ली गयी ।

लड़की की डाक्टरी जाँच हुई और जब जाँच से यह सिद्ध हो गया कि उसके साथ बलात्कार हुआ है तब पुलिस कामेश्वर को बन्दी बनाने के लिये चल दी ।

जिस समय पुलिस कामेश्वर को बन्दी करके लिये जा रही थी उसी समय गोमती फूलबाग से वापस आ गयी । कामेश्वर को पुलिस की हिरासत में देखकर चीखती हुई बोली—"कहाँ लिये जा रहे हो मेरे बेटे को ? क्या किया है उसने ?"

"महरी की बेटी के साथ मुंह काला किया है ।" एक सिपाही ने कड़े स्वर में कहा ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गोमती ने साश्रु नयनों से कामेश्वर की ओर देखा। उसने दृष्टि झुका ली। माँ से दृष्टि मिलाने का साहस उस समय बेटे में नहीं था।

पुलिस कामेश्वर को लेकर चली गयी।

गोमती ने घर का ताला बन्द किया और फिर रिक्शा करके बाबू श्यामसुन्दर के बँगले की ओर चल दी।

बाबू श्यामसुन्दर लेटे हुये थे। सरला उन्हीं के पास बैठी थी। वह उन्हें प्रोफेसर इन्द्र की आलोचना पढ़कर सुना रही थी। गोमती को देखकर बाबू श्यामसुन्दर उठकर बैठ गये। गोमती की घबराहट सरला से भी छिपी न रही क्योंकि वह बुरी तरह हाँफ रही थी और आँखों में आँसू की बूँदें थीं।

"क्या बात है ?" बाबू श्यामसुन्दर ने घबरा कर पूछा।

"भैया, कामेश्वर को पुलिस ले गयी है। उसे छुड़ा लो, भैया, उसे छुड़ा लो।" गोमती रोती हुई बोली।

"पुलिस ले गयी है ?" बाबू श्यामसुन्दर की त्योरी चढ़ गयी। "क्यों ?"

"क्या कहूँ, भैया! मैं तो इस कपूत से तंग आ गयी हूँ। अगर होते ही मर गया होता तो अच्छा था।" कहकर गोमती फिर सिसकने लगी।

"कुछ बताइये तो! क्या बात हुई ?" सरला ने व्यग्रता से पूछा।

"मैं तो फूल बाग गयी थी। उसने महरी की लड़की....।" और गोमती अपना वाक्य अधूरा छोड़कर सुबकती रही।

बाबू श्यामसुन्दर चिन्तित हो उठे। सरला गंभीर हो गयी।

"जैसा किया है वैसा भोगे।" बाबू श्यामसुन्दर के स्वर में घृणा थी। "वह आदमी नहीं, जानवर है। मैं कुछ नहीं कर सकता।"

गोमती दहाड़ मारकर रोने लगी।

सरला का नारी-हृदय पिघल गया। वह धीमे स्वर में बोली—"कामेश्वर अच्छा है या बुरा, पर है तो अपना ही। आप अभी जाकर उसे छुड़ा लाइये।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"नहीं मैं कुछ नहीं कर सकता। पापी को पाप की सजा मिलनी ही चाहिए।" बाबू श्यामसुन्दर दृढ़ स्वर में बोले।

"मगर इसमें बदनामी आपकी भी होगी।" सरला ने समझाते हुये कहा। "समाचार-पत्र वाले साथ में आपका नाम भी सानेंगे।"

बाबू श्यामसुन्दर को सरला की बात ठीक जँची। अखबार को तो मसाला चाहिए। वे उन पर छींटाकशी करने में कभी नहीं चूकेंगे। बाबू श्यामसुन्दर ने सरला की ओर देखा। उनका विरोध ढीला पड़ गया था।

"देर न कीजिये। अभी कामेश्वर पुलिस चौकी में ही होगा।" कहकर सरला ने बाबू श्यामसुन्दर की ओर आग्रह भरी दृष्टि डाली।

बाबू श्यामसुन्दर ने वस्त्र बदले। नोटों की एक मोटी गड्डी जेब में डालकर वे कार पर बैठकर रवाना हो गये।

उनके जाने के बाद गोमती कृतज्ञ स्वर में बोली—'भाभी! मैं तुम्हारा उपकार सदा याद रक्खूँगी।"

सरला ने ऊँचे स्वर में महराजिन से चाय दे जाने के लिए कहा।

"मुझसे चाय-वाय नहीं पी जायेगी, भाभी।"

"आप घबरायें नहीं। सब ठीक हो जायेगा।" सरला ने सान्त्वना देते हुये कहा।

"मेरा तो भाग्य ही खोटा है। आज वे होते तो......।" गोमती की आँखों में स्वर्गीय पति की स्मृति आँसू बनकर छा गयी। "एक लड़का है वह भी कपूत निकला।"

गोमती रोने लगी और सरला उसे समझाती रही।

× × ×

बाबू श्यामसुन्दर की कार जब पुलिस चौकी के सामने रुकी तब एक सिपाही ने आगे बढ़कर द्वार खोला। बाबू श्यामसुन्दर उतर पड़े।

"हुजूर, कैसे तकलीफ की?" सिपाही ने आदर से पूछा।

"ऐसे ही इन्सपेक्टर साहब से मिलने चला आया।" कहकर वे आगे बढ़ गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पुलिस इन्सपेक्टर ने उन्हें आदर से कुर्सी दी और कष्ट करने का कारण पूछा।

"क्या बताऊँ, भाई।" बाबू श्यामसुन्दर निःश्वास छोड़कर बोले। "कामेश्वर के बारे में बात करने आया हूँ। वह मेरा भान्जा है।"

"अच्छा! मुझे मालूम नहीं था वरना रिपोर्ट ही दर्ज न करता। मगर वह तो दूसरे घर में रहता है।" इन्सपेक्टर ने गूढ़ दृष्टि बाबू श्यामसुन्दर की ओर डालकर कहा।

"कुछ दिन पहले हमारे साथ ही रहता था। खैर, मैं चहाता हूँ वह वे दाग छूट जाये।" कहकर उन्हों ने नोटों की गड्डी मेज पर रख दी।

इन्सपेक्टर ने ललचायी आँखों से गड्डी की ओर देखा और फिर हाथ मलकर बोला—"मैं तो आप लोगों का सेवक हूँ। आप कामेश्वर को ले जाइये। मै डाक्टर को भी साथ लूँगा और यहाँ की रिपोर्ट भी नष्ट कर दूँगा।"

"बहुत बहुत धन्यवाद! मगर केस यहीं दब जाना चाहिए।"

"आप विश्वास रक्खें।" कहकर इन्सपेक्टर ने नोटों की गड्डी जेब में रख ली। और फिर ऊँचे स्वर में कहा—"कामेश्वर बाबू को ले आओ।"

"अगर महरी ने चिल्ल पों मचायी तो......।"

"आप किसी बात की फिक्र न करें। उस साली को मैं ठीक कर दूँगा।" इन्सपेक्टर ने निश्चय पूर्वक कहा।

कुछ देर बाद जब कार पुलिस चौकी से रवाना हुई तो बाबू श्यामसुन्दर के साथ कामेश्वर भी बैठा था। वह बहुत लज्जित मालूम होता था। उसकी दृष्टि झुकी हुई थी और आँखों में आँसू की बूँदें थीं।

"मैं तो चाहता था कि तुम्हें अपने कर्मों का फल मिले, पर सरला के जोर देने पर आना पड़ा।" बाबू श्यामसुन्दर ने बहुत धीमे स्वर में कहा।

कामेश्वर ने न तो दृष्टि ही उठायी और न कुछ बोला ही।

बाबू श्यामसुन्दर ने कार पोर्टिको में रोक दी। वे नीचे उतर कर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कामेश्वर से बोले—"अन्दर गोमती तुम्हारी राह देख रही है। आओ मेरे साथ।"

कामेश्वर उतर कर उनके साथ चल दिया। कमरे में पहुँचते ही उसकी दृष्टि सरला पर पड़ी। दौड़कर उसने सरला के पैर पकड़ लिये और आँखों से आँसू की धार बहाता हुआ बोला—"मामीजी, आप देवी हैं। मैं पापी हूँ, जानवर हूँ। मुझे क्षमा नहीं, दंड दीजिये, कठोर से कठोर दंड दीजिये।"

उसका हाथ पकड़ कर सरला ने उसे अपने पास बिठाया। वह ममता भरे स्वर में बोली—"तुम्हें अपने किये पर प्रायश्चित हो रहा है, यही क्या कम है? बीती बातों को भूल जाओ, भाई। अब आदमी बनने की कोशिश करो।"

"मैंने आप पर झूठा लाँछन लगाया। मैं आपको मुंह दिखाने लायक नहीं हूँ।" कहकर कामेश्वर दोनों हाथों से मुंह छिपाकर रोने लगा।

बाबू श्यामसुन्दर दूसरे कमरे में चले गये।

"चलो बेटा, घर चलो।" गोमती ने उठकर भीगे स्वर में कहा।

कामेश्वर उठकर खड़ा हो गया। उसने झुक कर सरला के पैर छुये और फिर दुखी स्वर में बोला—"शैलजा के बारे में आपसे जो कुछ मैंने कहा था वह भी झूठ था, मामी जी। मैं आप लोगों की क्षमा का नहीं, घृणा का पात्र हूँ।"

कामेश्वर अपनी बात पूरी करके तेजी से बाहर निकल गया। गोमती उसके पीछे चल दी।

सरला उठकर बाबू श्यामसुन्दर के पास गयी। उसे देखकर वे बोले—"कामेश्वर गया? मैं तो डरता था कि कहीं तुम उसे फिर यहीं न बुला लो।"

"मैं आपसे यही कहने आयी हूँ। वह अपने किये पर पछता रहा है। अब उन लोगों को यहीं बुला लीजिये।" सरला मीठे और अनुरोध भरे स्वर में बोली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"साँप को दूध पिलाना ठीक नहीं। वह अपना स्वभाव नहीं छोड़ सकता।" बाबू श्यामसुन्दर ने विरोध किया।

सरला उदास हो गयी।

दूसरे दिन सुबह गोमती फिर आयी। वह घबरायी हुई थी। उसने बाबू श्यामसुन्दर को बताया कि कामेश्वर उसके आभूषण और रुपये लेकर कहीं चला गया है।

"उसका यहाँ से चला जाना ही ठीक था। कहीं जाकर वह नया जीवन शुरू करेगा।" बाबू श्यामसुन्दर सन्तोष की साँस लेकर बोले।

"हाय, मैं तो लुट गयी, भैया!" गोमती बिलख कर बोली।

"अब तुम्हें अलग रहने की जरूरत नहीं है, गोमती। नौकरों को ले जाकर अपना सामान यहीं उठवा लाओ।" बाबू श्यामसुन्दर ने कहा।

"भैया, अब मैं यहाँ रहकर क्या करूँगी? मुझे काशी भेज दो। बाबा विश्वनाथ के चरणों में पड़ी रहूँगी।" गोमती ने आँखों के आँसू पोंछते हुये कहा।

"जैसी तुम्हारी इच्छा। मैं काशी में रहने का प्रवन्ध कर दूँगा।" कहकर बाबू श्यामसुन्दर बाहर चले गये।

सरला बाबू श्यामसुन्दर और गोमती की बातें मौन रहकर सुन रही थी। जब बाबू श्यामसुन्दर चले गये तब वह गोमती का हाथ पकड़ कर बोली—"आप मुझे ऐसे समय में छोड़कर जा रही हैं जब मुझे आपकी सबसे ज्यादा जरूरत है।"

गोमती पहले तो सरला की बात समझ न सकी। उसने गूढ़ दृष्टि सरला के मुख पर डाली और फिर उसके पेट की ओर देखकर बोली—"क्या कुछ...।"

सरला ने लजाकर सिर झुका लिया।

"तब तो मैं अभी नहीं जाऊँगी।" गोमती प्रसन्न होकर बोली। "मैं जाती हूँ अपना सामान लाने। लेकिन भाभी, एक शर्त है!"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गोमती ने उठकर मुस्कराते हुये सरला की ओर देखा।

"क्या?" धीमे स्वर में सरला ने पूछा।

"मुझे भतीजी नहीं, भतीजा चाहिए।" कहकर गोमती बाहर चली गयी।

सरला के कपोलों पर किसी अदृश्य तूलिका ने गुलाबी रंग पोत दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तेइस

बम्बई से प्रस्थान करने से पहले शकुन ने तार द्वारा रायबहादुर को अपने पहुंचने की सूचना दे दी थी। जब वे लोग कानपुर पहुंचे तब स्टेशन के बाहर कार उनकी प्रतीक्षा कर रही थी।

रास्ते में शकुन ने कहा—"क्यों न पहले कमल के घर ही चला जाये !"

ललित को शकुन का प्रस्ताव पसन्द आया। वह भी कमल से मिलने के लिए आकुल हो रहा था। उसने ड्रायवर को आदेश दिया कि कार राममोहन के हाते की ओर ले चले ! कुछ देर बाद ही कार राममोहन के हाते के फाटक के सामने पहुंच कर रुक गयी।

शकुन और ललित कार से उतर पड़े। शैलजा अन्दर ही बैठी रही।

"तुम नहीं चलोगी, शैल ?" शकुन ने पूछा।

"मैं यहीं बैठी हूं। तुम हो आओ।" शैलजा बोली।

"आओ भी।" ललित ने आग्रह किया।

शैलजा कार से उतर पड़ी। तीनों फाटक के अन्दर घुसे।

कमल के मकान के सामने पहुचर ललित ने आवाज दी। अन्दर से एक अधेड़ व्यक्ति बाहर आया।

"कमल जी हैं क्या ?" ललित ने पूछा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"कौन कमल जी ?" अधेड़ व्यक्ति ने प्रश्न किया।

"आपके यहाँ रहते थे न ! कवि हैं।" ललित ने आगे बढ़कर कहा।

"हम लोग तो इस मकान में इसी हफ्ते आये हैं।" कहकर वह व्यक्ति अन्दर जाने लगा।

"सुनिये तो। पहले वाले किरायेदार कहाँ गये ?" शकुन ने अधीरता से पूछा।

"उनका तबादला हो गया। वे बरेली चले गये हैं।" कहकर उस व्यक्ति ने द्वार अन्दर से बन्द कर लिया।

निराश होकर तीनों कार पर आकर बैठ गये। कार न्यू सिविल लायन्स की ओर चल दी।

"कमल अपने मित्र के साथ बरेली तो जा नहीं सकता।" मार्ग में ललित बोला।

"कुछ समझ में नहीं आता। सामान घर छोड़कर सरला के पास चलेंगे। शायद उन लोगों को पता हो।" शकुन बोली।

शैलजा ने वार्ता में कोई भाग नहीं लिया।

शकुन और शैलजा को देखकर रायबहादुर प्रसन्न हो उठे। उनके बिना उन्हें घर सूना सा लगता था। आनन्द विभोर होकर बोले—"आ गयीं तुम लोग ! मेरा तो मन ही नहीं लगता था।"

नौकरों ने कार से सामान उतारा।

"कामेश्वर को तो बाबू श्यामसुन्दर ने अलग कर दिया है।" राय बहादुर ने ललित की ओर मुड़कर कहा।

"अच्छा ! क्या बात हुई ?" ललित ने आश्चर्य से पूछा।

"यह तो मालूम नहीं।" कहकर वे शैलजा की ओर मुड़कर बोले—"अब तबियत तो ठीक रहती है, बेटी ?"

"हाँ, बाबू जी।" शैलजा धीमे स्वर में बोली।

"वाह ! डैडी से बाबू जी बन गया।" ठहाका मारकर रायबहादुर बोले।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"बाबू जी, हमें अभी बाबू श्यामसुन्दर के यहाँ जाना है।" शकुन ने कार की ओर बढ़कर कहा।

"सफर की थकान होगी। आराम करो अब। कल चली जाना।" रायबहादुर ने समझाते हुये कहा।

"बहुत जरूरी काम है, बाबू जी।" कहकर शकुन ड्रायवर के स्थान पर बैठ गयी। "आओ, ललित! तुम भी चलोगी, शैल?"

ललित पिछली सीट पर बैठ गया। शैलजा शकुन के पास बैठ गयी। कार तेजी से सरला के बंगले की ओर चल दी।

सरला उन लोगों को देखकर प्रसन्न हो उठी। बाबू श्यामसुन्दर भी मुस्करा कर उनका स्वागत करने के लिए आगे बढ़ आये।

"बम्बई से कब आये भैया?" सरला ने पूछा।

"अभी-अभी आ रहे हैं। बम्बई में हमने प्रोफेसर इन्द्र की आलोचना पढ़ी थी। सोचा, पहले कमल से ही मिलते चलें। मगर वहाँ जाकर मालूम हुआ कि उसके मित्र का तबादला बरेली हो गया है। उस मकान में नये किरायेदार आ गये हैं। कमल का कहीं पता नहीं है।" ललित ने चन्तित स्वर में कहा।

ललित की सूचना ने सरला और बाबू श्यामसुन्दर को चिन्ता में डाल दिया। सरला व्यग्रता से बोली—"हमें तो कोई सूचना ही नहीं मिली।"

"क्या कमल यहाँ नहीं आया।" ललित ने आकुल स्वर में पूछा।

"यहाँ तो नहीं आये। न जाने कहाँ होंगे, क्या खाते-पीते होंगे, कहाँ सोते होंगे? कुछ समझ में नहीं आता!" सरला व्यथित स्वर में बोली। वह सोचने लगी कि कमल संकोच के कारण यहाँ नहीं आया। इस भयंकर शीत में न जाने कहाँ रहता होगा। अगर कहीं उसे कुछ हो गया...। और आगे वह न सोच सकी। उसका हृदय भर आया।

"अगर आपको कष्ट न हो तो चलिए और कवियों से पूछें। शायद कुछ पता लग जाये।" ललित ने बाबू श्यामसुन्दर से कहा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बाबू श्यामसुन्दर सहर्ष तैयार हो गये। वे दोनों कमल की खोज में चल दिये। शैलजा और शकुन सरला के पास रुक गयीं।

"बम्बई की यात्रा कैसी रही?" सरला ने शकुन से पूछा।

"ठीक ही रही।" शकुन ने उदास स्वर में कहा।

"कहाँ-कहाँ घूमीं कुछ मुझे भी बताइये।"

शकुन उसे बम्बई के दर्शनीय स्थानों के विषय में बताने लगी।

"आप चुपचाप बैठी हैं।" बीच में ही सरला ने शैलजा से कहा। "कुछ आप भी बोलिये।"

"मैं क्या बोलूं? यहाँ तो टू इज अ कम्पनी थ्रिरी इज अ क्राउड। मुझे कमल जी का संग्रह दे दीजिये, और फिर आप लोग मजे से बातें कीजिये।" हंसकर शैलजा बोली।

सरला ने उसे संग्रह दे दिया। वह पढ़ने में लीन हो गयी। शकुन और सरला फिर बातों में खो गयीं।

शकुन ने न तो कामेश्वर के बारे में कुछ पूछा और न सरला ने ही उसके बारे में कोई बात चलायी। वे बम्बई के बारे में बातें करती रहीं; प्रोफेसर इन्द्र की कड़ी आलोचना की बुराई करती रहीं।

प्रोफेसर इन्द्र का नाम शैलजा के कान में जैसे ही पड़ा, वह मुड़कर बोली—"मैं कल ही प्रोफेसर इन्द्र की आलोचना का उत्तर लिखूँगी। मुझे इस संग्रह की कविताएं बहुत अच्छी लग रही हैं।"

"गीत लिखना छोड़कर आलोचनाएं लिखना शुरू करोगी?" सरला ने हंसकर पूछा।

"क्या कवि आलोचक नहीं बन सकता?" कहकर वह फिर पढ़ने में लग गयी।

जब ललित और बाबू श्यामसुन्दर लौटकर आये तब उनके चेहरे देखकर ही शकुन और सरला समझ गयीं कि कमल का कोई पता नहीं लग सका है। फिर भी सरला ने ललित से पूछा—"कोई पता चला, भैया?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"नहीं।" ललित ने थके हुये स्वर में कहा। "तीन-चार दिन पहले अखिलेश जी से उसकी भेंट हुई थी.....।"

"कौन अखिलेश जी ?" शकुन ने उतावले स्वर में पूछा।

"जिन्होंने गोष्ठी में ब्रज भाषा के छन्द सुनाये थे। उन्हें कमल बाजार में मिला था। उन्होंने कमल को बताया कि उनकी पत्नी काफी दिनों से क्षयरोग से पीड़ित हैं। कमल ने उन्हें दो सौ रुपये दिये। अखिलेश जी ने मना किया पर उसने जबरदस्ती रुपये उनकी जेब में डाल दिये। उसके बाद वह कहाँ गया, कुछ मालूम नहीं।" ललित के स्वर में पीड़ा उभर आयी।

और उसके बाद वातारण में घोर उदासी छा गयी। सब चुपचाप बैठे रहे।

कुछ देर बाद शकुन ने जाने की आज्ञा माँगी। सरला ने भोजन करके जाने के लिए कहा, पर शकुन ने फिर कभी भोजन करने का वचन देकर विदा ली। शैलजा और शकुन चली गयीं। ललित को सरला ने भोजन के लिए रोक लिया।

शकुन और शैलजा जब घर पहुँची तब उन्होंने प्रोफेसर इन्द्र को रायबहादुर के साथ बातें करते हुये पाया। उन दोनों को देखकर वे प्रसन्न होकर बोले—"आओ, आओ! बम्बई घूम आयीं ? मेरी आलोचना पढ़ी ? कैसी धज्जियाँ उड़ायी हैं कमल की ?"

शकुन ने तो अपने को संयत रक्खा पर शैलजा उबल पड़ी। वह व्यंग्य से बोली—"आप उसे आलोचना कहते हैं ? व्यक्तिगत आक्षेप और गालियों के अलावा और क्या है उसमें ? मैं आपकी उस आलो चना का उत्तर दूंगी और आप की ही भाषा और शैली का प्रयोग करूँगी जिससे आपको भी पता लग जाये कि उसका स्वाद पढ़ने वाले को कैसा लगता है।" और फिर वह तेजी से अपने कमरे की ओर चल दी।

"बहुत क्रुद्ध मालूम होती है शैलजा।" प्रोफेसर इन्द्र बेशर्मी से बोले।

"कई दिनों से कमल लापता है।" शकुन ने धीमे स्वर में कहा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"तो यह बात है।" प्रोफ़ेसर इन्द्र भयंकर अट्टहास करके बोले। मेरी आलोचना पढ़कर मुंह दिखाने की हिम्मत नहीं रही। भाग गया। कानपुर से। अभी तो शुरुआत है। हर हफ्ते एक लेख लिखूंगा। उसके विरुद्ध।" औंर वे फिर अट्टहास कर उठे।

शैलजा को लगा कि उसके कानों के पर्दे फट जायेगें। वह तेजी से अपने कमरे की ओर दौड़ी।

"राक्षस....।" वह कमरे में पहुँचकर बड़ बड़ाई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चौबीस

कमल का अंग-अंग टूट रहा था। वह बहुत थका हुआ था। तीन दिन से पेट में अन्न का एक दाना भी नहीं गया था। आँतें सूखी जा रही थीं। पैर काँप रहे थे और आँखों के सामने अँधेरा छा रहा था। वह मन्द गति से नल के पास गया। पानी पीने के बाद वह तीसरे दर्जे के मुसाफिर खाने की एक खाली बेंच पर बैठ गया।

मुसाफिरखाने में काफी चहल-पहल थी। पर उसे लग रहा था कि वह अकेला है, एकदम अकेला है। संसार में उसका कोई नहीं—कोई नहीं। आँखें बन्द करके वह बेंच पर लेट गया।

बाबू श्यामसुन्दर ने जो चार सौ रुपये उसे दिये थे वे उसने अपने मित्रों को दे दिये थे। जब मित्र कानपुर छोड़कर बरेली जाने लगा तब उसने उसके हाथ पर दो सौ रुपये रख दिये थे। कुछ दिन पहले एक पत्रिका से दस रुपये आये थे जिनमें से सात रुपये तो खर्च हो गये थे पर शेष तीन उसके पास थे। उसने सोचा था कि दो सौ तीन रुपयों में तीन-चार महीने कट जायेंगे।

जब उसका मित्र चला गया तब कमल एकदम निराधार रह गया था। कहीं सोने तक की सुविधा न थी। और उस समय उसे ललित का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ध्यान आया था। पर जब वह उसके यहाँ गया तब घर में ताला बन्द था। परोसी से उसे यह भी ज्ञात हुआ था कि ललित बम्बई गया है। निराश होकर वह लौट आया था और उसे इसी मुसाफिर खाने की बेन्चपर अपना पुराना ओवरकोट ओढ़कर वह रात काटनी पड़ी थी।

और आज वह भूखा था—तीन दिन का भूखा। दो सौ रुपये उसने अखिलेश को दे दिये थे। वह उसे एक दिन सड़क पर मिल गया था। उसकी पत्नी क्षय रोग में घुल रही थी। उसने अनुभव किया था कि अखिलेश की आवश्यकता उसकी आवश्यकता से बड़ी है—बहुत बड़ी है। और इसी प्रकार उसने एक नंगे भिखारी को ओवरकोट दे दिया था। अब उसकी जेब भी खाली थी और रातें भी ठिठुर कर काटनी पड़ती थीं।

कमल उठकर बैठ गया। मुसाफिरखाने में बैठे और लेटे हुये यात्रियों पर उसने उदास दृष्टि डाली। उसे लगा कि उसी की तरह सब भूखे हैं—नंगे हैं। वह फिर बेंच पर लेट गया।

कमल के वस्त्र बहुत गन्दे हो गये थे। टूटी चप्पल धूल से सनी थी। बढ़ी हुई दाढ़ी और रूखे बाल, कीचड़ भरी आँखें और फटे हुये ओंठ देखकर यही अनुमान होता था कि वह कोई भिखारी है।

कमल को लगा, कोई उसे लकड़ी से कोंच रहा है। उसने आँखें खोलकर देखा। एक भारी-भरकम शरीर वाला यात्री उसे अपनी छड़ी से जगाने की कोशिश कर रहा था।

"क्या है?" उठकर बैठते हुये कमल ने पूछा।

"उधर जमीन पर लेटो।" वह यात्री कड़े स्वर में बोला। "बेंच मुसाफिरों के लिए है, भिखमंगों के लिए नहीं।"

कमल का शरीर क्रोध से काँपने लगा। उसकी इच्छा हुई कि वह उस असभ्य यात्री की तोंद में एक मुक्का मार कर कहे कि भिखारी मैं नहीं, तू है! मगर फिर उसने अपने क्रोध को दाब लिया। बेंच के कोने में खिसक-कर दुर्बल और विनम्र स्वर में बोला—"बिगड़ते क्यों हो, भाई? काफी जगह है। आप भी बैठ जाइये।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उस यात्री ने कमल के गन्दे वस्त्रों की ओर दृष्टि डालकर फिर अपने स्वच्छ वस्त्रों की ओर देखा। कमल के पास बैठना उसने पसन्द न किया वह मुंह बनाकर व्यंग्य से बोला—"मैं तुम्हारे पास बैठूंगा। जल्दी नीचे उतरो नहीं तो अभी बुलाता हूँ पुलिस को।"

पुलिस बुलाने की धमकी सुनकर कमल भड़क उठा। उसने तेज स्वर में कहा—"जाओ बुला लाओ पुलिस को। मुझे चोर-उचक्का समझ रक्खा है क्या? मैं इसी बेंच पर बैठूंगा।"

कमल पैर फैलाकर बैठ गया। आस-पास बैठे हुये यात्री हँस पड़े।

कमल की बात और यात्रियों की हँसी से चिढ़कर वह हाँफता हुआ चाय के स्टॉल की ओर गया और वहाँ खड़े हुये सिपाही को बुला लाया।

"यह मुझे बेंच पर नहीं बैठने देता।" वह छड़ी से कमल की ओर संकेत करके सिपाही से बोला—"मुझे गाली देता है।"

"क्यों बे, बेंच से उतरता है या नहीं?" सिपाही कड़ककर बोला। "साले दुनिया भर के लुच्चे-लफंगे यहीं इकट्ठा होते हैं। जा, भाग यहाँ से नहीं तो खाल उधेड़ दूंगा।"

कमल का रक्त खौल उठा। खड़ा होकर बोला—"मुंह सँभाल कर बात करो।"

"अच्छा बच्चू, होश ठिकाने नहीं हैं क्या?" सिपाही आगे बढ़कर बोला। "कई दिनों से तुम्हें यहाँ देख रहा हूँ। कितनी जेबें साफ की हैं अब तक?"

"मैं जेब काटने वाला नहीं, शरीफ आदमी हूँ।" कमल तेज स्वर में बोला।

"वह तो जनाब की हुलिया ही बता रही है।" ठहाका मारकर हँसता हुआ सिपाही बोला। आस-पास के यात्री भी हँस पड़े।

मोटा यात्री बेंच पर बैठ गया। वह सिपाही से बोला—"आओ जमादार जी! जरा पान-तमाखू खा लो। दिन भर खड़े-खड़े थक जाते होगे।"

सिपाही भी बेंच पर बैठ गया। कमल उसी प्रकार खड़ा रहा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"अबे जाता है या नहीं।" सिपाही कड़कर बोला। "आज से यहाँ आया तो खैर नहीं है। यह मुसाफिर खाना है। चोर-उचक्कों का अड्डा नहीं।"

अपमान की तिलमिलाहट कमल की आँखों में आँसू ले आयी। वह भूख भूल गया, शीत भूल गया। उसे याद रही अपमान की आग—दहकती हुई गर्म ज्वाला।

धीरे-धीरे वह मुसाफिरखाने के बाहर आ गया। मोटे यात्री और सिपाही का अट्टहास उसके कानों में गूँज रहा था। वह चलता रहा, चलता रहा। उसे मालूम न था कि वह कहाँ जा रहा है, किधर जा रहा है।

और जब एक पालतू कुत्ता भौंकता हुआ उसकी ओर झपटा तब उसे होश आया।

उसने देखा, वह सरला के बँगले के फाटक पर खड़ा है।

और फिर उसे लगा कि फाटक घूम रहा है, बँगला घूम रहा है, जमीन घूम रही है। हल्की सी झलक उसे पास आती हुई सरला की दिखाई दी और फिर अंधकार. . . . गहन अंधकार !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पच्चीस

कमल का कोई समाचार न मिलने से सरला बहुत चिन्तित थी। वह रात को न तो ठीक से भोजन ही कर सकी थी और न सो ही सकी थी। उसकी व्याकुलता प्रतिपल बढ़ती जा रही थी। वह बेचैनी से काश्मीरी शाल ओढ़े बरामदे में टहल रही थी। तरह-तरह के विचार उसके मस्तिष्क में उठ रहे थे।

सहसा जोर से कुत्ता भौंका। उसकी विचार-धारा भंग हो गयी। चौंककर उसने फाटक की ओर देखा। मलीन वस्त्र पहने क्लान्त कमल को देखकर वह तेजी से फाटक की ओर बढ़ी। उसे देखकर कुत्ता मौन हो गया। तभी उसने देखा कि कमल झूम रहा है। वह जोर से दौड़ी और इससे पहले कि कमल अचेत होकर भूमि पर गिरे, उसने उसे सँभाल लिया। कमल का शिथिल शरीर सरला का सहारा पाकर गिरने से बच गया।

सरला की तेज पुकार सुनकर नौकर दौड़े आये।

"इन्हें सँभालकर उठा लो।" वह नौकरों से बोली। "देखो, चोट न लगे। अरे जल्दी करो।"

नौकरों ने कमल को उठाकर सरला के पलँग पर लिटा दिया। सरला ने रजाई उढ़ा दी। फिर वह गोमती को कमल के पास छोड़कर डाक्टर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को फोन करने गयी। डाक्टर के बाद उसने बाबू श्यामसुन्दर और शकुन को भी सूचना दे दी।

सरला जब कमरे में पहुँची तब भी कमल मूर्छित पड़ा था। उसने गोमती से रुद्धकंठ में कहा—"इन्हें क्या हो गया है ? मेरा. . . . मेरा दिल बैठा जा रहा है।"

"घबराओ मत, भाभी ! कमजोरी के मारे अचेत हो गया है। अभी ठीक हो जायेगा। मैं अभी आती हूँ गरम दूध लेकर।" कहकर गोमती उठकर बाहर चली गयी।

सरला पलँग के पास कुर्सी डालकर बैठ गयी। लाख रोकने की चेष्टा करने पर भी उसकी आँखें भीग गयीं।

तभी कमल ने कराह कर धीरे-धीरे आँखें खोलीं। वह आश्चर्य से चारों ओर देखने लगा। फिर उसकी दृष्टि सरला के चेहरे पर जम गयी। सरला की रोती हुई आँखें हँस पड़ीं।

"मैं. . . मैं. . . . कहाँ. , . . हूँ ?" उठकर बैठने की चेष्टा करता हुआ कमल दुर्बल स्वर में बोला।

"अरे, उठिये मत !" सरला ने उठकर उसे लिटाते हुये कहा। "आप अपने ही घर में हैं।"

"पानी. . . . . !"

"पानी नहीं मिलेगा। यह लो गरम दूध।" कहती हुई गोमती आ गयी। उसने सहारा देकर कमल को बिठाया और दूध का गिलास उसके मुंह से लगा दिया।

दूध पीकर कमल फिर लेट गया। उसकी दुर्बलता कुछ कम हुई! शरीर में गर्मी का संचार हुआ। उसने धीमे स्वर में कहा—"मैं यहाँ कैसे आ गया ?"

गोमती गिलास लेकर चली गयी।

"आप फाटक पर खड़े थे। तभी आपको मूर्च्छा आ गयी। मैं आपको यहाँ ले आयी।" सरला ने उत्तर दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कमल मुस्कराया। धीरे-धीरे उसे सब कुछ याद आने लगा। मुसाफिर खाना, मोटा यात्री, सिपाही, और फिर भौंकता हुआ कुत्ता!

"मैं भिखारी नहीं हूँ; चोर नहीं हूँ; मैं शरीफ आदमी हूँ।" कमल मन्द स्वर में बड़बड़ाया।

सरला की समझ में उसकी बात न आयी। वह परेशानी से उसकी ओर देखने लगी।

"सेठ मुझे भिखमंगा समझता है; सिपाही चोर समझता है; कुत्ता लफंगा समझता है। मगर मैं शरीफ अदमी हूँ। हूँ न?" कहकर कमल ने सरला की ओर देखा। उसकी आँखों में आँसू थे।

सरला के हृदय में एक तूफान सा उठा। उसकी आँखों में आँसू आ गये।

उसी समय डाक्टर की कार पोर्टिको में आकर रुकी। एक क्षण बाद ही गोमती के साथ डाक्टर ने कमरे में प्रवेश किया।

"क्या होश आ गया?" कमल को आँखें खोले देखकर डाक्टर ने पूछा।

सरला ने सिर हिला दिया।

डाक्टर जब नाड़ी देखने लगा तब कमल विरोध के स्वर में बोला—"मैं ठीक हूँ, एकदम ठीक हूँ। मुझे कुछ नहीं हुआ है।"

"आप चुपचाप लेटे रहिये।" डाक्टर ने कहा और नाड़ी, पेट और सीने की जांच करके बोला—"कमजोरी काफी है। हजरत कई दिनों के भूखे मालूम होते हैं। ठंड का भी असर है। बहुत सावधानी की जरूरत है।"

उसके बाद उसने पेन्सिलिन का एक इंजेक्शन दिया। फिर गोमती को बाहर ले जाकर कहा—"इनको गर्म दूध और ब्रांडी दीजिये। सीने की सिकाई करती रहिये। सुबह फिर आऊँगा।"

डाक्टर चला गया। गोमती रसोई घर में चली गयी।

"यह क्या किया आपने?" सरला सिसकती हुई कमल से बोली। "आप यहाँ क्यों नहीं आये? भूखे रहकर ठंड खाने की क्या जरूरत थी?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कमल ने कोई उत्तर न दिया। उसकी आँखों की कोरों से दो आँसू निकलकर तकिये पर लुढ़क गये।

"आप मुझे गैर समझते हैं। क्या....क्या मैं आपकी कोई नहीं? क्या आप अपने मित्र की बहन को पराया समझते हैं?" और फिर सरला दुखी हो कर फूट-फूट कर रोने लगी।

"रोओ मत, सरला! मैं कहता हूँ रोओ मत!" कमल टूटे और दुखी स्वर में बोला। "मैं इस योग्य नहीं कि मेरे लिए कोई रोये। रोने के लिए तो मैं बना हूँ। रोना मेरे भाग्य में है—अपनी माँ के लिए, पिता के लिए और उन सबके लिए जो दुखी हैं; दीन हैं, दरिद्र हैं, अभागे हैं।" बोलते-बोलते उसकी आँखों से आँसुओं की अविरल धार बहने लगी।

सरला ने अपनी साडी के अंचल से उसके आँसू पोंछते हुये कहा—"आँसू व्यर्थ नहीं जायेंगे। हर आँसू क्रान्ति के बीज को सींचेगा।"

सरला का वाक्य समाप्त भी न हो पाया था कि कमरे में बाबू श्यामसुन्दर आ गये। उनके पीछे ही ललित, शकुन और शैलजा ने भी प्रवेश किया। गोमती भी रबर के थैले में गर्म पानी भरकर ले आयी। थैला कमल के सीने पर रखकर गोमती ने रजाई ठीक से उढ़ा दी। फिर वह चली गयी।

उन सबको देखकर कमल ने उठने की फिर चेष्टा की मगर सरला ने उठने नहीं दिया।

"कहाँ गायब हो गये थे?" ललित ने पास बैठकर धीमे स्वर में पूछा।

"तुम बम्बई से कब आये?" कमल का प्रश्न था।

"कल आया हूँ। मगर तुम्हें....!"

"तुम्हारे घर गया था। ताला बन्द था। फिर मुसाफिरखाने को घर बनाया। आज सिपाही ने चोर कहकर निकाल दिया।"

"और तब आपको यहाँ आने का होश आया।" हँसकर बाबू श्यामसुन्दर बोले। "अगर पहले ही आ गये होते तो यह दशा क्यों होती?"

"मैं यहाँ होश में नहीं, बेहोशी में आया हूँ। होश तो तब आया जब कुत्ता भौंका।" कमल रुक-रुक कर धीमे स्वर में बोला—"आदमी तो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आदमी, जानवर भी मुझसे घृणा करते हैं।"

"भौंकने वाले कुत्ते ही होते हैं, आदमी नहीं। प्रोफेसर इन्द्र का भौंकना आपने सुना ही होगा।" इस बार शैलजा बोली।

कमल मुस्कराया। एक क्षण बाद धीमे स्वर में बोला—"उनका मैंने लेख पढ़ा था! वे विद्वान हैं, पर उनका दृष्टिकोण गलत है। समय की गति को वे नहीं पहचानते।"

"मैंने उनके लेख का उत्तर लिखा है। कल 'विश्वमित्र' में छप जायेगा।" शैलजा ने कहा। "और मैंने अपने लेख में उन्हीं की भाषा और शैली का प्रयोग किया है।"

उसकी बात सुनकर सभी मुस्करा पड़े। शैलजा समझती थी कि कमल भी प्रसन्न होगा। पर वह व्यथित होकर बोला—"यह तो बुरी बात है। ऐसा नहीं होना चाहिए। अगर आप भी भौंकेंगी तो. . . .।"

और कमल की बात सुनकर शैलजा रो पड़ी। "कितने महान हैं आप? काश! प्रोफेसर इन्द्र यह जान सकते।" वह आर्द्र स्वर में बोली। "मैं अभी फोन किये देती हूँ। लेख नहीं छपेगा।"

कमल ने सन्तोष की साँस ली। शैलजा बाहर चली गयी।

"मुझे तो शायद पहचाना नहीं होगा?" शकुन शरारत से बोली।

"जिस दिन आपको न पहचानूँ उस दिन समझूंगा कि अपने आपको भूल गया।" कमल ने मुस्करा कर कहा।

'अब आराम करने दो।" कहती हुई गोमती आयी। उसके हाथ में दूध का गिलास था। दूध में दस बूँदें ब्रांडी की भी डाल दी थीं। कमल के पास जाकर उसे उठाती हुई स्नेह से बोली—"लो बेटा, दूध पी लो।"

"अभी तो पिया है।" कमल ने अनिच्छा प्रकट की।

"पी लो, बेटा!" कहकर उसने गिलास उसके मुंह से लगा दिया। कमल ने दूध पी लिया।

"अब सो जाओ।" कहकर गोमती ने रजाई ठीक की और फिर सब की ओर मुड़कर बोली—"बाहर आओ सब लोग।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सब बाहर चले गये।

कमल थका तो था ही। उसकी आँखें झपने लगीं। पाँच मिनट बाद ही उसे गहरी नींद आ गयी।

× × ×

धीरे-धीरे कमल का स्वास्थ्य सुधरने लगा।

प्रोफेसर इन्द्र कमल के विरुद्ध जहर उगलते रहे; उनकी लेखनी निन्दा की आग बरसाती रही। उनकी आलोचनाओं ने हिन्दी-संसार का ध्यान कमल के काव्य-संग्रह की ओर आकृष्ट कर दिया: आलोचक गण दो वर्गों में बँट गये। दकियानूसी आलोचकों ने उसके संग्रह को पागल के प्रलाप की संज्ञा दी; नयी मान्यताओं में आस्था रखने वाले आलोचकों ने उसे पिछले दस वर्षों में प्रकाशित होने वाले काव्य-संग्रह में सर्वश्रेष्ठ कहा।

कमल निन्दा से न तो दुखी हुआ और न प्रशंसा से फूला। वह एक तटस्थ पाठक की तरह सबकी आलोचनायें पढ़ता रहा।

एक दिन वह सरला से बोला—"मुझे कब तक बीमार बनाये रहोगी? अब मैं अच्छा हो गया हूँ। मुझे जाने दो।"

"कहाँ जायेंगे?" सरला ने मन्द स्वर में पूछा।

"दुनिया बहुत बड़ी है।"

"यह घर दुनिया के बाहर है क्या! आप अब कहीं नहीं जा सकते।' सरला ने दृढ़ता से कहा।

लेटे-लेटे मैं ऊब गया हूँ।"

"आप लान में टहल सकते हैं।"

"मैं जाना चाहता हूँ।" कमल का स्वर रूखा था।

"क्यों? क्या यहाँ कोई असुविधा है?" सरला ने दुखी स्वर में पूछा।

"मैं असुविधाओं का आदी हूँ। यहाँ हर सुविधा है। इसीलिए मुझे लगता है।" कमल अपनी दृष्टि दीवार की ओर करके बोला। फिर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रुककर धीमे स्वर में कहा—"सच बात तो यह है कि मैं बिना कुछ किये तुम्हारी करुणा का अनुचित लाभ उठाना नहीं चाहता। मुझे जाना ही चाहिए।"

"अगर आप यहाँ अपना अधिकार नहीं समझते तो...तो...आप जा सकते हैं। मैं नहीं रोकूँगी। मैं होती ही कौन हूँ रोकने वाली?" सरला अवरुद्ध कंठ से बोली। उसकी आँखों में आँसू आ गये। वह उठकर तेजा से बाहर चली गयी।

कमल सोच में पड़ गया। सरला के दिल को दुखाने की कठोरता उसमें न थी। फिर भी कब तक इस प्रकार उसके यहाँ टुकड़े तोड़ता रहे। अब वह स्वस्थ है; परिश्रम कर सकता है। नहीं, उसे जाना ही चाहिए, जाना ही चाहिए!

उठकर उसने वे वस्त्र उतार दिये जो सरला ने उसे दिये थे। अपने गन्दे और फटे वस्त्र पहन कर उसने चप्पल पहनी और बँगले से बाहर चला गया।

और जब चौकीदार ने सरला को सूचना दी कि कमल बाबू चले गये हैं तब वह चुपचाप अपने कमरे में जाकर लेट गयी। उसकी आँखों से आँसू बहते रहे।

आकाश बादलों से घिरा था। अचानक पानी बरसने लगा मानों बादल भी सरला के प्रति सहानुभूति दिखा रहे हों। हवा में भी तेजी आ गयी। सरला ठंड से थरथर काँपने लगी। उसने रजाई ओढ़ ली।

घंटे भर बाद ही कमल लौट आया। उसके वस्त्र भीगे थे और वह शीत के कारण पीपल के पत्ते की तरह काँप रहा था।

"मैंने जाने की कोशिश की, मगर मैं जा न सका। मैं लौट आया हूँ, सरला।" उसने कम्पित स्वर में कठिनाई से कहा।

सरला विद्युत वेग से उठकर बैठ गयी। कमल को भीगा देखकर वह घबरा गयी।

"आप जल्दी से वस्त्र बदल लीजिये। मैं गर्म दूध और ब्रांडी लाती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हूँ।" कहकर सरला तेजी से बाहर चली गयी।

गोमती के साथ जब वह लौटकर आयी तब कमल वस्त्र बदल कर पलँग पर रजाई ओढ़े लेटा था। फिर भी वह काँप रहा था।

सरला ने उसे उठाकर दूध पिलाया। खाली गिलास मेज पर रखकर उसने पूछा—"अब भी ठंड लग रही है ?"

कमल ने सिर हिलाया।

सरला ने रजाई के ऊपर दो कम्बल डाल दिये। कमल फिर भी काँपता रहा। घबरा कर सरला ने उसके मस्तक को छूकर देखा। माथा गर्म तवे की तरह जल रहा था।

"अरे, आपको तो बुखार है।" कहकर वह डाक्टर को फोन करने चली गयी।

गोमती कमल के पास उदास होकर बैठी रही।

डाक्टर आया और देख-भाल कर उसने सरला को एक ओर ले जाकर कहा—"डबल निमोनिया का अटैक है। आपने इन्हें भीगने क्यों दिया ?"

सरला क्या उत्तर देती। बिचारी सिसकने लगी।

"घबराने की बात नहीं है। मैं इंजेक्शन देता हूँ। पेन्सिलिन के इंजेक्शन बराबर लगेंगे।" कहकर डाक्टर इंजेक्शन देने की तैयारी करने लगा।

बाबू श्यामसुन्दर जब घर आये तब कमल की दशा देखकर घबरा गये। कमल का ज्वर बढ़ता जा रहा था। उन्होंने शकुन को फोन किया।

ज्वर की तेजी में कमल बकने लगा। रह रह कर वह चौंक पड़ता और चीखकर कहता—"मैं चोर नहीं हूँ। मैं शरीफ आदमी हूँ—शरीफ आदमी हूँ।"

शकुन भी शैलजा और ललित को लेकर आ गयी। कमल ने आँखें खोलकर सबको देखा पर पहचान किसी को न पाया।

"मुझे नहीं पहचानते ?" शकुन कमल के पास बैठकर मीठे स्वर में बोली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"तुम. . . . ? कौन हो तुम ? मुझे लेने आयी हो ? मगर मैं नहीं जाऊँगा। कभी नहीं जाऊँगा।" कमल बुदबुदाया।

शकुन कमरे के कोने में जाकर रोने लगी। सरला उसे समझाने गयी पर समझाते-समझाते स्वयं रोने लगी।

डाक्टर ने तीसरी सुई लगायी।

"तुम मुझे पकड़ने आये हो ? मगर मैं चोर नहीं हूँ। देखो, अब तो मेरे कपड़े गन्दे नहीं हैं। अब तो मुझे शरीफ आदमी समझते हो ?" कमल ने डाक्टर का हाथ पकड़ कर कहा।

डाक्टर ने सम्मति सूचक सिर हिला दिया।

कमल ने आँखें बन्द कर लीं।

सरला और शकुन उसके पास आ गयीं।

दीवार पर लगी घड़ी की सुइयाँ आगे खिसकती रहीं।

और जब शकुन और शैलजा नहीं लौटीं तो रायबहादुर भी बाबू श्यामसुन्दर के यहाँ पहुँच गये।

कमल ने आँखें खोलकर सबकी ओर देखा। उसकी दृष्टि सरला की ओर टिक गयी। वह थके स्वर में बोला—"मैं यहीं रहूँगा। यह मेरा घर है। कोई बुलाने आये तो मना कर देना।"

सरला उसके मस्तक पर हाथ फेरने लगी। न जाने क्यों कमल की आँखों में आँसू आ गये।

सहसा कमल चीखकर बोला—"देखो, मेरा सपना पूरा हो रहा है। वह देखो, दीवारें गिर रही हैं ! खाइयाँ पट रही हैं ! ! और मुंद रही हैं दरारें ! ! ! मैं जा रहा हूँ। मुझे रोको मत, मुझे कोई मत रोको।"

और कमल ने रजाई-कम्बल फेंककर उठने की कोशिश की। डाक्टर ने उसे फिर लिटा दिया।

डाक्टर भी परेशान था। वह फिर सुई लगाने की तैयारी करने लगा।

"मैं अब तक अपने को छलता रहा। मैंने घृणा से प्यार किया और प्यार से घृणा।" कहकर कमल रोने लगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसे रोता देखकर सभी की आँखों में आसू आ गये।

"तुम लोग क्यों रोते हो। रोना मेरा काम है। मगर अब मैं भी हँसूगा। मेरी माँ मुझे बुला रही है। अरे, उधर देखो। वह खड़ी है उस कोने में।" और इससे पहले की डाक्टर उसकी बाँह में इंजेक्शन लगा सके, कमल का शरीर शिथिल पड़ गया।
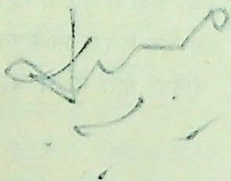
हवा का एक झोंका आया और जीवन-शिखा काँपकर बुझ गयी।

घर में कोहराम मच गया।

और दूसरे दिन जब कमल की अर्थी उठी तो प्रोफेसर इन्द्र ने सबसे पहले अपना कन्धा आगे बढ़ा दिया। शायद वे अपने पाप का प्रायश्चित इस प्रकार करना चाहते थे।

'रामनाम सत्य है' की ध्वनि पास से दूर होती गयी।

सरला, शकुन, शैलजा और गोमती की सिसकियाँ हवा में गूँजती रहीं, गूँज रही हैं और शायद तब तक गूँजती रहेंगी जब तक कमल का सपना पूरा नहीं होता; जब तक दीवार नहीं टूटतीं, खाइयाँ नहीं पटतीं और मुंदतीं नहीं दरारें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE